मसीह
हिन्दुस्तान में
लेखक
मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

मसीह
हिन्दुस्तान में

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्स्लाम

नाम पुस्तक - मसीह हिन्दुस्तान में
Name of Book : Maseeh Hindustan Mein

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

Written By : Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
The Promised Messiah and Mahdi[as]

अनुवादक - अन्सार अहमद एम.ए. बी.एड. आनर्स इन अरबिक
Translated By : Ansar Ahmad M.A. B.Ed. Hon's in Arabic

प्रथम प्रकाशन वर्ष - अप्रैल 2017
First Edition Hindi : April 2017

संख्या - 1000
Quantity : 1000

मुद्रक - फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान
Printed at : Fazle Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab) INDIA

प्रकाशक - नज़ारत नश्र व इशाअत, क़ादियान
Publisher : Nazarat Nashr-o-Ishaat,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab) INDIA

ٹائیٹل بار اول

حمد بیحد و قیاس اور لا انتہا و لا متناہی سپاس
خدا ئے رحیم و کریم ملک الجنۃ والناس
کہ گوہر بے بہا و نسخہ کیمیا گم گشتگان کا رہنما
یعنی رسالہ

مسیح ہندوستان میں

سفتۂ الماس قلم اعجاز رقم حضرت مسیح الہند مرزا غلام احمد صاحب قادیانی علیہ الصلوٰۃ والسلام
درباره نجات مسیح ناصری از صلیب اور اُنکا سفر جانب ہندوستان
بتوفیق یزدانی و فضل ربانی.

مطبع انوار احمدیہ مشین پریس قادیان ضلع گورداسپور میں
باہتمام شیخ یعقوب علی صاحب تراب ایڈیٹر و
مالک مطبع طبع ہوکر ۲۰ نومبر ۱۹۰۸ء کو
شائع ہوا

تعداد اشاعت ۷۰۰ قیمت ۲ر

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

رَبَّنَا افۡتَحۡ بَیۡنَنَا وَ بَیۡنَ قَوۡمِنَا بِالۡحَقِّ وَ اَنۡتَ خَیۡرُ الۡفٰتِحِیۡنَ

हे हमारे ख़ुदा हम में और हमारी क़ौम में सच्चा निर्णय कर और तू उत्तम निर्णय करने वाला है।

प्राक्कथन

इस पुस्तक को मैं इस उद्देश्य से लिखता हूं ताकि सही घटनाओं तथा नितान्त पूर्ण एवं प्रमाणित ऐतिहासिक साक्ष्यों तथा अन्य क़ौमों के प्राचीन लेखों से उन ग़लत और ख़तरनाक विचारों को दूर करूं जो मुसलमानों तथा ईसाइयों के अधिकांश समुदायों में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के प्रथम तथा अन्तिम जीवन के बारे में फैले हुए हैं, अर्थात् वे विचार जिनके भयानक परिणाम न केवल ख़ुदा तआला के एकेश्वरवाद के बटमार और लुटेरे हैं अपितु इस देश के मुसलमानों की नैतिक अवस्था पर भी उनका नितान्त बुरा तथा विषाक्त प्रभाव निरन्तर देखने में आ रहा है तथा ऐसी निराधार कहानियों तथा क़िस्सों पर विश्वास रखने से बुरे आचरण, बुरी सोच, सख़्त दिली, तथा निर्दयता के आध्यात्मिक रोग प्राय: इस्लामी समुदायों में फैलते जाते

हैं तथा उनके मानवीय सहानुभूति, दया, न्याय, विनय तथा सत्कार के पवित्र गुण दिन-प्रतिदिन इस तरह कम होते जाते हैं कि जैसे वे अब शीघ्र ही अलविदा कहने को तैयार हैं। इस सख़्त दिली और बुरे आचरण के कारण बहुत से मुसलमान ऐसे देखे जाते हैं कि उनमें तथा दरिंदों में कदाचित् कुछ थोड़ा सा ही अन्तर होगा और एक जैन मत का मनुष्य या बुद्ध धर्म का एक अनुयायी एक मच्छर या पिस्सू के मारने से भी बचता तथा डरता है किन्तु खेद है कि हम मुसलमानों में से अधिकतर ऐसे हैं कि वे एक निर्दोष की हत्या करने और एक निष्पाप मनुष्य के प्राण नष्ट करते समय भी उस सामर्थ्यवान ख़ुदा की पकड़ से नहीं डरते, जिसने पृथ्वी के समस्त जानवरों की अपेक्षा मनुष्य के प्राण को बहुत महत्त्वपूर्ण ठहराया है। इतनी कठोरता एवं निर्दयता तथा अनुदारता का क्या कारण है ? यही कारण है कि बचपन से ऐसी कहानियां, क़िस्से तथा अनुचित प्रकार से जिहाद के मामले उनके कानों में डाले जाते हैं तथा उनके हृदय में बिठाए जाते हैं जिन के कारण धीरे-धीरे उनकी नैतिक अवस्था मृत हो जाती है तथा उनके हृदय उन अप्रिय कार्यों की बुराई को महसूस नहीं कर सकते, अपितु जो व्यक्ति एक असावधान मनुष्य का वध करके उस के परिवार को विनाश में डालता है वह विचार करता है कि जैसे उसने बड़ा ही पुण्य का कार्य अपितु क़ौम में एक गर्व करने का अवसर प्राप्त किया है। चूंकि हमारे इस देश में इस प्रकार की बुराइयों को रोकने के लिए उपदेश नहीं होते और यदि होते भी हैं तो संयोग से। इसलिए सामान्य लोगों के विचार अधिकतर इन उपद्रवपूर्ण बातों की ओर झुके हुए हैं। अतः मैंने पहले भी कई बार अपनी क़ौम की

अवस्था पर दया करके उर्दू, फ़ारसी तथा अरबी भाषा में ऐसी पुस्तकें लिखी हैं जिन में यह स्पष्ट किया है कि मुसलमानों में जिहाद की का मामला तथा किसी ख़ून बहाने वाले इमाम की प्रतीक्षा का मामला तथा दूसरी क़ौमों से वैर रखने का मामला ये सब मूर्ख विद्वानों की गलतियां हैं अन्यथा इस्लाम में प्रतिरक्षात्मक युद्ध के अतिरिक्त अथवा उन युद्धों के अतिरिक्त जो अत्याचारी को दण्डित करने या स्वतंत्रता स्थापित करने की नीयत से हों अन्य किसी भी रूप से धर्म के लिए तलवार उठाने की अनुमति नहीं। प्रतिरक्षात्मक युद्ध से अभिप्राय वे युद्ध हैं जिन की आवश्यकता उस समय होती है जब कि विरोधियों के उपद्रव से प्राणों का भय हो। ये तीन प्रकार के शरई (शरीअत के अनुसार) जिहाद हैं। इन तीन प्रकार के युद्धों के अतिरिक्त अन्य कोई प्रकार जो धर्म के प्रसार के लिए हो इस्लाम में वैध नहीं। अतः मैंने इस विषय की पुस्तकों पर बहुत सा धन खर्च करके इस देश तथा अरब, शाम और ख़ुरासान इत्यादि देशों में वितरण की हैं परन्तु अब मुझे ख़ुदा तआला की कृपा से ऐसे मिथ्या और निराधार आस्थाओं को हृदयों में से निकालने के लिए वे शक्तिशाली तर्क तथा खुले-खुले प्रमाण, विश्वसनीय लक्षण, तथा ऐतिहासिक गवाहियां प्राप्त हुई हैं जिन की सच्चाई की किरणें मुझे शुभ सन्देश दे रही हैं कि शीघ्र ही उनके प्रकाशन के पश्चात् मुसलमानों के दिलों में इन आस्थाओं के विपरीत एक आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा होने वाला है तथा नितान्त विश्वास से आशा की जाती है कि उन सच्चाइयों को समझने के पश्चात् इस्लाम के भाग्यशाली पुत्रों के दिलों में से सहनशीलता, विनय तथा करुणा के मनोहर एवं मधुर झरने जारी होंगे तथा उनका

आध्यात्मिक परिवर्तन होकर देश पर एक नितान्त शुभ एवं मंगलमय प्रभाव पड़ेगा। ऐसा ही मुझे विश्वास है कि ईसाई धर्म के अन्वेषक तथा अन्य समस्त सत्य के भूखे और प्यासे भी मेरी इस पुस्तक से लाभ प्राप्त करेंगे तथा यह जो मैंने अभी वर्णन किया है कि इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य मुसलमानों तथा ईसाइयों की उस ग़लती का सुधार है जो उन की कुछ आस्थाओं में शामिल हो गई है। यह वर्णन किसी सीमा तक विस्तार एवं विवरण का मुहताज है जिस का नीचे उल्लेख करता हूं।

स्पष्ट हो कि अधिकतर मुसलमानों तथा ईसाइयों का यह विचार है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आकाश पर जीवित चले गए हैं और ये दोनों समुदाय एक लम्बे समय से यही विचार करते चले आए हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अब तक आकाश पर जीवित मौजूद हैं तथा किसी समय अन्तिम युग में पुनः पृथ्वी पर उतरेंगे। इन दोनों गिरोहों अर्थात् मुसलमानों और ईसाइयों के बयान में अन्तर केवल इतना है कि ईसाई तो इस बात को मानते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने सलीब पर प्राण दिए और फिर जीवित होकर पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चढ़ गए तथा अपने बाप के दाहिनी ओर जा बैठे। पुनः अन्तिम युग में संसार की अदालत के लिए पृथ्वी पर आएंगे तथा कहते हैं कि संसार का ख़ुदा और स्रष्टा और मालिक वही यसू मसीह है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। वही है जो संसार के अन्त में प्रतिफल और दण्ड देने के लिए प्रतापी तौर पर उतरेगा। तब प्रत्येक मनुष्य जिसने उसको या उसकी मां को भी ख़ुदा समझ कर स्वीकार नहीं किया पकड़ा जाएगा और जहन्नुम में डाला

जाएगा, जहां रोना और दांत पीसना होगा, परन्तु मुसलमानों के कथित समुदाय कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सलीब नहीं दी गई और न सलीब पर मृत्यु हुई अपितु उस समय जबकि यहूदियों ने उनको सलीब देने के लिए गिरफ़्तार किया ख़ुदा का फ़रिश्ता उनको पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर ले गया और अब तक आकाश पर जीवित मौजूद हैं और उनका स्थान दूसरा आकाश है जहां हज़रत यह्या नबी अर्थात् यूहन्ना हैं। इसके अतिरिक्त मुसलमान यह भी कहते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा का बुज़ुर्ग नबी है किन्तु न ख़ुदा है और न ख़ुदा का बेटा तथा आस्था रखते हैं कि वह अन्तिम युग में दो फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए दमिश्क़ के मीनार के निकट या किसी अन्य स्थान पर उतरेंगे तथा इमाम मुहम्मद महदी के साथ मिलकर जो पहले से बनी फ़ातिमा में से संसार में आया हुआ होगा संसार की समस्त अन्य क़ौमों का वध कर डालेंगे तथा ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त जो अविलम्ब मुसलमान हो जाए और किसी को जीवित नहीं छोड़ेंगे।

अतः मुसलमानों का यह समुदाय जो स्वयं को अहले सुन्नत या अहले हदीस कहते हैं जिन को लोग वहाबी के नाम से पुकारते हैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दोबारा पृथ्वी पर उतरने से मूल उद्देश्य यह ठहराते हैं कि ताकि वह हिन्दुओं के महादेव की भांति सम्पूर्ण विश्व को समाप्त कर डालें। प्रथम यह धमकी दें कि मुसलमान हो जाएं और यदि फिर भी लोग कुफ़्र पर ही रहें तो सब को तलवार के घाट उतार दें तथा कहते हैं कि इसी उद्देश्य से वह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जीवित रखे गए हैं ताकि ऐसे युग में जबकि

इस्लामी बादशाहों की शक्तियां कमज़ोर हो जाएं आकाश से उतर कर अन्य क़ौमों को मारें और बलात् मुसलमान करें या इन्कार करने की अवस्था में वध कर दें विशेषतया ईसाइयों के विषय में कथित समुदाय के विद्वान यह वर्णन करते हैं कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आकाश से उतरेंगे तो वह संसार की समस्त सलीबों को तोड़ देंगे और तलवार के साथ बड़ी निर्दयतापूर्ण कार्यवाहियां करेंगे और संसार को रक्त में डुबो देंगे तथा जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है, ये लोग अर्थात् मुसलमानों में से अहले हदीस इत्यादि बड़े जोश से यह आस्था प्रकट करते हैं कि मसीह के उतरने से कुछ समय पूर्व बनी फ़ातिमा में से एक इमाम पैदा होगा जिस का नाम मुहम्मद महदी होगा तथा वास्तव में समय का ख़लीफ़ा और बादशाह वही होगा, क्योंकि वह क़ुरैश में से होगा और चूंकि उसका मूल उद्देश्य यह होगा कि अन्य समस्त जातियों को जो इस्लाम की इन्कारी हैं वध कर दिया जाए सिवाए ऐसे व्यक्ति के जो शीघ्रता से कलिमा पढ़ ले। इसलिए उसकी सहायता और हाथ बटाने के लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आकाश से उतरेंगे। यद्यपि कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी स्वयं एक महदी हैं अपितु बड़े महदी वही हैं परन्तु इस कारण से कि समय का ख़लीफ़ा क़ुरैश में से होना चाहिए, इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम समय के ख़लीफ़ा नहीं होंगे अपितु समय का ख़लीफ़ा वही मुहम्मद महदी होगा और कहते हैं कि ये दोनों मिलकर पृथ्वी को मनुष्यों के रक्त से भर देंगे तथा इतना रक्तपात करेंगे कि जिसका उदाहरण संसार के प्रारंभ से अन्त तक किसी स्थान पर नहीं पाया जाएगा और वह आते ही रक्तपात ही आरंभ कर देंगे और कोई

उपदेश इत्यादि नहीं देंगे और न कोई निशान दिखाएंगे और कहते हैं कि यद्यपि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इमाम मुहम्मद महदी के लिए बतौर सलाहकार या वज़ीर के हांगे और शासन की बागडोर केवल महदी के हाथ में होगी परन्तु हज़रत मसीह समस्त संसार का वध करने के लिए हज़रत इमाम मुहम्मद महदी को हर समय उकसाएंगे और तेज़ परामर्श देते रहेंगे जैसे उस नैतिक युग की कमी पूरी करेंगे जबकि आप ने यह शिक्षा दी थी कि किसी बुराई का मुकाबला मत करो और एक गाल पर थप्पड़ खा कर दूसरा गाल भी फेर दो।

ये मुसलमानों और ईसाइयों की हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में आस्थाएं हैं और यद्यपि ईसाइयों की यह एक बड़ी गलती है कि वे एक असहाय मनुष्य को ख़ुदा कहते हैं परन्तु कुछ मुसलमान जिनमें अहले हदीस का वह समुदाय भी है जिसको वहाबी भी कहते हैं उनकी यह आस्थाएं कि जो ख़ूनी महदी और ख़ूनी मसीह मौऊद के बारे में उनके हृदयों में हैं उनकी नैतिक अवस्थाओं पर बहुत ही बुरा प्रभाव डाल रही हैं, यहां तक कि वे इस बुरे प्रभाव के कारण न किसी अन्य क़ौम से नेक नीयत, मैत्री और ईमानदारी के साथ रह सकते हैं और न किसी अन्य सरकार के अधीन सच्चे और पूर्ण आज्ञापालन एवं वफ़ादारी से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि ऐसी आस्था गंभीर आपत्ति का स्थान है कि ग़ैर क़ौमों पर इतना बल प्रयोग किया जाए कि या तो तत्काल मुसलमान हो जाएं या वध कर दिए जाएं और प्रत्येक अन्तरात्मा बड़ी आसानी से समझ सकती है कि इससे पूर्व कोई व्यक्ति किसी धर्म की सच्चाई को समझ ले और उसकी नेक शिक्षा और खूबियों से

परिचित हो जाए ऐसे ही जब्र, बल प्रयोग और वध की धमकी से उसे अपने धर्म में सम्मिलित करना नितान्त अप्रिय ढंग है और ऐसे ढंग से धर्म की उन्नति क्या होगी अपितु इसके विपरीत प्रत्येक विरोधी को आपत्ति करने का अवसर प्राप्त होता है और ऐसे सिद्धान्तों का अन्तिम परिणाम यह है कि मानव जाति की हमदर्दी हृदय से पूरी तरह उठ जाए तथा दया और न्याय जो मानवता का एक बड़ा आचरण है समाप्त हो जाए और उसके स्थान पर द्वेष और दुर्भावना बढ़ती जाए और केवल दरिंदगी शेष रह जाए तथा उच्च आचरणों का नाम व निशान न रहे। किन्तु स्पष्ट है कि ऐसे सिद्धान्त उस ख़ुदा की ओर से नहीं हो सकते जिसकी प्रत्येक पकड़ समझाने के अन्तिम प्रयास के पूर्ण हो जाने के पश्चात् है।

विचार करना चाहिए कि यदि उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति एक सच्चे धर्म को इस कारण स्वीकार नहीं करता कि वह उसकी सच्चाई और उसकी पवित्र शिक्षा और उसकी विशेषताओं से अभी परिचित और बेख़बर है तो क्या ऐसे व्यक्ति के साथ यह व्यवहार उचित है कि बिना सोचे उसका वध कर दिया जाए अपितु ऐसा व्यक्ति दया का पात्र है और इस योग्य है कि उस पर नर्मी और शिष्टाचार के साथ उस धर्म की सच्चाई ख़ूबी तथा आध्यात्मिक (रूहानी) लाभ उसके सामने प्रकट किया जाए न यह कि उसके इन्कार का तलवार या बन्दूक़ से उत्तर दिया जाए। इसलिए इस युग के इन इस्लामी समुदायों (फ़िर्क़ों) के जिहाद का मामला और फिर उसके साथ यह शिक्षा कि शीघ्र ही वह युग आने वाला है कि जब एक ख़ूनी महदी पैदा होगा, जिसका नाम इमाम मुहम्मद होगा और

मसीह उसकी सहायता के लिए आकाश से उतरेगा और वे दोनों मिलकर संसार की समस्त क़ौमों का इस्लाम के इन्कार पर वध कर देंगे शिष्टाचार के बहुत ही विपरीत है। क्या यह वह आस्था नहीं है जो मानवता की समस्त पवित्र शक्तियों को निलंबित करती और दरिन्दों की भांति भावनाओं को जन्म देती है। ऐसी आस्था रखने वालों को प्रत्येक क़ौम से कपटतापूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है, यहां तक कि ग़ैर क़ौम के अधिकारियों के साथ भी सच्चे अनुसरण के साथ व्यवहार करना दुर्लभ हो जाता है अपितु झूठ बोलने के द्वारा एक झूठे अनुसरण का इज़हार किया जाता है। यही कारण है कि इस ब्रिटिश भारत में अहले हदीस के कुछ समुदाय (फ़िर्क़े) जिन की ओर हम अभी संकेत कर आए हैं अंग्रेज़ी सरकार के अधीन दो आचरणों वाली पद्धति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं अर्थात् गुप्त तौर पर प्रजा को वही रक्तपात के युग की आशाएं देते हैं और ख़ूनी महदी और ख़ूनी मसीह की प्रतीक्षा में हैं तथा उसी के अनुसार मसअले सिखाते हैं और फिर जब अधिकारियों के सामने जाते हैं तो उनकी चापलूसी

* अहले हदीस में से कुछ लोग बड़ी धृष्टता तथा सच्चाई को पहचाने बिना अपनी पुस्तकों में लिखते हैं कि बहुत शीघ्र ही महदी पैदा होने वाला है और वह हिन्दुस्तान के बादशाह अंग्रेज़ों को अपना असीर (कैदी) बनाएगा और उस समय ईसाई बादशाह गिरफ़्तार होकर उसके सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा। ये पुस्तकें अब तक इन अहले हदीस के घरों में मौजूद हैं। इनमें से एक पुस्तक "इक़्तिराबुस्साअः" एक बड़े प्रसिद्ध अहले हदीस की लिखी हुई है जिसके पृष्ठ-64 में यही किस्सा लिखा है। इसी से।

करते हैं और कहते हैं कि हम ऐसी आस्थाओं के विरोधी हैं तो क्या कारण है कि वह अपने लेखों द्वारा उसे सार्वजनिक तौर प्रकाशित नहीं करते तथा क्या कारण कि वे आने वाले ख़ूनी महदी और मसीह की इस प्रकार से प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जैसे उसके साथ सम्मिलित होने के लिए द्वार पर खड़े हैं। अतएव ऐसी आस्थाओं से इस प्रकार के मौलवियों की नैतिक अवस्था में बहुत सी अवनति पैदा हो गई है तथा वे इस योग्य नहीं रहे कि नर्मी और मैत्री की शिक्षा दे सकें अपितु दूसरे धर्म के लोगों को अकारण कत्ल करना धार्मिकता का एक महान कर्त्तव्य समझा गया है। हम इस से बहुत प्रसन्न हैं कि अहले हदीस में से कोई फ़िर्क़ा इन ग़लत आस्थाओं का विरोधी हो परन्तु हम इस बात को खेद के साथ वर्णन करने से रुक नहीं सकते कि अहले हदीस के फ़िर्क़ों में से वे छिपे वहाबी भी हैं जो ख़ूनी महदी और जिहाद के मामलों को मानते हैं और उचित ढंग के विपरीत आस्था रखते हैं तथा किसी अवसर के समय में दूसरे धर्मों के समस्त लोगों का वध कर देना बड़े पुण्य का काम समझते हैं। हालांकि ये आस्थाएं अर्थात् इस्लाम के लिए वध या ऐसी भविष्यवाणी पर आस्था रखना कि जैसे कोई ख़ूनी महदी या ख़ूनी मसीह संसार में आएगा तथा रक्तपात और रक्तपात की धमकियों से इस्लाम को उन्नति देना चाहेगा। पवित्र क़ुर्आन तथा सही हदीसों से बिलकुल विपरीत है। हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का में और इसके पश्चात् भी काफ़िरों द्वारा कष्ट उठाया और विशेष तौर पर मक्का के तेरह वर्ष इस संकट तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार सहन करने में गुज़रे कि जिसकी कल्पना से भी रोना आता है किन्तु

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस समय तक शत्रुओं के मुकाबले पर तलवार न उठाई और न उनके कठोर शब्दों का कठोर उत्तर दिया, जब तक कि बहुत से सहाबा[रज़ि.] और प्रिय मित्र बड़ी निर्दयता से वध किए गए तथा विभिन्न प्रकार से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी शारीरिक कष्ट दिया गया। कई बार विष भी दिया गया तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वध करने के लिए कई प्रकार की योजनाएं भी बनाई गईं जिनमें शत्रुओं को निराशा हाथ लगी। जब ख़ुदा के प्रतिशोध का समय आया तो ऐसा हुआ कि मक्का के समस्त रईसों तथा जाति के प्रमुख लोगों ने एकमत होकर यह निर्णय किया कि इस व्यक्ति का बहरहाल वध कर देना चाहिए। उस समय ख़ुदा ने जो अपने प्रियजनों, सिद्दीक़ों (सत्यनिष्ठों) तथा ईमानदारों का समर्थक होता है आप को सूचना दे दी कि इस शहर में अब बुराई के अतिरिक्त कुछ नहीं और वध करने पर कटिबद्ध हैं, यहां से शीघ्र भाग जाओ। तब आप ख़ुदा के आदेश से मदीना की ओर प्रवास (हिजरत) कर गए, किन्तु फिर भी शत्रुओं ने पीछा न छोड़ा अपितु पीछा किया तथा इस्लाम को बहरहाल पैरों तले रोंदना चाहा। जब उन लोगों की धृष्टता इस सीमा तक बढ़ गई और कई निर्दोषों का वध करने के अपराध ने भी उनको दण्ड-योग्य बनाया तब उनके साथ लड़ने के लिए प्रतिरक्षा तथा स्वयं की रक्षा के तौर पर अधिकृत आज्ञा दी गई तथा वे लोग बहुत से निर्दोष लोगों का वध करने के बदले में जिनको उन्होंने बिना किसी युद्ध के मात्र शरारत से वध किया था उनकी धन-सम्पत्तियों पर अधिकार किया था, इसके पात्र हो गए थे कि इस प्रकार उनके और उनके सहयोगियों

के साथ व्यवहार किया जाता। परन्तु मक्का विजय के समय हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब को क्षमा कर दिया। इसलिए यह विचार कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने कभी धर्म फैलाने के लिए लड़ाई की थी या किसी को बल के साथ इस्लाम में सम्मिलित किया था बहुत बड़ी ग़लती तथा अन्याय है।

यह बात भी याद रखने योग्य है कि चूंकि उस युग में प्रत्येक जाति का इस्लाम के साथ द्वेष बढ़ा हुआ था तथा विरोधी लोग उसको एक नया समुदाय (फ़िर्क़ा) या अल्पसंख्यक जमाअत समझ कर उसे मिटाने की युक्तियों में लगे हुए थे और प्रत्येक इस चिन्ता में था कि किसी प्रकार ये लोग शीघ्र समाप्त हो जाएं या फिर ऐसे तितर-बितर हों कि उनकी उन्नति का कोई आशंका शेष न रहे। इस कारण बात-बात में उनकी ओर से रुकावट थी तथा प्रत्येक जाति में से जो व्यक्ति मुसलमान हो जाता था वह जाति के हाथ से या तो तुरन्त वध किया जाता था या उसका जीवन बहुत ख़तरे में रहता था। अतः ऐसे समय में ख़ुदा तआला ने नए होने वाले मुसलमानों पर दया करते हुए ऐसी पक्षपाती और द्वेष रखने वाली शक्तियों पर दण्ड लागू कर दिया था कि वे इस्लाम को ख़राज (कर) देने वाले हो जाएं और इस प्रकार इस्लाम के लिए स्वतंत्रता के द्वार खोल दें। इस का तात्पर्य यह था ताकि ईमान लाने वालों के मार्ग से बाधाएं दूर हो जाएं। यह संसार पर ख़ुदा की दया थी और इस में किसी की हानि नहीं थी, किन्तु स्पष्ट है कि उस समय की अन्य क़ौमों के बादशाह इस्लाम की धार्मिक स्वतंत्रता को नहीं रोकते, इस्लामी कर्त्तव्यों (फ़राइज़) को पूरा

करने को बन्द न करते तथा अपनी क़ौमों के मुसलमान होने वालों का वध न करते, उनको क़ैदख़ानों में न डालते तथा उनको भिन्न-भिन्न प्रकार की यातनाएं न देते तो फिर क्यों इस्लाम उनके मुकाबले पर तलवार उठाए। यह स्पष्ट है कि इस्लाम ने कभी जब्र (बल प्रयोग) करने की बात नहीं सिखाई। यदि पवित्र क़ुर्आन तथा हदीस की समस्त पुस्तकों और इतिहास की पुस्तकों को ध्यानपूर्वक देखा जाए और जहां तक इंसान के लिए संभव है चिंतन से पढ़ा या सुना जाए तो इतनी विशाल जानकारियों के पश्चात् ठोस विश्वास के साथ ज्ञात होगा कि यह आपत्ति कि जैसे इस्लाम ने धर्म को बल प्रयोग फैलाने के लिए तलवार उठाई है नितान्त निराधार तथा लज्जाजनक आरोप है और यह उन लोगों का विचार है जिन्होंने पक्षपात एवं द्वेष भावना से अलग होकर क़ुर्आन, हदीस तथा इस्लाम के विश्वसनीय इतिहासों को नहीं देखा अपितु झूठ और लांछन लगाने से पूरा-पूरा काम लिया है, परन्तु मैं जानता हूं कि अब वह युग निकट आता जाता है कि सच के भूखे और प्यासे इन लांछनों की वास्तविकता जान लेंगे। क्या उस धर्म को हम बलात् का धर्म कह सकते हैं जिसकी किताब क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर यह निर्देश है कि *لَا اِكْرَاهَ فِی الدِّيْنِ अर्थात् धर्म में सम्मिलित करने के लिए बलात् वैध नहीं। क्या हम उस महान नबी पर बलात का आरोप लगा सकते हैं जिसने मक्का के तेरह वर्षों में अपने समस्त साथियों को दिन-रात यही परामर्श और उपदेश दिया कि बुराई का मुकाबला न करो या धैर्य धारण करते रहो। हां जब शत्रुओं की बुराई सीमा से

* अलबक़रह - 257

अधिक हो गई तथा इस्लाम धर्म को मिटा देने के लिए समस्त जातियों ने प्रयास किया तो उस समय ख़ुदा के स्वाभिमान ने चाहा कि जो लोग तलवार उठाते हैं उनका तलवार से ही वध किया जाए अन्यथा पवित्र क़ुर्आन ने जब्र या बलात् की शिक्षा कदापि नहीं दी। यदि जब्र की शिक्षा होती तो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी जब्र की शिक्षा के कारण इस योग्य न होते कि परीक्षाओं के अवसर पर सच्चे ईमानदारों की भांति श्रद्धा दिखा सकते, परन्तु हमारे सय्यद व मौला नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की वफादारी एक ऐसी बात है जिसे वर्णन करने की हमें आवश्यकता नहीं। यह बात किसी पर गुप्त नहीं कि उनकी श्रद्धा और वफादारी के नमूने इस श्रेणी पर प्रकटन में आए कि दूसरी जातियों में उनका उदाहरण मिलना कठिन है।

इस वफ़ादार जाति ने तलवारों के नीचे भी अपनी वफ़ादारी तथा श्रद्धा को नहीं छोड़ा अपितु अपने महान एंव पवित्र नबी की मित्रता में वह श्रद्धा दिखाई कि मनुष्य में वह श्रद्धा नहीं आ सकती जब तक ईमान से उसका दिल तथा सीना प्रकाशित न हो। अतः इस्लाम में जब्र का हस्तक्षेप नहीं। इस्लाम के युद्ध तीन प्रकारों से बाहर नहीं

(1) प्रतिरक्षा के तौर पर अर्थात् अपनी स्वायत्तता की रक्षा के तौर पर।

(2) दण्ड के तौर पर अर्थात् खून के बदले खून।

(3) स्वतंत्रता की स्थापना के तौर पर अर्थात् उन युद्ध करने वालों की शक्ति को तोड़ने के लिए जो मुसलमान होने पर वध करते थे।

अत: जिस अवस्था में इस्लाम में यह निर्देश ही नहीं कि किसी व्यक्ति को जब्र और वध की धमकी से धर्म में सम्मिलित किया जाए तो फिर किसी खूनी महदी या खूनी मसीह की प्रतीक्षा करना सर्वथा व्यर्थ तथा बेकार है, क्योंकि संभव नहीं कि क़ुर्आनी शिक्षा के विपरीत कोई ऐसा मनुष्य भी संसार में आए जो तलवार के साथ लोगों को मुसलमान करे। यह बात ऐसी न थी कि समझ में न आ सकती या उसके समझने में कुछ कठिनाइयां होतीं किन्तु मूर्ख लोगों को हृदय की लोलुपताओं ने इस आस्था की ओर झुकाया है क्योंकि हमारे अधिकतर मौलवियों को यह धोखा लगा हुआ है। वे विचार करते हैं कि महदी की लड़ाइयों के कारण बहुत सा धन उनको प्राप्त होगा यहां तक कि वे संभाल नहीं सकेंगे और चूंकि आजकल इस देश के अधिकांश मौलवी बहुत दरिद्र हैं इस कारण भी वे ऐसे महदी की दिन-रात प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कदाचित् इसी के द्वारा उनकी हार्दिक इच्छाएं पूरी हों। इसलिए जो व्यक्ति ऐसे महदी के आने से इन्कार करे ये लोग उसके शत्रु हो जाते हैं और उसे तुरन्त काफ़िर ठहरा दिया जाता तथा इस्लाम के दायरे से बाहर समझा जाता है। अत: मैं भी इन्हीं कारणों से इन लोगों की दृष्टि में काफ़िर हूं क्योंकि ऐसे ख़ूनी महदी तथा खूनी मसीह के आने को नहीं मानता हूं अपितु इन व्यर्थ आस्थाओं को सख़्त घृणा तथा नफ़रत से देखता हूं और मुझे काफ़िर कहने का केवल यही कारण नहीं कि मैंने ऐसे काल्पनिक मसीह के आने से इन्कार कर दिया है जिस पर उनकी आस्था है अपितु एक कारण यह भी है कि मैंने ख़ुदा तआला से इल्हाम पा कर इस बात की सार्वजनिक घोषणा की है कि वह वास्तविक मसीह

मौऊद वही वास्तव में महदी भी है जिसके आने का शुभ सन्देश इंजील और क़ुर्आन में पाया जाता है तथा हदीसों में भी उसके आने का वादा दिया गया है वह मैं ही हूं किन्तु बिना तलवारों तथा बन्दूकों के और ख़ुदा ने मुझे आदेश दिया है कि नर्मी, धैर्य, सहनशीलता तथा विनम्रता के साथ उस ख़ुदा की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करूं जो सच्चा, अनश्वर, अपरिवर्तनीय ख़ुदा है तथा पूर्ण पवित्रता, पूर्ण सहनशीलता, पूर्ण दया तथा पूर्ण न्याय रखता है।

इस अंधकारमय युग का प्रकाश मैं ही हूं। जो व्यक्ति मेरा अनुसरण करता है वह उन गढ़ों और खाइयों से बचाया जाएगा जो शैतान ने अन्धकार में चलने वालों के लिए तैयार किए हैं। मुझे उसने भेजा है ताकि मैं अमन और सहनशीलता के साथ संसार का सच्चे ख़ुदा की ओर मार्ग-दर्शन करूं और इस्लाम में नैतिक अवस्थाओं को पुनः स्थापित कर दूं, और मुझे उसने सत्याभिलाषियों की सन्तुष्टि के लिए आकाशीय निशान भी प्रदान किए हैं तथा मेरे समर्थन में अपने अदभुत कार्य दिखाए हैं और ग़ैब (परोक्ष) की बातें तथा भावी रहस्य जो ख़ुदा तआला की पवित्र किताबों की दृष्टि से सच्चे की पहचान के लिए मूल मापदण्ड हैं मुझ पर खोले हैं तथा मुझे पवित्र ज्ञान एवं आध्यात्म ज्ञान प्रदान किए हैं। इसलिए उन रूहों ने मुझ से शत्रुता की जो सच्चाई को नहीं चाहतीं तथा अंधकार से प्रसन्न हैं, परन्तु मैंने चाहा कि जहां तक मुझ से हो सके मानव जाति की हमदर्दी करूं।

अतः इस युग में ईसाइयों के साथ बड़ी हमदर्दी यह है कि उनको उस सच्चे ख़ुदा की ओर ध्यान दिलाया जाए जो पैदा होने, मरने और दुःख-दर्द इत्यादि हानियों से पवित्र है, वह ख़ुदा जिस ने सम्पूर्ण

प्रारंभिक शरीरों तथा ग्रहों को गेंद (गोलाकार) की आकृति पर पैदा करके अपने प्रकृति के नियम (क़ानूने-क़ुदरत) में यह निर्देश अंकित किए कि उस के अस्तित्व में गोलाई की भांति एकत्त्व तथा समानता है। इसलिए विस्तृत वस्तुओं में से कोई वस्तु तीन कोनों वाली पैदा नहीं की गई अर्थात् जो कुछ ख़ुदा के हाथ से पहले पहल निकला, जैसे पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्र तथा सारे सितारे और तत्त्व वे सब गोल हैं जिनका गोलाकार होना तौहीद की ओर संकेत कर रहा है। अतः ईसाइयों से सच्ची हमदर्दी तथा सच्चा प्रेम इससे बढ़ कर और कुछ नहीं कि उस ख़ुदा की ओर उनका मार्ग-दर्शन किया जाए जिसके हाथ की वस्तुएं उसको तस्लीस* से पवित्र ठहराती हैं।

और मुसलमानों के साथ बड़ी हमदर्दी यह है कि उनकी नैतिक अवस्थाओं को ठीक किया जाए तथा उनकी उन झूठी आशाओं को कि एक ख़ूनी महदी और मसीह का प्रकट होना अपने दिलों में ऐसे जमाए बैठे हैं जो इस्लामी निर्देशों के सर्वथा विपरीत हैं दूर किया जाए और मैं अभी उल्लेख कर चुका हूं कि वर्तमान के कुछ उलेमा (मौलवियों) के ये विचार कि ख़ूनी महदी आएगा और तलवार से इस्लाम को फैलाएगा ये समस्त विचार क़ुर्आनी शिक्षा के विरुद्ध और केवल इच्छाएं हैं तथा एक नेक और सत्य प्रिय मुसलमान के लिए इस विचारों को त्यागने के लिए केवल इतना ही काफी है कि क़ुर्आनी निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़े और थोड़ा ठहर कर सोच-विचार से काम लेकर देखे कि ख़ुदा तआला का पवित्र कलाम क्योंकर इस

* तस्लीस - ईसाइयों की तीन खुदाओं की आस्था कि बाप, बेटा तथा रूहुल क़ुदुस तीनों मिलकर ख़ुदा हैं। (अनुवादक)

बात का विरोधी है कि किसी को धर्म में सम्मिलित करने के लिए वध करने की धमकी दी जाए। अतः यही एक तर्क ऐसी आस्थाओं को मिथ्या सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है, तथापि मेरी हमदर्दी ने चाहा कि ऐतिहासिक घटनाओं आदि प्रकाशमान प्रमाणों से भी उपरोक्त आस्थाओं का झूठा होना सिद्ध करूं। अतः इस पुस्तक में मैं यह सिद्ध करूंगा कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब पर नहीं मरे और न आकाश पर गए और न कभी आशा रखनी चाहिए कि वह पुनः पृथ्वी पर आकाश से उतरेंगे। अपितु वह एक सौ बीस वर्ष की आयु पाकर श्रीनगर कशमीर में मृत्यु पा गए तथा श्रीनगर मुहल्ला ख़ानयार में उनकी क़ब्र है। मैंने बयान की सफाई के लिए इस अनुसंधान (तहक़ीक) को दस अध्यायों तथा एक समापन पर विभाजित किया है-

(1) प्रथम वे गवाहियां जो इस बारे में हमें इंजील से प्राप्त हुई हैं।

(2) दूसरे वे गवाहियां जो इस बारे में पवित्र क़ुर्आन और हदीस से हमें मिली हैं।

(3) तीसरे वे गवाहियां जो चिकित्सा की पुस्तकों से हमें प्राप्त हुई हैं।

(4) चौथे वे गवाहियां जो एतिहासिक पुस्तकों से हम को मिली हैं।

(5) पांचवें वे गवाहियां जो मौखिक निरन्तरता से हमें प्राप्त हुई हैं।

(6) छठे वे गवाहियां जो एकमत क्रम से हमें मिली हैं।

(7) सातवें वे गवाहियां जो बौद्धिक तर्कों से हमें प्राप्त हुई हैं।

(8) आठवीं वे गवाहियां जो ख़ुदा के ताज़ा इल्हाम से हमें मिली हैं। यह आठ अध्याय है।

(9) नवें अध्याय में संक्षेप के तौर पर ईसाई धर्म तथा इस्लाम की शिक्षा के अनुसार तुलना करके दिखाया जाएगा तथा इस्लाम धर्म की सच्चाई के तर्क वर्णन किए जाएंगे।

(10) दसवें अध्याय में कुछ अधिक विवरण उन बातों का दिया जाएगा जिन के लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त किया है तथा यह वर्णन होगा कि मेरे मसीह मौऊद तथा ख़ुदा की ओर से होने का प्रमाण क्या है तथा अन्त में पुस्तक का समापन होगा जिसमें कुछ आवश्यक निर्देशों का उल्लेख किया जाएगा।

लोगों से आशा रखता हूं कि वे इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा ऐसे ही कुछ धारणा से उन सच्चाइयों को हाथ से फेंक न दें तथा याद रखें कि हमारा यह अनुसंधान (तहक़ीक़) सरसरी नहीं है अपितु यह प्रमाण बहुत ही अनुसंधान और सघन छान-बीन से प्राप्त किए गए हैं और हम ख़ुदा तआला से दुआ करते हैं कि इस कार्य में हमारी सहायता करे और अपने विशेष इल्हाम एवं इल्क़ा से सच्चाई का पूर्ण प्रकाश हमें प्रदान करे कि प्रत्येक सही ज्ञान और शुद्ध मा'रिफ़त उसी से उतरती और उसी के सामर्थ्य से हृदयों का पथ-प्रदर्शन करती है। आमीन - पुनः आमीन।

विनीत - **मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद,** क़ादियान

25 अप्रैल, 1899 ई.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रथम अध्याय

ज्ञात होना चाहिए कि यद्यपि ईसाइयों की यह आस्था है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम यहूद इस्क्रियूती के षड्यन्त्र से गिरफ़्तार होकर सलीब पर मृत्यु को प्राप्त हुए और फिर जीवित होकर आकाश पर चले गए परन्तु पवित्र इंजील पर विचार करने से यह आस्था सर्वथा असत्य सिद्ध होती है। मती बाब-12, आयत 40 में लिखा है कि जैसा कि युनूस तीन रात-दिन मछली के पेट में रहा वैसा ही इब्ने आदम तीन रात-दिन पृथ्वी के अन्दर रहेगा। अत: स्पष्ट है कि यूनुस मछली के पेट में मरा नहीं था और यदि अधिक से अधिक कुछ हुआ था तो केवल मूर्च्छा और बेहोशी थी और ख़ुदा की पवित्र किताबें यह गवाही देती हैं कि यूनुस ख़ुदा की कृपा से मछली के पेट में जीवित रहा और जीवित निकला तथा अन्तत: जाति ने उसे स्वीकार किया फिर यदि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पृथ्वी के पेट में मर गए थे तो मुर्दा को जीवित से क्या समानता और जीवित को मुर्दे से क्या समानता ? अपितु वास्तविकता यह है कि चूंकि मसीह एक सच्चा नबी था और जानता था कि वह ख़ुदा जिसका वह प्रिय था लानती मृत्यु से उसे बचाएगा। इसलिए उसने ख़ुदा से इल्हाम पाकर भविष्यवाणी के तौर पर यह उदाहरण वर्णन किया था तथा इस उदाहरण में यह जता दिया था कि वह सलीब पर नहीं मरेगा और न ला'नत की लकड़ी पर उसके प्राण निकलेंगे अपितु यूनुस नबी की भांति केवल बेहोशी की अवस्था होगी। मसीह ने इस उदाहरण में यह

भी संकेत किया था कि वह पृथ्वी के पेट से निकल कर फिर क़ौम से मिलेगा और यूनुस की भांति क़ौम में सम्मान पाएगा। अतः यह भविष्यवाणी भी पूरी हुई, क्योंकि मसीह पृथ्वी के पेट में से निकल कर अपनी उन जातियों की ओर गया जो कश्मीर और तिब्बत इत्यादि पूर्वी देशों में निवास रखती थीं अर्थात् बनी इस्राईल के वे दस फ़िर्क़े जिनको शालमन्दर शाह असूर सामरियः से मसीह से सात सौ इक्कीस वर्ष पूर्व क़ैदी बना कर ले गया। अन्त में वह हिन्दुस्तान की ओर आकर इस देश के विभिन्न भागों में निवास करने लगे थे तथा अवश्य था कि मसीह यह यात्रा करता, क्योंकि ख़ुदा तआला की ओर से यही उस की नबुव्वत का मुख्य उद्देश्य था कि वह उन खोए हुए यहूदियों को मिलता जो हिन्दुस्तान के विभिन्न स्थानों में निवास करने लगे थे। कारण यह कि वास्तव में वही इस्राईल की खोई हुई भेड़ें थीं जिन्होंने इन देशों में आकर अपने पूर्वजों का धर्म भी त्याग दिया था और उनके अधिकतर लोग बुद्ध धर्म में सम्मिलित हो गए थे और फिर धीरे-धीरे मूर्ति-पूजा तक नौबत पहुंच गई थी। अतः डाक्टर बर्नियर ने भी अपनी पुस्तक 'वकाए सैर व सयाहत' में कई विद्वानों के सन्दर्भ से वर्णन किया है कि कश्मीर निवासी वास्तव में यहूदी हैं जो शाह असूर के शासनकाल में हुए उपद्रव के समय में इस देश में आ गए थे * बहर हाल हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के लिए यह अवश्यक था कि उन खोई हुई भेड़ों की खोज करते जो इस देश

---

* और उन के अतिरिक्त और यहूदी भी बाबुल की घटना से पूर्वी देशों की ओर निकाले गए। इस में से। देखिए जिल्द - 2 "वकाए सैर व सयाहत" लेखक - डाक्टर बर्नियर फ्रांसीसी।

हिन्दुस्तान में आकर दूसरी जातियों में मिलजुल गई थीं। अत: आगे चलकर हम इस बात का प्रमाण देंगे कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम वास्तव में इस देश हिन्दुस्तान में आए और फिर यात्रा करते करते कश्मीर में पहुंचे और इस्राईल की खोई हुई भेड़ों का बुद्ध धर्म में पता लगा लिया और उन्होंने अन्त में उसको उसी प्रकार स्वीकार किया जैसा कि यूनुस की जाति ने यूनुस को स्वीकार कर लिया था और अवश्य था कि ऐसा होता, क्योंकि मसीह इंजील में अपने मुख से इस बात को वर्णन करता है कि वह इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के लिए भेजा गया है।

इसके अतिरिक्त सलीब की मृत्यु से मुक्ति पाना उसको इसलिए भी आवश्यक था कि पवित्र पुस्तक (बाइबल) में लिखा है कि जो कोई काठ पर लटकाया गया वह ला'नती है और ला'नत का एक ऐसा अर्थ है कि जो ईसा मसीह जैसे ख़ुदा के चुने हुए पर एक पल के लिए भी कहना बहुत बड़ा अत्याचार व अन्याय है क्योंकि समस्त विद्वानों के निकट सर्व सम्मत से ला'नत का अर्थ हृदय से सम्बन्ध रखता है और उस अवस्था में किसी को मलऊन कहा जाएगा जबकि वास्तव में उसका हृदय ख़ुदा से खिन्न हो कर काला हो जाए तथा ख़ुदा की दया से वंचित और ख़ुदा के प्रेम से अपरिचित, ख़ुदा की पहचान से सर्वथा रिक्त और खाली तथा शैतान की तरह अंधा और अज्ञान हो कर गुमराही के विष से भरा हुआ हो और उसमें ख़ुदा के प्रेम एव ज्ञान का प्रकाश लेशमात्र भी उसमें शेष न रहे तथा प्रेम एवं वफ़ा का सम्पूर्ण सम्बन्ध टूट जाए तथा उसमें और ख़ुदा में परस्पर द्वेष, घृणा, नफ़रत, और शत्रुता पैदा हो जाए यहां तक कि ख़ुदा

उसका शत्रु और वह ख़ुदा का शत्रु हो जाए ख़ुदा उससे विमुख हो और वह ख़ुदा से विमुख हो जाए। अतः प्रत्येक विशेषता में शैतान का वारिस हो जाए। इसी कारण से शैतान का नाम लईन* है। अतः स्पष्ट है कि मलऊन का अर्थ ऐसा गन्दा और अपवित्र है कि किसी भी प्रकार किसी सत्यनिष्ठ पर जो कि अपने हृदय में ख़ुदा का प्रेम रखता है चरितार्थ नहीं हो सकता। खेद कि ईसाइयों ने इस आस्था के ईजाद करते समय ला'नत के अर्थ पर विचार नहीं किया अन्यथा संभव न था कि वे लोग ऐसा ख़राब शब्द मसीह जैसे सत्यनिष्ठ के बारे में प्रयोग कर सकते। क्या हम कह सकते हैं कि मसीह पर कभी ऐसा समय आया था कि उसका हृदय वास्तव में ख़ुदा से विमुख, ख़ुदा का इन्कारी, ख़ुदा से खिन्न और ख़ुदा का शत्रु हो गया था ? क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि मसीह के हृदय ने कभी यह महसूस किया था कि वह अब ख़ुदा से विमुख, ख़ुदा का शत्रु तथा कुफ्र और इन्कार के अंधकार में डूबा हुआ है ? फिर यदि मसीह के हृदय पर कभी ऐसी अवस्था नहीं आई अपितु वह हमेशा प्रेम, तथा ख़ुदा की पहचान के प्रकाश से भरा रहा तो हे बुद्धिमानो ! यह सोचने का स्थान है कि हम क्योंकर कह सकते हैं कि मसीह के हृदय पर न एक ला'नत अपितु ख़ुदा की हज़ारों ला'नतें अपने विवरण के साथ उतरी थीं। मआज़ल्लाह (ख़ुदा की शरण) कदापि नहीं। अतः फिर हम क्योंकर कह सकते हैं कि नऊज़ुबिल्लाह वह ला'नती हुआ ? नितान्त खेद है कि मनुष्य जब एक बात मुख से निकाल लेता

* देखो शब्दकोश - लिसानुलअरब, सिहाह जौहरी, क़ामूस, मुहीत, ताजुलउरूस इत्यादि

है या एक आस्था पर क़ायम हो जाता है तो फिर यद्यपि उस आस्था की कैसी ही खराबी खुल जाए उसे किसी प्रकार भी छोड़ना नहीं चाहता। मोक्ष प्राप्त करने की अभिलाषा यदि किसी यथार्थ पर आधारित हो तो प्रशंसनीय बात है किन्तु यह कैसी मोक्ष की अभिलाषा है जिससे एक सच्चाई का ख़ून किया जाता है और एक पवित्र नबी तथा पूर्ण इन्सान के बारे में यह विश्वास किया जाता है कि मानो उस पर यह अवस्था भी आई थी कि उसका ख़ुदा तआला से सम्बन्ध टूट गया था तथा सहमति, एकता के स्थान पर पृथकता, विपरीतता शत्रुता तथा अप्रसन्नता पैदा हो गई थी तथा प्रकाश के स्थान पर हृदय पर अंधकार छा गया था।

यह भी स्मरण रहे कि ऐसा विचार केवल मसीह अलैहिस्सलाम की शान-ए-नबुव्वत तथा रसूल के पद के ही विपरीत नहीं अपितु उन के इस पूर्णता के दावे, पवित्रता, प्रेम तथा अध्यात्म ज्ञान के भी विपरीत है जो उन्होंने इंजील में अनेकों स्थानों में प्रकट किया है। इंजील को पढ़कर देखो कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम स्पष्ट तौर पर दावा करते हैं कि मैं संसार का प्रकाश हूं। मैं पथ-प्रदर्शक हूं और मैं ख़ुदा तआला से उच्च स्तर का प्रेम संबंध रखता हूं और मैंने उससे पवित्र जन्म पाया है और मैं ख़ुदा का प्यारा बेटा हूं फिर इन पृथकता रहित तथा पवित्र सम्बन्धों के बावजूद ला'नत का अपवित्र अर्थ मसीह के हृदय पर क्योंकर चरितार्थ हो सकता है कदापि नहीं। अत: निस्सन्देह यह बात सिद्ध है कि मसीह सलीब पर नहीं मरा क्योंकि उस का अस्तित्व सलीब के परिणाम से पवित्र है और जबकि सलीब पर नहीं मरा तो ला'नत की अपवित्र परिस्थिति से नि:सन्देह उसके

दिल को बचाया गया और निस्सन्देह इससे यह परिणाम भी निकला कि वह आकाश पर कदापि नहीं गया क्योंकि आकाश पर जाना इस योजना का एक भाग था और सलीब दिए जाने की एक शाखा थी।

अत: जबकि सिद्ध हुआ कि वह न ला'नती हुआ और न तीन दिन के लिए नर्क में गया और न मरा तो फिर यह दूसरा भाग आकाश पर जाने का भी असत्य सिद्ध हुआ और इस पर और भी तर्क हैं जो इंजील से पैदा होते हैं और उन्हें हम नीचे लिखते हैं। अत: उनमें से एक यह कथन है जो मसीह के मुख से निकला - "परन्तु मैं अपने जी उठने के पश्चात् तुम से आगे जलील को जाऊंगा।"

(देखो मती अध्याय-26, आयत 32)

इस आयत से बिल्कुल स्पष्ट है कि मसीह क़ब्र से निकलने के पश्चात जलील की ओर गया था न कि आकाश की ओर, तथा मसीह का यह वाक्य कि "अपने जी उठने के पश्चात्" इस से मरने के बाद जीवित होना अभिप्राय नहीं हो सकता अपितु चूंकि यहूदियों तथा विद्वान लोगों की दृष्टि में वह सलीब पर मर चुका था इसलिए मसीह ने पहले से इनके भविष्य के विचारों के अनुसार यह वाक्य प्रयोग किया। वास्तव में जिस व्यक्ति को सलीब पर खींचा गया तथा उसके पैरों और हाथों में कील ठोंके गए, यहां तक वह उस कष्ट से बेहोश होकर मुर्दे की सी अवस्था में हो गया। यदि वह ऐसे आघात से मुक्ति पा कर पुन: होश की अवस्था में आ जाए तो उसका यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मैं फिर जीवित हो गया और निस्सन्देह इस महा आघात के पश्चात् मसीह का बच जाना एक चमत्कार था, साधारण बात नहीं थी। परन्तु यह सही नहीं है कि ऐसा विचार किया

जाए कि मसीह के प्राण निकल गए थे। सच है कि इंजीलों में ऐसे शब्द मौजूद हैं परन्तु यह इन्जील के लेखकों की उसी प्रकार की ग़लती है जैसा कि अन्य बहुत सी ऐतिहासिक घटनाओं के लिखने में उन्होंने ग़लती खाई है। इंजीलों के अन्वेषक व्याख्याकारों ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि इंजीलों में दो भाग हैं- (1) धार्मिक शिक्षा है जो हवारियों को हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से मिली थी जो इंजील का मूल तत्त्व है।

(2) ऐतिहासिक घटनाएं हैं जैसे हज़रत ईसा की वंशावली और उनका पकड़ा जाना और मारा जाना और मसीह के समय में एक चमत्कार पूर्ण तालाब का होना इत्यादि यह वे बातें हैं जो लिखने वालों ने अपनी ओर से लिखी थीं। अत: ये बातें इल्हामी नहीं हैं अपितु लिखने वालों ने अपने विचार के अनुसार लिखी हैं और कुछ स्थानों पर सीमा से अधिक अतिशयोक्ति भी की है। जैसा कि एक स्थान पर लिखा है कि मसीह ने जितने कार्य किए अर्थात् चमत्कार दिखाए यदि वे पुस्तकों में लिखे जाते तो वे पुस्तकें संसार में न समा सकतीं। यह कितनी बड़ी अतिशयोक्ति है।

इसके अतिरिक्त ऐसे बड़े आघात को जो मसीह को पहुंचा था मृत्यु के साथ चरितार्थ करना मुहावरा के विपरीत नहीं है। प्रत्येक जाति में लगभग यह मुहावरा पाया जाता है कि जो व्यक्ति एक विनाशकारी आघात में ग्रस्त हो कर फिर अन्तत: बच जाए, उसको कहा जाता है कि नए सिरे से जीवित हुआ तथा किसी जाति या देश के मुहावरे में ऐसी बोलचाल में कुछ भी बनावट नहीं।

इस समस्त बातों के पश्चात् एक और बात याद रखने योग्य है

कि बर्नबास की इंजील में जो संभवत: लन्दन के पुस्तकालय में भी होगी यह भी लिखा है कि मसीह सलीब पर नहीं मरा और न सलीब पर जान दी। अब हम यहां यह परिणाम निकाल सकते हैं कि यद्यपि यह पुस्तक इंजीलों में सम्मिलित नहीं की गई और बिना किसी फैसले के रद्द कर दी गई है, परन्तु इसमें क्या सन्देह है कि यह एक प्राचीन पुस्तक है तथा उसी युग की है जबकि दूसरी इंजीलें लिखी गईं। क्या हमें अधिकार नहीं है कि इस अति प्राचीन पुस्तक को प्राचीन युग की एक ऐतिहासिक पुस्तक समझ लें तथा ऐतिहासिक पुस्तकों के स्तर पर रख कर उस से लाभ प्राप्त करें ? तथा क्या कम से कम इस पुस्तक के पढ़ने से यह परिणाम नहीं निकलता कि मसीह अलैहिस्सलाम के सलीब के समय समस्त लोग इस बात पर सहमत नहीं थे कि हज़रत मसीह सलीब पर मृत्यु पा गए। फिर इसके अतिरिक्त जबकि स्वयं उन चार इंजीलों में ऐसे रूपक मौजूद हैं कि एक मुर्दे को कह दिया है कि यह सोता है मरा नहीं तो इस अवस्था में यदि बेहोशी की दशा में मुर्दे का शब्द बोला गया तो क्या यह अनुचित है। हम लिख चुके हैं कि नबी के कलाम (वाणी) में झूठ वैध नहीं। मसीह ने अपनी क़ब्र में रहने के तीन दिन को यूनुस के तीन दिनों से समानता दी है। इस से यही विदित होता है कि जिस प्रकार यूनुस तीन दिन मछली के पेट में जीवित रहा इसी प्रकार मसीह भी तीन दिन क़ब्र में जीवित रहा और यहूदियों में उस समय की क़ब्रें वर्तमान युग की क़ब्रों के समान न थीं अपितु वे एक कोठे की भांति अन्दर से बहुत विशाल होती थीं और एक ओर खिड़की होती थी जिसे एक बड़े पत्थर से ढांका हुआ होता था और हम शीघ्र ही यथा

अवसर सिद्ध करेंगे कि ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र जो वर्तमान में श्रीनगर कश्मीर में सिद्ध हुई है वह बिल्कुल उसी ढंग की क़ब्र है जैसी कि वह क़ब्र थी जिस में हज़रत मसीह बेहोशी की दशा में रखे गए।

अतएव यह आयत जिस को अभी हमने लिखा है इससे स्पष्ट होता है कि मसीह कब्र से निकलकर गलील की तरफ गया और मरक़स की इंजील में लिखा है कि वह क़ब्र से निकल कर गलील की सड़क पर जाता हुआ दिखाई दिया और अन्ततः उन ग्यारह हवारियों को मिला जब कि वे खाना खा रहे थे तथा अपने हाथ और पांव जो घायल थे दिखाए और उन्होंने सोचा कि शायद यह आत्मा है। तब उसने कहा कि मुझे छुओ और देखो क्योंकि आत्मा को शरीर और हड्डी नहीं जैसा कि मुझ में देखते हो तथा उन से एक भुनी हुई मछली का टुकड़ा और शहद का एक छत्ता लिया और उनके सामने खाया। देखो मरक़स अध्याय-16, अध्याय-14, और 'लूक़ा' अध्याय-24 तथा आयत, 39, 40, 41, 42। इन आयतों से निश्चय ही मालूम होता है कि मसीह आकाश पर कदापि नहीं गया अपितु क़ब्र से निकल कर जलील की ओर गया तथा साधारण शरीर और साधारण कपड़ों में मनुष्यों की तरह था। यदि वह मर कर जीवित होता तो क्योंकर संभव था कि जलाली (आध्यात्मिक) शरीर में सलीब के घाव शेष रह जाते तथा उसको रोटी खाने की क्या आवश्यकता थी और यदि थी तो फिर अब भी रोटी खाने का मुहताज होगा।

पाठकों को इस धोखे में नहीं पड़ना चाहिए कि यहूदियों की सलीब इस युग की फांसी की भांति होगी जिससे मुक्ति पाना लगभग

असंभव है, क्योंकि उस युग की सलीब में कोई रस्सा गले में नहीं डाला जाता था और न तख़्ते पर से गिरा कर लटकाया जाता था अपितु केवल सलीब पर खींच पर हाथों और पैरों में कील ठोंके जाते थे और यह बात संभव होती थी कि यदि सलीब पर खींचने और कील ठोंकने के पश्चात् एक दो दिन तक किसी के प्राण क्षमा करने का इरादा हो तो उतने ही अज़ाब को पर्याप्त समझ कर हड्डियां तोड़ने से पहले उसको जीवित उतार लिया जाए और यदि मारना ही उद्देश्य होता था तो कम से कम तीन दिन तक सलीब पर खींचा हुआ रहने देते थे तथा पानी और रोटी निकट नहीं आने देते थे तथा इसी प्रकार धूप में तीन दिन या इससे अधिक दिनों के लिए छोड़ देते थे, तत्पश्चात् उसकी हड्डियां तोड़ते थे और अन्ततः इन समस्त अज़ाबों के पश्चात् वह मर जाता था। परन्तु ख़ुदा तआला की कृपा एवं दया ने हज़रत मसीह[अ.] को इस स्तर के अज़ाब से बचा लिया, जिससे जीवन का अन्त हो जाता। इंजीलों को तनिक ध्यानपूर्वक पढ़ने से आपको मालूम होगा कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम न तीन दिन तक सलीब पर रहे और न तीन दिन की भूख और प्यास उठाई और न उनकी हड्डियां तोड़ी गईं अपितु लगभग दो घंटे तक सलीब पर रहे तथा ख़ुदा की कृपा एवं दया ने उनके लिए यह अवसर प्रदान कर दिया कि दिन के अन्तिम भाग में सलीब देने का प्रस्ताव हुआ और वह जुमअः (शुक्रवार) का दिन था और केवल थोड़ा सा दिन शेष था तथा अगले दिन सब्त (शनिवार) एवं यहूदियों की ईद फ़सह (एक त्योहार) थी तथा यहूदियों के लिए यह अवैध और दण्डनीय अपराध था कि किसी को सब्त या सब्त की रात्रि में सलीब पर रहने

दें और मुसलमानों की भांति यहूदी भी चन्द्र गणना करते थे और रात दिन पर प्राथमिक समझी जाती थी। अतः एक ओर तो यह अवसर था जो कि पार्थिव कारणों से पैदा हुआ, दूसरे आकाशीय कारण ख़ुदा तआला की ओर से यह पैदा हुए कि जब छठा घंटा हुआ तो एक ऐसी आंधी आई जिससे समस्त पृथ्वी पर अंधकार छा गया और वह अंधकार निरन्तर तीन घंटे रहा। (देखो मरकस अध्याय-15, आयत-33) यह छठा घंटा बारह बजे के बाद था अर्थात् वह समय जो शाम के निकट होता है। अब यहूदियों को इस घोर अंधकार में यह चिन्ता हुई कि कहीं सब्त की रात आ जाए और वह सब्त के अपराधी हो कर जुर्माना के पात्र ठहरें। इसलिए उन्होंने शीघ्रता से मसीह को तथा उसके साथ के दो चोरों को भी सलीब से उतार लिया। इसके साथ एक अन्य आकाशीय कारण यह उत्पन्न हुआ कि जब पिलातूस कचहरी के आसन पर बैठा था उसकी पत्नी ने उसे कहला भेजा कि तू इस सत्यनिष्ठ से कुछ काम न रख (अर्थात् उस के क़त्ल करने के लिए प्रयास न कर) क्योंकि मैंने आज रात स्वप्न में इसके कारण से बहुत कष्ट उठाया (देखो मती अध्याय-27, आयत-19) अतः यह फ़रिश्ता जो स्वप्न में पिलातूस की पत्नी को दिखाया गया। उस से हम तथा हर एक न्यायप्रिय निश्चित तौर पर यह समझेगा कि ख़ुदा का कदापि यह उद्देश्य न था कि मसीह सलीब पर मृत्यु पाए। जब से कि संसार की उत्पत्ति हुई आज तक यह कभी न हुआ कि जिस व्यक्ति को बचाने के लिए ख़ुदा तआला स्वप्न में किसी को प्रेरणा दे कि ऐसा करना चाहिए और वह बात न हो। उदाहरणतया इंजील मती में लिखा है कि ख़ुदावन्द के एक फ़रिश्ते ने यूसुफ़ को स्वप्न

में दिखाई देकर कहा — "उठ इस लड़के और इसकी मां को साथ लेकर मिस्र को भाग जा और वहां जब तक मैं तुझे ख़बर न दूं ठहरा रह क्योंकि हीरोदोस इस लड़के को ढूंढेगा कि मार डाले।" (देखो मती अध्याय-2, आयत-13) अब क्या यह कह सकते हैं कि यसू का मिस्र में पहुंचकर मारा जाना संभव था।

इसी प्रकार ख़ुदा तआला की ओर से यह एक उपाय था कि पिलातूस की पत्नी को मसीह के लिए स्वप्न आया तथा संभव न था कि यह उपाय ग़लत हो जाता तथा जिस प्रकार मिस्र के वृत्तान्त में मसीह के मारे जाने की शंका एक ऐसा विचार है जो ख़ुदा तआला के एक निर्धारित वादे के विपरीत है। इसी प्रकार यहां भी यह अनुमान के विपरीत बात है कि ख़ुदा तआला का फ़रिश्ता पिलातूस की पत्नी को दिखाई दे और वह इस निर्देश की ओर संकेत करे कि यदि मसीह सलीब पर मृत्यु पा गया तो यह तुम्हारे लिए अच्छा न होगा। अतः फिर इस उद्देश्य से फ़रिश्ते का प्रकट होना व्यर्थ जाए और मसीह सलीब पर मारा जाए, क्या इसका संसार में कोई उदाहरण है ? कदापि नहीं ! प्रत्येक नेक हृदय रखने वाले मनुष्य की पवित्र अन्तरात्मा जब पिलातूस की पत्नी के स्वप्न से सूचित होगी तो निस्सन्देह वह अपने अन्दर उस गवाही को महसूस करेगी कि वास्तव में इस स्वप्न का उद्देश्य यही था कि मसीह को छुड़ाने की एक नींव रखी जाए। यों तो संसार में प्रत्येक को अधिकार है कि अपनी आस्था के पूर्वाग्रह से एक खुली-खुली सच्चाई को अस्वीकार कर दे और स्वीकार न करे किन्तु इन्साफ़ की दृष्टि से मानना पड़ता है कि पिलातूस की पत्नी का स्वप्न मसीह के सलीब के बचने पर एक बड़ी भारी गवाही

है तथा सबसे प्रथम श्रेणी की इंजील अर्थात् मती ने इस गवाही का उल्लेख किया है। यद्यपि ऐसी गवाहियों से जो मैं बड़े ज़ोर से इस पुस्तक में लिखूंगा मसीह की ख़ुदाई और कफ़्फ़ारा की धारणा सर्वथा असत्य सिद्ध होती हैं परन्तु ईमानदारी तथा सत्यप्रियता की हमेशा यह मांग होनी चाहिए कि हम सच्चाई को स्वीकार करने में जाति और बिरादरी तथा रस्मी आस्थाओं की कुछ परवाह न करें। जब से मनुष्य पैदा हुआ है आज तक उसकी नासमझियों ने हज़ारों वस्तुओं को ख़ुदा बना डाला है यहां तक कि बिल्लियों और सांपों को भी पूजा गया है। परन्तु फिर भी बुद्धिमान लोग ख़ुदा के दिए हुए सामर्थ्य से इस प्रकार की अनेकेश्वरवादी आस्थाओं से मुक्ति पाते आए हैं।

इंजील से प्राप्त उन गवाहियों में से जो हमें मसीह इब्ने मरयम की सलीबी मृत्यु से सुरक्षित रहने के बारे में मिलती हैं उसकी वह यात्रा बहुत दूर की है जो क़ब्र से निकल कर जलील की ओर उसने की। अत: इतवार की सुबह को पहले वह मरयम मगदलीनी को मिला। मरयम ने तुरन्त हवारियों को सूचित किया कि मसीह तो जीवित है परन्तु वे विश्वास न लाए। अत: वह हवारियों में से दो को जबकि वे देहात की ओर जाते थे दिखाई दिया अन्तत: वह ग्यारह के ग्यारह हवारियों को जबकि वे भोजन करने बैठे थे दिखाइ्र दिया और उनकी बेईमानी और अनुदारता पर भर्त्सना की। (देखो इंजील मरक़स अध्याय-16 आयत 9 से 14 तक) और जब मसीह के हवारी यात्रा करते हुए उस बस्ती की ओर जा रहे थे जिसका नाम अमलूस है जो यरोशलम से पौने चार कोस की दूरी पर है तब मसीह उनको मिला और जब वे उस बस्ती के निकट पहुंचे तो मसीह ने आगे

बढ़कर चाहा कि उन से अलग हो जाए तब उन्होंने उसे जाने से रोक लिया कि आज रात हम इकट्ठे रहेंगे। उसने उनके साथ बैठ कर रोटी खाई और वे सब मसीह सहित अमलूस नामक गांव में रात को रहे। (देखो लूक़ा अध्याय-24, आयत 13 से 31 तक) अत: स्पष्ट है कि एक सूक्ष्म शरीर के साथ जो मृत्यु के पश्चात् विचार किया गया है मसीह से नश्वर शरीर की आदतें जारी होना, खाना पीना, सोना तथा जलील की ओर एक लम्बी यात्रा करना जो यरोशलम से लगभग सत्तर कोस की दूरी पर था सर्वथा असंभव एवं अनुचित बात है और इसके बावजूद कि विचारों के झुकाव के कारण इन्जीलों के इन क़िस्सों में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया है फिर भी जितने शब्द पाए जाते हैं उनसे स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि मसीह उसी नश्वर और साधारण शरीर के साथ अपने हवारियों से मिला तथा पैदल ही जलील की ओर एक लम्बी यात्रा की और हवारियों को अपने घाव दिखाए तथा रात को उनके साथ रोटी खाई और सोया। तथा आगे चलकर हम सिद्ध करेंगे कि उसने अपने घावों का एक मरहम के प्रयोग से उपचार किया।

अत: यह विचार करने का स्थान है कि क्या एक सूक्ष्म एवं अनश्वर शरीर पाने के पश्चात् अर्थात् उस अनश्वर शरीर के बाद जो इस योग्य था कि खाने-पीने से पवित्र होकर हमेशा ख़ुदा तआला के दाहिनी ओर बैठे तथा प्रत्येक दाग़, दर्द तथा हानि से पवित्र हो तथा अजर-अमर ख़ुदा के प्रताप का रंग अपने अन्दर रखता हो। अभी उस में यह दोष शेष रह गया कि उस पर सलीब और कीलों के ताज़ा घाव मौजूद थे जिनसे रक्त बहता था तथा पीड़ा और कष्ट उनके

साथ था जिनके लिए एक मरहम भी तैयार किया गया था तथा सूक्ष्म एवं अनश्वर शरीर के पश्चात् भी जो सदैव के लिए सुरक्षित, दोषरहित, पूर्ण तथा अपरिवर्तनीय चाहिए था, कई प्रकार की हानियों से भरा रहा और स्वयं मसीह ने हवारियों को अपना मांस और हड्डियां दिखाईं। फिर उसी पर बस नहीं अपितु उस नश्वर शरीर की आवश्यकताओं में से भूख और प्यास की पीड़ा भी मौजूद थी अन्यथा इस व्यर्थ हरकत की क्या आवश्यकता थी कि मसीह जलील की यात्रा में खाना खाता और पानी पीता, आराम करता तथा सोता। इसमें क्या सन्देह है कि इस संसार में नश्वर शरीर के लिए भूख-प्यास भी एक पीड़ा है जिसके सीमा से अधिक होने पर मनुष्य मर सकता है। अतः निस्सन्देह यह बात सच है कि मसीह सलीब पर नहीं मरा और न कोई नया सूक्ष्म शरीर पाया अपितु एक बेहोशी की अवस्था हो गई थी जो मृत्यु के समान थी तथा ख़ुदा की कृपा से यह संयोग हुआ कि जिस क़ब्र में वह रखा गया वह इस देश की क़ब्रों की भांति न थी अपितु एक हवादार कोठा था जिसमें एक खिड़की थी तथा उस युग में यहूदियों में यह रस्म थी कि क़ब्र को एक हवादार और विशाल कोठे के समान बनाते थे और उसमें एक खिड़की रखते थे। ऐसी क़ब्रें पहले से मौजूद रहती थीं फिर समय पर शव उसमें रखा जाता था। अतः यह साक्ष्य इंजीलों से स्पष्ट तौर पर मिलते हैं। लूक़ा की इंजील में यह इबारत है -

"और वे अर्थात् स्त्रियां इतवार के दिन बड़े सवेरे अर्थात् कुछ अंधेरे से ही उन सुगन्धों को जो तैयार की थीं लेकर क़ब्र पर आईं तथा उनके साथ कई अन्य स्त्रियां भी थीं, उन्होंने पत्थर को क़ब्र पर

से ढलका हुआ पाया (इस स्थान पर थोड़ा विचार करो) और अन्दर जाकर ख़ुदावन्द यसू की लाश न पाई।" (देखो लूक़ा अध्याय-24, आयत 2,3) अब अन्दर जाने के शब्द पर तनिक विचार करो। स्पष्ट है कि उसी क़ब्र के अन्दर मनुष्य जा सकता है कि जो एक कोठे की भांति हो और उसमें खिड़की हो और हम यथास्थान इस पुस्तक में वर्णन करेंगे कि वर्तमान में जो हज़रत ईसा[अ.] की क़ब्र श्रीनगर कश्मीर में पाई गई है वह भी उस क़ब्र की भांति खिड़कीदार है। यह एक बड़े रहस्य की बात है जिस पर ध्यान देने से अन्वेषकों के हृदय एक महान परिणाम तक पहुंच सकते हैं।

उन समस्त साक्ष्यों में से जो हमें इंजील से मिले हैं एक पिलातूस का वह कथन है जो मरक़स की इंजील में लिखा है और वह यह है - "और जब कि शाम हुई इसलिए कि तैयारी का दिन था जो सब्त से पहले होता यूसुफ़ अरमितिया जो प्रसिद्ध सलाहकार तथा वह स्वयं ख़ुदा की बादशाहत की प्रतीक्षा में था आया और दिलेरी से पिलातूस के पास जाकर यसू की लाश मांगी और पिलातूस ने चकित होकर सन्देह किया कि वह अर्थात् मसीह ऐसा शीघ्र मर गया।" (देखो मरक़स अध्याय-16, आयत 42 से 44 तक) इससे हम यह परिणाम निकालते हैं कि ठीक सलीब के क्षणों में ही यसू के मरने पर सन्देह हुआ और सन्देह भी ऐसे व्यक्ति ने किया जिसे इस बात का अनुभव था कि इतने समय में सलीब पर प्राण निकलते हैं।

और उन साक्ष्यों में से जो हमें इंजील से मिले हैं। इंजील की वह इबारत है जो निम्नलिखित है -

"फिर यहूदियों ने इस दृष्टि से कि लाशें सब्त के दिन सलीब

पर न रह जाएं क्योंकि वह दिन तैयारी का था अपितु बड़ा ही सब्त था। पिलातूस से कहा कि उनकी टांगें तोड़ी और लाशें उतारी जाएं। तब सिपाहियों ने आकर पहले और दूसरे की टांगें जो उसके साथ सलीब पर खींचे गए थे तोड़ीं, किन्तु जब उन्होंने यसू की ओर आकर देखा कि वह मर चुका है तो उसकी टांगें न तोड़ीं, परन्तु सिपाहियों में से एक ने भाले से उसकी पसली छेदी तो उसी समय उस से रक्त और पानी निकला।"

(देखो यूहन्ना अध्याय-19, आयत 31 से 34 तक)

इन आयतों से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि उस समय किसी सलीब पर चढ़ाए गए व्यक्ति के जीवन का अन्त करने के लिए यह नियम था कि जो सलीब पर खींचा गया हो उसको कई दिन सलीब पर रखते थे और फिर उसकी हड्डियां तोड़ते थे, परन्तु मसीह की हड्डियां जानबूझ कर नहीं तोड़ी गईं और वह अवश्य सलीब पर से उन दो चोरों की तरह जीवित उतारा गया। इसी कारण से पसली छेदने से रक्त भी निकला। मुर्दे का रक्त जम जाता है। यहां यह भी स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि आन्तरिक तौर पर यह कुछ षड्यंत्र की बात थी। पिलातूस एक ख़ुदा से डरने वाला तथा पवित्र हृदय व्यक्ति था। खुली-खुली नर्मी बरतने से क़ैसर से डरता था क्योंकि यहूदी मसीह को बाग़ी ठहराते थे परन्तु वह सौभाग्यशाली था कि उसने मसीह को देखा किन्तु क़ैसर ने उस ने'मत को न पाया। उसने न केवल देखा अपितु बहुत नर्मी बरती तथा वह यह कदापि न चाहता था कि मसीह सलीब पाए। अतः इंजीलों के देखने से स्पष्ट तौर पर पाया जाता है कि पिलातूस ने कई बार इरादा किया कि मसीह को

छोड़ दे परन्तु यहूदियों ने कहा कि यदि तू इस पुरुष को छोड़ देता है तो तू क़ैसर का शुभचिन्तक नहीं तथा यह कहा कि यह बाग़ी है तथा स्वयं बादशाह बनना चाहता है। (देखो यूहन्ना अध्याय-19, आयत 12) पिलातूस की पत्नी का स्वप्न इस बात का और भी प्रेरक हुआ था कि किसी प्रकार मसीह को सलीब पर मार देने से बचाया जाए अन्यथा उसका अपना विनाश है, किन्तु चूंकि यहूदी एक दुष्ट जाति थी तथा पिलातूस पर क़ैसर के दरबार में मुखबरी करने को भी तैयार थे इसलिए पिलातूस ने मसीह को छुड़ाने में कूटनीति से काम लिया। प्रथम तो मसीह को सलीब देना ऐसे दिन पर डाल दिया कि वह शुक्रवार (जुमअः) का दिन था तथा दिन के कुछ घंटे शेष रह गए थे और बड़े सब्त की रात निकट थी। पिलातूस भलीभांति जानता था कि यहूदी अपनी शरीअत के आदेशों के अनुसार केवल शाम तक ही मसीह को सलीब पर रख सकते हैं और फिर शाम होते ही उन का सब्त है जिसमें सलीब पर रखना उचित नहीं। अतः ऐसा ही हुआ और मसीह शाम से पहले सलीब पर से उतारा गया और यह बात अनुमान के निकट नहीं कि दोनों चोर जो मसीह के साथ सलीब पर खींचे गए थे वे जीवित रहे परन्तु मसीह केवल दो घंटे तक मर गया अपितु यह केवल एक बहाना था जो मसीह को हड्डियां तोड़ने से बचाने के लिए बनाया गया था। एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए यह एक बड़ा तर्क है कि दोनों चोर सलीब पर से जीवित उतारे गए और सदा से यह नियम था कि सलीब पर से लोग जीवित उतारे जाते थे और केवल इस अवस्था में मरते थे कि हड्डियां तोड़ी जाएं या भूख और प्यास की अवस्था में कुछ दिन सलीब पर रह कर जान

निकलती थी, परन्तु इन बातों में से कोई बात भी मसीह के साथ नहीं घटी। न वह कई दिन तक सलीब पर भूखा-प्यासा रखा गया और न उसकी हड्डियां तोड़ी गईं तथा यह कह कर कि मसीह मर चुका है यहूदियों को उसकी ओर से लापरवाह कर दिया गया, परन्तु चोरों की हड्डियां तोड़कर उसी समय उनके जीवन का अन्त कर दिया गया। बात तो तब थी कि उन दोनों चोरों में से भी किसी के बारे में कहा जाता कि यह मर चुका है, इसकी हड्डियां तोड़ने की आवश्यकता नहीं। यूसुफ़ नाम का व्यक्ति पिलातूस का एक सम्माननीय मित्र था जो उस क्षेत्र का रईस था तथा मसीह के गुप्त शिष्यों में से था वह यथासमय पहुंच गया। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह भी पिलातूस के संकेत से बुलाया गया था मसीह को एक लाश बताकर उसके सुपुर्द कर दिया गया, क्योंकि वह एक बड़ा व्यक्ति था और यहूदी उसके साथ झगड़ा नहीं कर सकते थे। जब वह पहुंचा तो मसीह को जो बेहोशी में था एक लाश ठहरा कर उसने लिया। उसी स्थान पर एक विशाल मकान था जो उस युग की रस्म पर क़ब्र के तौर पर बनाया गया था और उसमें एक खिड़की भी थी तथा ऐसे स्थान पर था जो यहूदियों के संपर्क से पृथक था। उसी स्थान पर पिलातूस के संकेत से मसीह को रखा गया। यह घटना उस समय घटित हुई जबकि हज़रत मूसा के निधन पर चौदहवीं सदी गुज़र रही थी तथा इस्राईली शरीअत को जीवित करने के लिए मसीह चौदहवीं सदी का मुजद्दिद (धर्मोद्धारक) था। यद्यपि यहूदियों को इस चौदहवीं सदी में मसीह मौऊद की प्रतीक्षा भी थी और पहले नबियों की भविष्यवाणियां भी उस समय पर गवाही देती थीं, किन्तु खेद कि यहूदियों के मूर्ख

मौलवियों ने उस समय और मौसम को नहीं पहचाना और मसीह मौऊद को झूठा ठहरा दिया। न केवल यही अपितु उसको काफ़िर ठहरा दिया, उसका नाम नास्तिक रखा और अन्ततः उस के क़त्ल पर फ़त्वा लिखा और उसको अदालत में खींचा। इस से यह समझ आता है कि ख़ुदा ने चौदहवीं सदी में कुछ प्रभाव ही ऐसा रखा है जिसमें जाति के हृदय कठोर तथा मौलवी संसार के पुजारी, अंधे तथा सच्चाई के शत्रु हो जाते हैं। यहां यदि मूसा की चौदहवीं सदी और मूसा के मसील (समरूप) की चौदहवीं सदी का जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं परस्पर तुलना की जाए तो प्रथम यह दिखाई देगा कि इन दोनों चौदहवीं सदियों में दो ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने मसीह मौऊद होने का दावा किया और वह दावा सच्चा था तथा ख़ुदा की ओर से था। फिर इसके साथ यह भी ज्ञात होगा कि जाति के उलेमा ने उन दोनों को काफ़िर ठहराया और उन दोनों का नाम नास्तिक और दज्जाल रखा और उन दोनों के बारे में क़त्ल के फ़त्वे लिखे गए तथा दोनों को अदालतों की ओर खींचा गया, जिनमें से एक रोम की अदालत थी और दूसरी अंग्रेज़ी। अन्ततः दोनों बचाए गए तथा दोनों प्रकार के मौलवी यहूदी और मुसलमान असफल रहे तथा ख़ुदा तआला ने इरादा किया कि दोनों मसीहियों को एक बड़ी जमाअत बना दे तथा दोनों प्रकार के शत्रुओं को असफल रखे। अतः मूसा की चौदहवीं सदी और हमारे सैयद व मौला नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चौदहवीं सदी अपने-अपने मसीहियों के लिए कठोर भी है और अन्ततः मुबारक भी।

तथा उन साक्ष्यों में से जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के सलीब

से सुरक्षित रहने के बारे में हमें इंजील से मिलते हैं वह साक्ष्य हैं जो इंजील मती अध्याय-26, आयत 36 से 46 तक लिखित हैं। जिसमें वर्णन किया गया है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम गिरफ़्तार किए जाने का इल्हाम पाकर पूरी रात ख़ुदा के दरबार में रो-रो कर सज्दे करते हुए दुआ करते रहे। अवश्य था कि ऐसी विनयपूर्ण दुआ जिसके लिए मसीह को बहुत लम्बा समय दिया गया था स्वीकार की जाती क्योंकि ख़ुदा के प्रिय भक्त की याचना जो व्याकुलता के समय हो कदापि अस्वीकार नहीं होती, फिर क्यों मसीह की सारी रात की दुआ और दर्द भरे दिल की दुआ तथा पीड़ित अवस्था की दुआ अस्वीकार हो गई। हालांकि मसीह दावा करता है कि बाप जो आकाश पर है मेरी सुनता है। अत: क्योंकर मान लिया जाए कि ख़ुदा उसकी सुनता था, जबकि ऐसी बेचैनी की दुआ सुनी न गई। इंजील से यह भी मालूम होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को हार्दिक विश्वास था कि उसकी वह दुआ अवश्य स्वीकार हो गई तथा उस दुआ पर उसको बहुत भरोसा था। इसी कारण जब वह पकड़ा गया और सलीब पर खींचा गया और प्रत्यक्ष लक्षणों को उसने अपनी आशा के अनुकूल न पाया तो सहसा उसके मुख से निकला **"ईली ईली लिमा सबक्तानी"** हे मेरे ख़ुदा ! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया अर्थात् मुझे यह आशा कदापि नहीं थी कि मेरा अंजाम यह होगा और मैं सलीब पर मरूंगा तथा मैं विश्वास रखता था कि तू मेरी दुआ सुनेगा। अत: इन्जील के इन दोनों स्थानों से बिल्कुल स्पष्ट है कि मसीह को स्वयं हार्दिक विश्वास था कि मेरी दुआ अवश्य स्वीकार होगी तथा मेरा रात भर रो रो कर दुआ करना व्यर्थ नहीं जाएगा और स्वयं उसने

ख़ुदा तआला की ओर से अपने शिष्यों को यह शिक्षा दी थी कि यदि दुआ करोगे तो स्वीकार की जाएगी अपितु एक उदाहरण के तौर पर एक क़ाज़ी (न्यायाधीश) की कहानी भी वर्णन की थी कि जो न प्रजा से न ख़ुदा से डरता था और उस कहानी से भी उद्‌देश्य यह था ताकि हवारियों को विश्वास हो जाए कि निस्सन्देह ख़ुदा तआला दुआ सुनता है और यद्यपि मसीह को स्वयं पर एक बड़ा संकट आने का ख़ुदा तआला की ओर से ज्ञान था, किन्तु मसीह ने आरिफ़ों (अध्यात्म ज्ञानियों) की भांति इस आधार पर दुआ की कि ख़ुदा तआला के आगे कोई बात अनहोनी नहीं और प्रत्येक मिटाना और स्थापित करना उसके अधिकार में है। इसलिए यह घटना कि नऊज़ुबिल्लाह (अल्लाह बचाये) स्वयं मसीह की दुआ स्वीकार न हुई। यह एक ऐसी बात है जो शिष्यों पर अत्यन्त बुरा प्रभाव पैदा करने वाली थी। अतः क्योंकर संभव था कि ऐसा नमूना जो ईमान को नष्ट करने वाला था हवारियों को दिया जाता जबकि उन्होंने अपनी आंखों से देखा था कि मसीह जैसे महान नबी की पूरी रात की दर्दभरी दुआ स्वीकार न हो सकी। अतः इस बुरे नमूने से उनका ईमान एक कठिन परीक्षा में पड़ता था। अतः ख़ुदा तआला की दया की मांग यही थी कि उस दुआ को स्वीकार करता। निश्चित समझो कि वह दुआ जो गत्समीनी नामक स्थान में की गई थी अवश्य स्वीकार हो गई थी।

एक अन्य बात भी यहां स्मरण रखने योग्य है कि जैसा कि मसीह के क़त्ल के लिए परामर्श हुआ था तथा इस उद्‌देश्य के लिए जाति के महान लोग तथा आदरणीय मौलवी क़याफ़ा नामक सरदार ज्योतिषी के घर में एकत्र हुए थे कि किसी प्रकार मसीह को क़त्ल कर दें।

यही परामर्श मूसा के क़त्ल करने के लिए हुआ था और यही परामर्श हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़त्ल करने के लिए मक्का में दारुन्नदवह के स्थान में हुआ था, परन्तु सामर्थ्यवान ख़ुदा ने इन दोनों महान नबियों को इस परामर्श के दुष्प्रभाव से बचा लिया तथा मसीह के लिए जो मशवरा हुआ उन दोनों मशवरों के मध्य में है। फिर क्या कारण कि वह बचाया न गया, हालांकि उसने इन दोनों महान नबियों से बहुत अधिक दुआ की और फिर जबकि ख़ुदा अपने प्रिय बन्दों की अवश्य सुनता है तथा दुष्टों के मशवरे को असत्य करके दिखाता है तो फिर क्या कारण है कि मसीह की दुआ नहीं सुनी गई। प्रत्येक सत्यनिष्ठ का अनुभव है कि बेचैनी और पीड़ित होने की अवस्था की दुआ स्वीकार होती है अपितु सच्चे के लिए संकट का समय निशान प्रकट करने का समय होता है। मैं स्वयं इस में अनुभव रखता हूं। मुझे याद है कि दो वर्ष का समय हुआ है कि मुझ पर एक झूठा मुक़द्दमा क़त्ल करने के लिए अग्रसर होने का एक सज्जन डाक्टर मार्टिन क्लार्क ईसाई निवासी अमृतसर पंजाब ने गुरदासपुर की अदालत में दायर किया और यह दावा प्रस्तुत किया कि जैसे मैंने एक अब्दुल हमीद नामक व्यक्ति को भेजकर उपरोक्त डाक्टर को क़त्ल करना चाहा था। संयोग ऐसा हुआ कि इस मुक़द्दमा में तीनों जातियों के कुछ षडयंत्र करने वाले लोग अर्थात् ईसाई, हिन्दू तथा मुसलमान मेरे विरुद्ध सहमत हो गए और उन से जहां तक हो सकता था यह प्रयत्न किया कि मुझ पर क़त्ल करने के लिए अग्रसर होने का आरोप सिद्ध हो जाए। ईसाई पादरी मुझ से इस कारण से नाराज़ थे कि मैं इस प्रयास में था और अब भी हूं कि मसीह के

बारे में उनका जो ग़लत विचार है उस से ख़ुदा के बन्दों को मुक्ति दूं तथा यह प्रथम नमूना था जो मैंने उन लोगों का देखा। हिन्दू मुझ से इस कारण नाराज़ थे कि मैंने उनके एक लेखराम नामक पंडित के सम्बन्ध में उसकी सहमति से उसकी मृत्यु के बारे में ख़ुदा से इल्हाम पाकर भविष्यवाणी की थी और वह भविष्यवाणी अपनी निर्धारित अवधि में अपने समय पर पूरी हो गई। वह ख़ुदा का एक भयावह निशान था इसी प्रकार मुसलमान मौलवी भी नाराज़ थे क्योंकि मैं उनके ख़ूनी महदी और ख़ूनी मसीह के आने से तथा उनके जिहाद की धारणा का विरोधी था। इसलिए इन तीन जातियों के कुछ प्रतिष्ठित लोगों ने यह मशवरा किया कि मुझ पर किसी प्रकार क़त्ल का आरोप लग जाए और मैं मारा जाऊं या क़ैद किया जाऊं। इन विचारों में वे ख़ुदा तआला की दृष्टि में अत्याचारी थे। ख़ुदा ने मुझे उस समय से पूर्व कि ऐसे षड्यन्त्र गुप्त तौर पर किए जाएं सूचना दे दी और अन्ततः मुझे बरी करने का शुभ सन्देश सुनाया। ख़ुदा तआला के ये पवित्र इल्हाम सैकड़ों लोगों में समय से पूर्व प्रसिद्ध हो गए और जबकि मैंने इल्हाम की सूचना पाकर दुआ की कि हे मेरे मौला ! इस विपत्ति को मुझ से दूर कर। तब मुझे इल्हाम हुआ कि मैं रद्द करूंगा और तुझे इस मुक़द्दमा से बरी कर दूंगा। वह इल्हाम बहुत से लोगों को सुनाया गया जो तीन सौ से भी अधिक थे जो अब तक जीवित मौजूद हैं तथा ऐसा हुआ कि मेरे शत्रुओं ने झूठे गवाह बनाकर तथा अदालत में घसीट कर इस मुक़द्दमे को सबूत तक पहुंचा दिया और तीन जातियों के लोगों ने जिनकी चर्चा हो चुकी है मेरे विरुद्ध गवाही दी। अतः ऐसा हुआ कि जिस न्यायाधीश के पास वह मुक़द्दमा

था जिसका नाम कप्तान डब्ल्यू डगलस था जो ज़िला गुरदासपुर का डिप्टी कमिश्नर था। ख़ुदा ने भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों से उस मुक़द्दमा की सम्पूर्ण वास्तविकता उस पर खोल दी तथा उस पर स्पष्ट हो गया कि वह मुक़द्दमा झूठा है। तब उसकी न्यायप्रियता और न्यायनिष्ठा ने चाहा कि उस डाक्टर की जो पादरी का काम भी करता था कुछ भी परवाह न करके इस मुक़द्दमा को ख़ारिज कर दिया और जैसा कि मैंने ख़ुदा से इल्हाम पाकर वर्तमान भयानक परिस्थितियों के विपरीत सार्वजनिक जलसों में तथा सैकड़ों लोगों में अपना अंजाम बरी होना बताया था वैसा ही प्रकट हुआ और बहुत से लोगों की ईमान की दृढ़ता का कारण हुआ तथा न केवल यही अपितु और भी इसी प्रकार के कई आरोप और अपराध सम्बन्धी आरोप मुझ पर कथित कारणों से लगाए गए तथा अदालत तक मुक़द्दमे पहुंचाए गए, किन्तु ख़ुदा ने मुझे इस से पूर्व कि मुझे अदालत में बुलाया जाता अपने इल्हाम द्वारा प्रारंभ और अन्त की सूचना दे दी तथा प्रत्येक भयानक मुक़द्दमे में मुझे बरी होने की ख़ुशख़बरी दी।

इस वर्णन का उद्देश्य यह है कि ख़ुदा तआला निस्सन्देह दुआओं को सुनता है, विशेषतः जबकि उस पर भरोसा करने वाले पीड़ित होने की अवस्था में उसकी चौखट पर गिरते हैं तो वह उन की फ़रियाद को पहुंचता है और अद्भुत तौर पर उनकी सहायता करता है और हम इस बात के गवाह हैं तो फिर क्या कारण कि मसीह की ऐसी व्याकुलता की दुआ स्वीकार न हुई ? नहीं अपितु स्वीकार हुई और ख़ुदा ने उसको बचा लिया। ख़ुदा ने उसको बचाने के लिए पृथ्वी से

भी साधन पैदा किए और आकाश से भी। यूहन्ना अर्थात् यह्या नबी को ख़ुदा ने दुआ करने के लिए छूट न दी क्योंकि उसका समय आ चुका था, परन्तु मसीह को दुआ करने के लिए सम्पूर्ण रात छूट दी गई और वह सारी रात सज्दे में तथा खड़े होकर दुआ करने में व्यस्त रहा, क्योंकि ख़ुदा ने चाहा कि वह व्याकुलता प्रकट करे तथा उसी ख़ुदा से जिस के आगे कोई बात अनहोनी नहीं अपना छुटकारा चाहे। अतः ख़ुदा ने अपने अनादि नियम के अनुसार उसकी दुआ को सुना। यहूदी इस बात में झूठे थे, जिन्होंने सलीब देकर यह व्यंग किया कि उस ने ख़ुदा पर भरोसा किया था, क्यों उसे ख़ुदा ने न छुड़ाया, क्योंकि ख़ुदा ने यहूदियों की समस्त योजनाएं झूठी सिद्ध कीं और अपने प्रिय मसीह को सलीब और उसकी ला'नत से बचा लिया और यहूदी असफल रहे।

समस्त इंजीली साक्ष्यों में से जो हमें मिली हैं इंजील मती की वह आयत है जिसे मैं नीचे लिखता हूं —

"हाबिल सत्यनिष्ठ के ख़ून से बराख़ियाह के बेटे ज़करिया के ख़ून तक जिसे तुमने हैकल और क़ुर्बान स्थल के मध्य क़त्ल किया। मैं तुम से सच कहता हूं कि यह सब कुछ उस युग के लोगों पर आएगा।"

(देखो मती अध्याय-23, आयत, 35-36)

अब इन आयतों को ध्यानपूर्वक देखो तो स्पष्ट होगा कि इनमें हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट तौर पर कह दिया है कि यहूदियों ने जितने नबियों के क़त्ल किए उनका क्रम ज़करिया नबी तक समाप्त हो गया। तत्पश्चात् यहूदी लोग किसी नबी का क़त्ल करने के लिए सामर्थ्य नहीं पाएंगे। यह एक बड़ी भविष्यवाणी है और

इससे नितान्त स्पष्टता के साथ परिणाम निकलता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब के द्वारा क़त्ल नहीं हुए अपितु सलीब से बच कर निकल गए और अन्ततः स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त हुए। क्योंकि यदि यह बात ठीक होती कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम भी ज़करिया नबी की भांति यहूदियों के हाथ से क़त्ल होने वाले थे तो इन आयतों में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अवश्य अपने क़त्ल किए जाने की ओर भी संकेत करते और यदि यह कहो कि यद्यपि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम भी यहूदियों के हाथ से मारे गए, परन्तु उन का मारा जाना यहूदियों के लिए कोई पाप की बात नहीं थी, क्योंकि वह बतौर कफ़्फ़ारः के मारे गए तो यह विचार उचित नहीं है कयोंकि यूहन्ना अध्याय-19, आयत-11 में मसीह ने सपष्ट तौर पर कह दिया है कि यहूदी मसीह को क़त्ल करने के इरादे से महापापी हैं और ऐसा ही अन्य कई स्थानों में इसी बात की ओर संकेत है तथा स्पष्ट लिखा है कि इस अपराध के बदले में जो मसीह के बारे में उन से प्रकट हुआ ख़ुदा तआला के निकट दण्डनीय ठहर गए थे। (देखो मती इंजील-अध्याय-26 आयत- 24)

उन इंजीली साक्ष्यों में से जो हमें मिले हैं इंजील मती की वह इबारत है जो निम्नलिखित है —

"मैं तुम से सच कहता हूं कि उनमें से जो यहां खड़े हैं कुछ हैं कि जब तक इब्ने आदम को अपनी बादशाहत में आते देख न लें मौत का स्वाद न चखेंगे।"

(देखो मती अध्याय-16, आयत-28)

इसी प्रकार इंजील यूहन्ना की यह इबारत है —

"यसू ने उसे कहा कि यदि मैं चाहूं कि जब तक मैं आऊं वह (अर्थात् यूहन्ना हवारी) यहीं ठहरें अर्थात् यरोशलम में।

(देखो यूहन्ना अध्याय-21, आयत-22)

अर्थात् यदि मैं चाहूं तो यूहन्ना न मरे जब तक मैं दोबारा आऊं।

इन आयतों से पूर्ण शुद्धता के साथ सिद्ध होता है कि मसीह अलैहिस्सलाम ने वादा किया था कि कुछ लोग उस समय तक जीवित रहेंगे जब तक कि वह फिर वापस हो और उन जीवित रहने वालों में से यूहन्ना को भी ठहराया था। अतः अवश्य था कि वह वादा पूरा होता। अतएव ईसाइयों ने भी इस बात को स्वीकार कर लिया है कि यसू का उस युग में जबकि कुछ उस युग वाले जीवित हों भविष्यवाणी के पूरा करने के लिए आना नितान्त आवश्यक था ताकि वादे के अनुसार भविष्यवाणी प्रकट हो। इसी आधार पर पादरी लोगों को इस बात का इक़रार है कि मसीह अपने वादे के अनुसार यरोशलम की बरबादी के समय आया था और यूहन्ना ने उसे देखा क्योंकि वह उस समय तक जीवित था, परन्तु स्मरण रहे कि ईसाई इस बात को नहीं मानते कि मसीह उस समय वास्तविक तौर पर अपने बताए हुए निशानों के अनुसार आकाश से उतरा था अपितु वे कहते हैं कि एक कश्फ़ी रूप में यूहन्ना को दिखाई दे गया ताकि अपनी उस भविष्यवाणी को पूरा करे जो मती अध्याय-16, आयत-38 में है परन्तु मैं कहता हूं कि इस प्रकार के आने से भविष्यवाणी पूरी नहीं हो सकती यह तो नितान्त कमज़ोर व्याख्या है। जैसे आलोचनाओं से नितान्त बनावट के साथ पीछा छुड़ाना है और यह अर्थ इतने ग़लत और नितान्त स्पष्ट तौर पर असत्य हैं कि इसके रद्द करने की भी

आवश्यकता नहीं क्योंकि यदि मसीह ने स्वप्न या कश्फ़ के द्वारा किसी पर प्रकट होना था तो फिर ऐसी भविष्यवाणी मानो एक उपहास की बात है।* इसी प्रकार इससे एक अवधि पूर्व हज़रत मसीह पोलूस पर भी प्रकट हो चुके थे। मालूम होता है कि यह भविष्यवाणी जो मती बाब-16, आयत-28 में है उसने पादरियों को बड़ी घबराहट में डाल रखा है और वे अपनी आस्थानुसार इसके कोई उचित अर्थ नहीं कर सके, क्योंकि उनके लिए यह कहना कठिन था कि मसीह यरोशलम की बरबादी के समय अपने प्रताप के साथ आकाश से उतरा था और जिस प्रकार आकाश पर चारों ओर चमकने वाली बिजली सब को दिखाई दे जाती है सब ने उसे देखा था और इंजील के इस वाक्य को भी अनदेखा करना उनके लिए सरल न था कि उनमें से जो यहां खड़े हैं कुछ हैं कि जब तक इब्ने आदम को अपनी बादशाहत में आते देख न लें मौत का स्वाद न चखेंगे। इसलिए नितान्त बनावट के साथ इस भविष्यवाणी को कश्फ़ी रूप में माना गया परन्तु यह सही नहीं है। कश्फ़ी तौर पर तो ख़ुदा के चुने हुए

* मैंने कुछ पुस्तकों में देखा है कि इस युग के मौलवी ईसाइयों से भी अधिक मती अध्याय-26 आयत 24 के बनावट से भरे अर्थ करते हैं। वे कहते हैं कि जबकि मसीह ने अपने आने के लिए यह शर्त लगा दी थी कि कुछ लोग उस युग के अभी जीवित होंगे और एक हवारी भी जीवित होगा जब मसीह आएगा। तो इस स्थिति में आवश्यक है कि वह हवारी अब तक जीवित हो, क्योंकि मसीह अब तक नहीं आया और वे विचार करते हैं कि वह हवारी किसी पर्वत में गुप्त तौर पर मसीह की प्रतीक्षा में छिप कर बैठा हुआ है। इसी से।

बन्दे हमेशा विशेष लोगों को दिखाई दे जाया करते हैं और कश्फ़ी तौर पर स्वप्न की भी शर्त नहीं अपितु जागने की अवस्था में ही दिखाई दे जाते हैं। अत: मैं स्वयं इसमें अनुभव रखता हूं। मैंने कई बार कश्फ़ी तौर पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को देखा है तथा मैंने कुछ नबियों से भी बिल्कुल जागने की अवस्था में भेंट की है तथा मैंने अपने सैयद व मौला और अपने इमाम नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी कई बार बिल्कुल जागते हुए देखा है और बातें की हैं और इतनी स्पष्ट जागने की अवस्था में देखा है जिसके साथ स्वप्न या नींद का नामो निशान न था। मैंने कुछ अन्य मृत्युप्राप्त लोगों से भी उनकी क़ब्र पर या अन्य अवसर पर बिल्कुल जागने की अवस्था में भेंट की है तथा उन से बातें की हैं। मैं भली भांति जानता हूं कि इस तौर पर बिल्कुल जागते हुए पहले लोगों से भेंट हो जाती है और न केवल भेंट अपितु वार्तालाप होता है और हाथ भी मिलाया जाता है तथा इस जागने और प्रतिदिन के जागने की दशा में ज्ञानेन्द्रियों की आवश्यकताओं में कुछ भी अन्तर नहीं होता। देखा जाता है कि हम इसी संसार में हैं और यही कान हैं और यही आंखें हैं और यही जीभ है, परन्तु ध्यान देने से मालूम होता है कि वह संसार और है। दुनिया इस प्रकार की जागरूकता को नहीं जानती, क्योंकि दुनिया लापरवाही के जीवन में पड़ी है। यह जागरूकता आकाश से मिलती है यह उनको दी जाती है जिनको नई ज्ञानेन्द्रियां मिलती हैं। यह एक सही बात है और सच्ची घटनाओं में से है। अत: यदि मसीह इसी प्रकार यरोशलम की बरबादी के समय यूहन्ना को दिखाई दिया था। अत: यद्यपि वह जागने की अवस्था में दिखाई दिया

और यद्यपि उस से बातें भी की हों, हाथ भी मिलाया हो तथापि वह घटना इस भविष्यवाणी से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखती अपितु ये वे बातें हैं जो हमेशा संसार में प्रकट होती रहती हैं और अब भी यदि हम ध्यान दें तो ख़ुदा की कृपा से मसीह को या अन्य किसी पवित्र नबी को बिल्कुल जागते हुए देख सकते हैं, परन्तु ऐसी मुलाकात से मती अध्याय-16 आयत-28 की भविष्यवाणी कदापि पूरी नहीं हो सकती।

अतः वास्तविकता यह है कि चूंकि मसीह जानता था कि मैं सलीब से बच कर दूसरे देश में चला जाउंगा तथा ख़ुदा न मुझे मारेगा और न संसार से उठाएगा जब तक कि मैं यहूदियों की बरबादी अपनी आंखों से न देख लूं तथा जब तक कि वह बादशाहत जो ख़ुदा के चुने हुए पुरुषों के लिए आकाश में निर्धारित होती है अपने परिणाम न दिखाए मैं कदापि मृत्यु नहीं पाऊंगा। इसलिए मसीह ने यह भविष्यवाणी की ताकि अपने शिष्यों को सन्तोष दे कि शीघ्र ही तुम मेरा यह निशान देखोगे कि जिन्होंने मुझ पर तलवार उठाई वे मेरे जीवन और मेरे सामने तलवारों से ही क़त्ल किए जांएगे। अतः यदि प्रमाण कुछ वस्तु है तो इससे बढ़कर ईसाइयों के लिए अन्य कोई प्रमाण नहीं कि मसीह अपने मुंह से भविष्यवाणी करता है कि अभी तुम में से कुछ जीवित होंगे कि मैं फिर आऊंगा।

स्मरण रहे कि इंजीलों में दो प्रकर की भविष्यवाणियां हैं जो हज़रत मसीह के आने के बारे में हैं।

(1) एक वह जो अन्तिम युग में आने का वादा है वह वादा आध्यात्मिक (रूहानी) तौर पर है और वह आना उसी प्रकार का

आना है जैसा कि एलिया नबी मसीह के समय दोबारा आया था। अत:वह हमारे इस युग में एलिया की भांति आ चुका और वह यही लेखक है जो मानव-जाति का सेवक है जो मसीह मौऊद हो कर मसीह अलैहिस्सलाम के नाम पर आया। मसीह ने मेरे बारे में इंजील में ख़बर दी है। अतः मुबारक वह जो मसीह के सम्मान के लिए मेरे बारे में ईमानदारी तथा न्याय से विचार करे और ठोकर न खाए। (2) दूसरे प्रकार की भविष्यवाणियां जो मसीह के दोबारा आने के सम्बन्ध में इंजीलों में पाई जाती हैं, वे वास्तव में मसीह के उस जीवन के प्रमाण के लिए वर्णन की गई हैं जो सलीब के पश्चात् ख़ुदा तआला की कृपा से स्थापित और यथावत रही तथा ख़ुदा ने सलीबी मृत्यु से अपने चुने हुए को बचा लिया जैसा कि यह भविष्यवाणी जो अभी वर्णन की गई। ईसाइयों की यह ग़लती है कि इन दोनों स्थानों को एक दूसरे के साथ मिला देते हैं। इसी कारण बड़ी घबराहट तथा भिन्न- भिन्न प्रकार के संकट उनके सामने आते हैं। अतः मसीह के सलीब से बच जाने के लिए यह आयत जो मती बाब-16 में पाई जाती है बहुत बड़ा प्रमाण है।

इंजील के साक्ष्यों में से जो हमें मिले हैं- इंजील मती की निम्नलिखित आयत है-

"और उस समय मनुष्य के बेटे का निशान आकाश पर प्रकट होगा तथा उस समय पृथ्वी की समस्त जातियां छाती पीटेंगी और मनुष्य के बेटे को बड़ी शक्ति एवं प्रताप के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।" (देखो मती अध्याय-24, आयत-30) इस आयत का वास्तविक अर्थ यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कहते हैं

कि एक युग ऐसा आने वाला है जबकि आकाश से अर्थात् मात्र ख़ुदा की क़ुदरत से ऐसी विद्याएं, तर्क तथा साक्ष्य पैदा हो जाएंगे कि जो आप की ख़ुदाई या सलीब पर मृत्यु होने तथा आकाश पर जाने और दोबारा आने की आस्था का असत्य होना सिद्ध कर देंगे तथा जो जातियां आप के सच्चे नबी होने की इनकारी थीं अपितु सलीब दिए जाने के कारण उनको लानती समझती थीं जैसा कि यहूदी, उनके झूठ पर भी आकाश गवाही देगा, क्योंकि यह वास्तविकता भली भांति स्पष्ट हो जाएगी कि वह सलीब पर नहीं मरे, इसलिए लानती भी नहीं हुए। तब पृथ्वी की समस्त जातियां जिन्होंने उनके पक्ष में कमी या अधिकता की थी मातम करेंगी तथा अपनी ग़लती के कारण अत्यन्त लज्जित और शर्मिन्दा होंगी। तथा उसी युग में जबकि यह सच्चाई खुल जाएगी, लोग आध्यात्मिक तौर पर मसीह को पृथ्वी पर उतरते देखेंगे अर्थात् उन्हीं दिनों में मसीह मौऊद जो उनकी शक्ति और स्वभाव में हो कर आएगा आकाशीय समर्थन से तथा उस क़ुदरत और प्रताप से जो ख़ुदा तआला की ओर से उसके साथ होगा अपने चमकते हुए प्रमाण के साथ प्रकट होगा तथा पहचाना जाएगा। इस आयत की व्याख्या यह है कि ख़ुदा तआला के प्रारब्ध (क़ज़ा व क़द्र) से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ऐसा अस्तित्व है तथा ऐसी घटनाएं हैं जो कुछ जातियों ने उन के सम्बन्ध में अधिकता की हैं तथा कुछ ने कमी का मार्ग अपनाया है अर्थात् एक वह जाति है जो मानवीय आवश्यकताओं से उनको बहुत दूर ले गई है यहां तक कि वे कहते हैं कि अब तक मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए तथा आकाश पर जीवित बैठे हैं और उनसे बढ़कर वे लोग हैं जो कहते हैं कि सलीब

पर मृत्यु पाकर और फिर दोबारा जीवित होकर आकाश पर चले गए हैं तथा ख़ुदाई के सम्पूर्ण अधिकार उन्हें प्राप्त हो गए हैं अपितु वह स्वयं ख़ुदा हैं और दूसरी जाति यहूदी हैं वे कहते हैं कि वह सलीब पर मारे गए। इसलिए नऊज़ुबिल्लाह वह हमेशा के लिए ला'नती हुए और सदैव के लिए प्रकोप के पात्र और ख़ुदा उनसे अप्रसन्न है तथा उनको अप्रसन्नता और शत्रुता की दृष्टि से देखता है तथा वह झूठे, झूठ घड़ने वाले और नऊज़ुबिल्लाह काफ़िर तथा नास्तिक हैं, ख़ुदा की ओर से नहीं हैं। अतः यह न्यूनाधिकता ऐसा अन्यायपूर्ण कृत्य था कि अवश्य था कि ख़ुदा तआला अपने सच्चे नबी को इन आरोपों से बरी करता। अतः इंजील की उपरोक्त आयत का इसी बात की ओर संकेत है तथा यह जो कहा कि पृथ्वी की समस्त जातियां छाती पीटेंगी यह इस बात की ओर संकेत किया गया है कि वे समस्त फ़िर्क़े जिन पर क़ौम का शब्द चरितार्थ हो सकता है उस दिन छाती पीटेंगी और रोना-पीटना करेंगी तथा उनका मातम बहुत अधिक होगा। यहां ईसाइयों को इस आयत को बड़े ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए तथा विचार करना चाहिए कि जबकि इस आयत में समस्त जातियों के छाती पीटने के बारे में भविष्यवाणी की गई है तो ऐसी अवस्था में ईसाई इस मातम से बाहर क्योंकर रह सकते हैं। क्या वे क़ौम नहीं हैं और जबकि वे भी इस आयत की दृष्टि से छाती पीटने वालों में सम्मिलित हैं तो वे क्यों अपने मोक्ष की चिन्ता नहीं करते। इस आयत में स्पष्ट तौर पर बताया गया है कि जब मसीह का निशान आकाश पर प्रकट होगा तो पृथ्वी पर जितनी क़ौमें हैं वह छाती पीटेंगी। अतः ऐसा व्यक्ति मसीह को झुठलाता है जो कहता है कि हमारी क़ौम छाती नहीं

पीटेगी। हां वे लोग छाती पीटने की भविष्यवाणी का चरितार्थ नहीं ठहर सकते जिनकी जमाअत अभी थोड़ी है और इस योग्य नहीं कि उसको क़ौम कहा जाए और वह हमारा फ़िर्क़ा है बल्कि यही एक फ़िर्क़ा है जो भविष्यवाणी के प्रभाव एवं प्रमाण से बाहर है, क्योंकि इस फ़िर्क़े के अभी गिनती के कुछ लोग हैं जिन पर किसी प्रकार क़ौम का शब्द चरितार्थ नहीं हो सकता। मसीह ने ख़ुदा से इल्हाम पाकर बताया कि जब आकाश पर एक निशान प्रकट होगा तो पृथ्वी के समस्त गिरोह जो अपनी संख्या की अधिकता के कारण क़ौम कहलाने के पात्र हैं छाती पीटेंगे और कोई उनमें से शेष नहीं रहेगा परन्तु वही अल्पसंख्यक लोग जिन पर क़ौम का शब्द चरितार्थ नहीं हो सकता। इस भविष्यवाणी के चरितार्थ से न ईसाई बाहर रह सकते हैं और न इस युग के मुसलमान न यहूदी न कोई और झुठलाने वाला। केवल हमारी यह जमाअत बाहर है क्योंकि अभी ख़ुदा ने उनको बीज की तरह बोया है। नबी का कलाम किसी प्रकार से झूठा नहीं हो सकता जबकि कलाम में स्पष्ट तौर पर यह संकेत है कि प्रत्येक क़ौम जो पृथ्वी पर है छाती पीटेगी तो इन क़ौमों में से कौन सी जाति बाहर रह सकती है। मसीह ने तो इस आयत में किसी जाति को पृथक नहीं किया। हां वह जमाअत बहरहाल अपवाद है जो अभी क़ौम के अनुमान तक नहीं पहुंची अर्थात् हमारी जमाअत। यह भविष्यवाणी इस युग में नितान्त स्पष्टता से पूरी हुई, क्योंकि वह सच्चाई जो हज़रत मसीह के बारे में अब पूरी हुई है वह निस्सन्देह इन समस्त क़ौमों के मातम का कारण है क्योंकि इससे सब की ग़लती प्रकट होती है तथा सब का दोष प्रकट होता है। ईसाइयों के ख़ुदा

बनाने का कोलाहल निराशा की आहों से परिवर्तित हो जाता है। मुसलमानों का दिन-रात का हठ करना कि मसीह आकाश पर जीवित गया रोने तथा मातम के रूप में आ जाता है तथा यहूदियों का तो कुछ भी शेष नहीं रहता।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि उपरोक्त आयत में जो लिखा है कि उस समय पृथ्वी की समस्त क़ौमें छाती पीटेंगी। वहां पृथ्वी से अभिप्राय शाम देश की भूमि है जिस से ये तीनों क़ौमें सम्बन्ध रखती हैं। यहूदी इसलिए कि वही उनका प्रारंभिक स्थान तथा स्रोत है और उसी स्थान पर उनका उपासना गृह है। ईसाई इसलिए कि हज़रत मसीह इसी स्थान पर हुए हैं और ईसाई धर्म की पहली क़ौम इसी देश में पैदा हुई है। मुसलमान इसलिए कि वे इस भूमि के क़यामत तक वारिस हैं और यदि भूमि के शब्द के अर्थ प्रत्येक भूमि ली जाए तब भी कुछ हानि नहीं क्योंकि वास्तविकता खुलने पर प्रत्येक झुठलाने वाला लज्जित होगा।

और उन साक्ष्यों में से जो हमें इंजील से मिले हैं, इंजील मती की वह इबारत है जिसे हम नीचे लिखते हैं —

"और क़ब्रें खुल गईं और पवित्र लोगों की बहुत सी लाशें जो आराम में थीं उठीं और उसके उठने के पश्चात् (अर्थात् मसीह के उठने के पश्चात्) क़ब्रों में से निकल कर और पवित्र शहर में जाकर बहुतों को दिखाई दीं।"

(देखो मती बाब-27, आयत-52)

इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यह इंजील में वर्णित क़िस्सा कि मसीह के उठने के पश्चात् पवित्र लोग क़ब्रों में से बाहर निकल आए

और जीवित होकर बहुत से लोगों को दिखाई दिए। यह किसी ऐतिहासिक घटना का वर्णन नहीं है क्योंकि यदि ऐसा होता तो फिर जैसे इसी संसार में क़यामत प्रकट हो जाती तथा वह बात जो श्रद्धा और ईमान देखने के लिए संसार पर गुप्त रखी गई थी वह सब पर खुल जाती और ईमान, ईमान न रहता तथा प्रत्येक मोमिन और काफ़िर की दृष्टि में आने वाले संसार की वास्तविकता एक स्पष्ट वस्तु हो जाती जैसा कि चन्द्रमा और सूर्य, दिन और रात का अस्तित्व अत्यन्त स्पष्ट है, तब ईमान ऐसी मूल्यवान तथा क़द्र करने योग्य वस्तु न होती जिस पर प्रतिफल (अज्र) पाने की कुछ आशा हो सकती। यदि लोग और बनी इस्राईल के पहले नबी जिनकी संख्या लाखों तक पहुंचती है वास्तव में सलीबी घटना के समय जीवित हो गए थे तथा जीवित होकर शहर में आ गए थे और वास्तव में मसीह की सच्चाई एवं ख़ुदाई सिद्ध करने के लिए यह चमत्कार दिखलाया गया था जो सैकड़ों नबियों और लाखों ईमानदारों को एक पल में जीवित कर दिया गया। अतः इस अवस्था में यहूदियों को एक उत्तम अवसर मिला था कि वे जीवित हो गए नबियों तथा अन्य सत्यनिष्ठों और अपने मृत्युप्राप्त पूर्वजों से मसीह के बारे में पूछते कि क्या यह व्यक्ति जो ख़ुदाई का दावा करता है वास्तव में ख़ुदा है या अपने इस दावे में झूठा है। अनुमान है कि उन्होंने इस अवसर को हाथ से न जाने दिया होगा और अवश्य पूछा होगा कि यह व्यक्ति कैसा है, क्योंकि यहूदी इन बातों के अत्यधिक अभिलाषी थे कि यदि मुर्दे संसार में दोबारा आ जाएं तो उन से पूछें। तो फिर जिस अवस्था में लाखों मुर्दे जीवित होकर शहर में आ गए और प्रत्येक मुहल्ले में हज़ारों मुर्दे

चले गए तो ऐसे अवसर को यहूदी क्योंकर छोड़ सकते थे। उन्होंने अवश्य एक दो से नहीं अपितु हज़ारों से पूछा होगा और जब ये मुर्दे अपने-अपने घरों में प्रविष्ट हुए होंगे तो उन लाखों लोगों के संसार में दोबारा आने से घर-घर में शोर पड़ गया होगा तथा प्रत्येक घर में यही काम और यही चर्चा और यही वार्तालाप आरंभ हो गई होगी कि मुर्दों से पूछते होंगे कि क्या आप लोग इस व्यक्ति को जो यसू मसीह कहलाता है वास्तव में ख़ुदा जानते हैं, परन्तु चूंकि मुर्दों की इस गवाही के पश्चात् जैसी की आशा थी यहूदी हज़रत मसीह पर ईमान नहीं लाए और न कुछ उदार हुए अपितु और भी सख़्त दिल हो गए। तो संभवतः मालूम होता है कि मुर्दों ने कोई अच्छी गवाही नहीं दी अपितु अविलम्ब यह उत्तर दिया होगा कि यह व्यक्ति अपने इस ख़ुदा होने के दावे में बिल्कुल झूठा है और ख़ुदा पर लांछन लगाता है तभी तो लाखों लोग अपितु पैग़म्बरों तथा रसूलों के जीवित होने के पश्चात् भी यहूदी अपनी दुष्टताओं से न रुके तथा हज़रत मसीह को मार कर दूसरों को क़त्ल करने की ओर मुड़े। भला यह बात समझ आ सकती है कि लाखों सत्यनिष्ठ जो हज़रत आदम से लेकर हज़रत यह्या तक उस पवित्र भूमि की क़ब्रों में सोए हुए थे वे सब के सब जीवित हो जाएं और फिर उपदेश देने के लिए शहर में आएं और प्रत्येक खड़ा होकर हज़ारों लोगों के सामने यह गवाही दे कि वास्तव में यसू मसीह ख़ुदा का बेटा अपितु स्वयं ख़ुदा है उसी की पूजा किया करो और पहले विचारों को त्याग दो अन्यथा तुम्हारे लिए नर्क है जिसे हम स्वयं देख कर आए हैं और फिर इस उच्च स्तर की गवाही तथा आंखों देखी गवाही के बावजूद जो लाखों

सत्यनिष्ठ मुर्दों के मुख से निकली यहूदी अपने इन्कार से न रुके। हमारी अन्तरात्मा तो इस बात को स्वीकार नहीं करती। अतः यदि वास्तव में लाखों सत्यनिष्ठ मृत्युप्राप्त पैग़म्बर और रसूल इत्यादि जीवित होकर गवाही के लिए शहर में आए थे तो कुछ सन्देह नहीं कि उन्होंने कुछ उल्टी ही गवाही दी होगी और हज़रत मसीह की ख़ुदाई की पुष्टि कदापि न की होगी। तभी तो यहूदी लोग मुर्दों की गवाहियों को सुनकर अपने कुफ्र पर दृढ़ हो गए हज़रत मसीह तो उन से ख़ुदाई स्वीकार कराना चाहते थे किन्तु वे तो इस गवाही के पश्चात् नबुव्वत से भी इन्कार कर बैठे।

अतएव ऐसी आस्थाएं नितान्त हानिप्रद एवं दुष्प्रभाव डालने वाली हैं कि ऐसा विश्वास किया जाए कि ये लाखों मुर्दे या इससे पूर्व कोई मुर्दा हज़रत मसीह ने जीवित किया था क्योंकि उन मुर्दों के जीवित होने के पश्चात् कोई अच्छा परिणाम नहीं निकला। यह मनुष्य के स्वभाव में है कि यदि उदाहरणतया कोई व्यक्ति किसी सुदूर देश में जाता है और कुछ वर्षों के पश्चात् अपने शहर में वापस आता है तो स्वाभाविक तौर पर उसके हृदय में यह जोश होता है कि उस देश के अद्भुत एवं विचित्र लोगों के पास वर्णन करे तथा उस देश की अद्भुत से अद्भुत घटनाओं के बारे में सूचित करे न यह कि इतने समय की जुदाई के पश्चात् जब अपने लोगों से मिले तो मुंह बन्द रखे और गूंगों की भांति बैठा रहे अपितु ऐसे अवसर पर दूसरे लोगों में भी स्वाभाविक तौर पर यह जोश उत्पन्न होता है कि ऐसे व्यक्ति के पास दौड़े आते हैं तथा उस से उस देश की परिस्थितियों के सम्बन्ध में पूछते हैं और यदि ऐसा संयोग हो कि उन लोगों के देश

में कोई गरीब और दरिद्र आए जिसकी बाह्य हैसियत ग़रीबों जैसी हो तथा वह दावा करता हो कि मैं उस देश का बादशाह हूं जिस की राजधानी का यह लोग भ्रमण करके आए हैं तथा मैं अमुक-अमुक बादशाह से भी अपने शाहाना पद में प्रथम श्रेणी पर हूं तो लोग ऐसे पर्यटकों से अवश्य पूछा करते हैं कि भला यह तो बताइए कि अमुक व्यक्ति जो इन दिनों हमारे देश में उस देश से आया हुआ है क्या वास्तव में यह उस देश का बादशाह है और फिर वे लोग जैसी वास्तविकता हो बता दिया करते हैं। तो इस स्थिति में जैसा कि मैंने वर्णन किया है हज़रत मसीह के हाथ से मुर्दों का जीवित होना मात्र इस परिस्थिति में स्वीकृति योग्य होता जबकि वह गवाही जो उन से पूछी गई होगी, जिस का पूछा जाना एक स्वाभाविक बात है कोई लाभदायक परिणाम देती, परन्तु यहां ऐसा नहीं है। अतः विवश होकर इस बात को मानने से कि मुर्दे जीवित हुए थे इस बात को भी साथ ही मानना पड़ता है कि उन मुर्दों ने हज़रत मसीह के पक्ष में कोई लाभप्रद गवाही नहीं दी होगी जिस से उनकी सच्चाई स्वीकार की जाती अपितु ऐसी गवाही दी होगी जिससे और भी फसाद बढ़ गया होगा। काश मनुष्यों के स्थान पर अन्य पशुओं का जीवित किया जाना वर्णन किया जाता तो इसमें बहुत कुछ पर्दापोशी की कल्पना हो सकती थी। उदाहरणतया यह कहा जाता है कि हज़रत मसीह ने कई हज़ार बैल जीवित किए थे तो यह बात बहुत उचित होती तथा किसी के आरोप के समय जबकि उपरोक्त आरोप किया जाता अर्थात् यह कहा जाता कि मुर्दों की गवाही का परिणाम क्या हुआ तो हम तुरन्त कह सकते थे कि वह तो बैल थे उनकी भाषा कहां थी कि भली या

बुरी गवाही देते। भला वे तो लाखों मुर्दे थे जो हज़रत मसीह ने जीवित किए। आज उदाहरणतया कुछ हिन्दुओं को बुला कर पूछो कि यदि तुम्हारे मृत्युप्राप्त बाप-दाने दस-बीस जीवित होकर संसार में वापस आ जाएं और गवाही दें कि अमुक धर्म सच्चा है तो क्या फिर भी तुम को उस धर्म की सच्चाई में सन्देह शेष रहेगा तो नकारात्मक उत्तर कदापि नहीं देंगे। अतः निश्चित समझो कि संसार में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं कि इतने प्रकटन के पश्चात् फिर भी अपने कुफ्र और इन्कार पर अड़ा रहे। खेद है कि ऐसी कहानियों को बनाने में हमारे देश के सिक्ख खालसा ईसाइयों से अच्छे रहे और उन्होंने ऐसी कहानियों के बनाने में बड़ी होशियारी की, क्योंकि वे वर्णन करते हैं कि उनके गुरू बाबा नानक ने एक बार एक मुर्दा हाथी जीवित किया था। अतः यह इस प्रकार का चमत्कार है कि कथित परिणामों का आरोप उस पर नहीं आता, क्योंकि सिक्ख कह सकते हैं कि क्या हाथी की कोई बोलने वाली जीभ है ताकि बाबा नानक की पुष्टि करता या झुठलाता। अतः प्रजा तो अपनी अल्प बुद्धि के कारण ऐसे चमत्कारों पर बहुत प्रसन्न होती हैं परन्तु बुद्धिमान अन्य लोगों की आपत्तियों का निशाना बनकर दुखी होते हैं तथा जिस सभा में ऐसी व्यर्थ कहानियां की जाएं वे बहुत शर्मिन्दा होते हैं। अब चूंकि हमें हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से ऐसा ही प्रेम तथा निष्कपटता का सम्बन्ध है जैसा कि ईसाइयों का संबंध है अपितु हमें उस से भी अधिक सम्बन्ध है क्योंकि वे नहीं जानते कि वे किस की प्रशंसा करते हैं परन्तु हम जानते है कि हम किस की प्रशंसा करते हैं क्योंकि हम ने उनको देखा है। इसलिए अब हम इस आस्था की वास्तविकता को खोलते हैं कि जो इंजीलों में

लिखा है कि सलीब की घटना के समय समस्त मृत्युप्राप्त सत्यनिष्ठ जीवित होकर शहर में आ गए थे।

अत: स्पष्ट हो कि यह एक कश्फ़ी मामला था जो सलीबी घटना के पश्चात् कुछ पवित्र हृदय लोगों ने स्वप्न की भांति देखा था कि जैसे पवित्र मुर्दे जीवित होकर शहर में आ गए हैं तथा लोगों से मिलते हैं और जैसा कि स्वप्नों की ता'बीरें (स्वप्नफल) ख़ुदा की पवित्र किताबों में की गई है। जैसे कि हज़रत यूसुफ़ के स्वप्न की ता'बीर की गई ऐसी ही इस स्वप्न को भी एक ता'बीर थी और वह यह थी कि मसीह सलीब पर नहीं मरा और ख़ुदा ने उसको सलीब की मृत्यु से मुक्ति दे दी। यदि हम से यह प्रश्न किया जाए कि यह ता'बीर तुम्हें कहां से मालूम हुई तो इसका उत्तर यह है कि ता'बीर-कला के इमामों ने ऐसा ही लिखा है और समस्त स्वप्नफल (ता'बीर) बताने वालों ने अपने अनुभव से इस पर गवाही दी है। इसलिए हम प्राचीन युग से ता'बीर-कला के एक इमाम अर्थात् "ता'तीरुल अनाम" पुस्तक के लेखक की ता'बीर को उसकी मूल इबारत के साथ नीचे लिखते हैं और वह यह है من رأى أنّ الموتٰى وثبوا من قبورهم و رجعوا الٰى دورهم فانه يطلق من فى السجن۔ (देखो पुस्तक ता'तीरुल अनाम फ़ीता'बीरुल मनाम लेखक क़ुतुबुज़्ज़मान शैख़ अब्दुल ग़नी अन्नाबीलसी पृष्ठ-289)

अनुवाद :- यदि कोई यह स्वप्न देखे या कश्फ़ी तौर पर देखे कि मुर्दे क़ब्रों में से निकल आए और अपने घरों की ओर लौटे तो इसकी ता'बीर यह है कि एक कैदी कैद से मुक्ति पाएगा और अत्याचारियों के हाथ से उसे मुक्ति प्राप्त होगी। वर्णन शैली से ऐसा

मालूम होता है कि वह ऐसा कैदी होगा कि एक शान एवं प्रतिष्ठा रखता होगा। अब देखिए यह ता'बीर कैसी बौद्धिक तौर पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर चरितार्थ होती है और तुरन्त समझ में आ जाता है कि इसी संकेत को प्रकट करने के लिए मृत्यु प्राप्त सत्यनिष्ठ जीवित होकर शहर में प्रवेश करते हुए दिखाई दिए ताकि समझदार लोग मालूम करें कि हज़रत मसीह सलीबी मृत्यु से बचाए गए।

इंज़ीलों में ऐसे ही अन्य बहुत से स्थान पाए जाते हैं जिन से स्पष्ट होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब द्वारा मृत्यु प्राप्त नहीं हुए अपितु छुटकारा पाकर किसी दूसरे देश में चले गए परन्तु मैं विचार करता हूं कि जितना मैंने वर्णन किया है वह न्यायकर्ताओं के समझने के लिए पर्याप्त है।

संभव है कि कुछ हृदयों में यह आपत्ति जन्म ले कि इंजीलों में यह भी तो बार-बार चर्चा है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब पर मृत्यु पा गए और फिर जीवित होकर आकाश पर चले गए। ऐसी आपत्तियों का उत्तर मैं पहले संक्षिप्त रूप में दे चुका हूं और अब भी इतना वर्णन कर देना उचित समझता हूं कि जब कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सलीबी घटना के पश्चात् हवारियों को मिले तथा गलील तक यात्रा की, रोटी खाई, कबाब खाए, अपने घाव दिखाए, और एक रात अमलोस के स्थान पर हवारियों के साथ रहे तथा गुप्त तौर पर पिलातूस के क्षेत्र से भागे और नबियों की पद्धति (सुन्नत) के अनुसार उस देश से प्रवास (हिजरत) किया तथा डरते हुए यात्रा की। ये समस्त घटनाएं इस बात का निर्णय करती हैं कि वह सलीब पर मृत्यु प्राप्त नहीं हुए थे और नश्वर शरीर की समस्त आवश्यकताएं

उनके साथ थीं तथा कोई नया परिवर्तन उनमें पैदा नहीं हुआ था तथा आकाश पर चढ़ने की कोई चश्मदीद गवाही इंजील से नहीं मिलती।* यदि ऐसी गवाही होती भी तो विश्वसनीय नहीं थी क्योंकि इंजील लेखकों की यह आदत मालूम होती है कि बात का बतंगड़ बना लेते हैं और एक छोटी सी बात पर हाशिए चढ़ाते-चढ़ाते उसे एक पर्वत कर देते हैं। उदाहरणतया किसी इंजील-लेखक के मुख से निकल गया कि मसीह ख़ुदा का बेटा है। अब दूसरा इंजील लेखक इस चिन्ता में पड़ता है कि उसको पूरा ख़ुदा बना दे और तीसरा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अधिकार उसको देता है तथा चौथा खुल्लम-खुल्ला कह देता है कि वही है जो कुछ है और कोई दूसरा ख़ुदा नहीं। अतः इस प्रकार से खींचते-खींचते कहीं का कहीं ले जाते हैं। देखो वह स्वप्न जिसमें दिखाई दिया था कि जैसे मुर्दे क़ब्रों में से उठकर शहर में चले गए। अब प्रत्यक्ष अर्थों पर बल देकर यह दिखाया गया कि वास्तव में मुर्दे क़ब्रों में से बाहर निकल आए थे और यरोशलम शहर में आकर अन्य लोगों से मुलाक़ातें की थीं। यहां विचार करो कि कैसे एक पंख वाला कौवा बनाया गया, फिर वह एक कौवा न रहा अपितु लाखों कौवे उड़ाए गए। जिस स्थान पर अतिशयोक्ति की यह स्थिति हो उस स्थान पर वास्तविकताओं का कैसे पता लगे। विचार करने योग्य है कि इन इंजीलों में जो ख़ुदा की पुस्तकें कहलाती हैं ऐसी-ऐसी अतिशयोक्तियों का भी उल्लेख है कि मसीह ने वे कार्य किए कि यदि वे सब के सब लिख जाते तो वे पुस्तकें जिन में वह लिखे जाते

* कोई बयान नहीं करता कि मैं इस बात का गवाह हूं और मेरी आंखों ने देखा है कि वह आसमान पर चढ़ गए थे। इसी से।

संसार में न समा सकतीं। क्या इतनी अतिशयोक्ति ईमानदारी और सत्यनिष्ठा की पद्धति है, क्या यह सच नहीं है कि यदि मसीह के कार्य ऐसे ही असीमित तथा सीमा से बाहर थे तो तीन वर्ष की सीमा में क्योंकर आ गए। इन इंजीलों में यह भी दोष है कि पहली किताबों के कुछ हवाले ग़लत भी दिए हैं। मसीह की वंशावली को भी सही तौर पर न लिख सके। इंजीलों से मालूम होता है कि उन बुज़ुर्गों की बुद्धि कुछ मोटी थी, यहां तक कि कुछ लोग मसीह को भूत समझ बैठे और इन इंजीलों पर हमेशा से यह आरोप भी चला आता है कि वह अपने सही होने पर सुरक्षित नहीं रहीं और स्वयं जिस स्थिति में बहुत सी और भी किताबें इंजील के नाम से लिखी गईं तो हमारे पास इस बात पर कोई ठोस दलील नहीं कि क्यों उन दूसरी किताबों के सब के सब लेख रद्द किए जाएं और क्यों उन इंजीलों का सब का सब लिखा हुआ स्वीकार कर लिया जाए। हम सोच नहीं सकते कि कभी दूसरी इंजीलों में इतनी निराधार अतिशयोक्तियों के उल्लेख किए गए हैं जैसा कि उन चार इंजीलों में विचित्र बात है कि एक ओर तो इन किताबों में मसीह का पवित्र और शुद्ध आचरण माना जाता है तथा दूसरी ओर उस पर ऐसे आरोप लगाए जाते हैं जो किसी सत्यनिष्ठ की प्रतिष्ठा के लिए कदापि उचित नहीं हैं। उदाहरणतया इस्राईली नबियों ने यों तो तौरात के उद्देश्य के अनुसार एक ही समय में सैकड़ों पत्नियों को रखा ताकि पवित्र लोगों की सन्तान अधिक संख्या में पैदा हो, परन्तु आप ने कभी नहीं सुना होगा कि किसी नबी ने अपनी निरंकुशता का यह नमूना दिखाया कि एक अपवित्र बदचलन स्त्री और शहर की प्रसिद्ध व्यभिचारिणी उसके शरीर से अपने हाथ

लगाए और उसके सर पर अवैध कमाई का तैल मले तथा अपने बाल उसके पैरों पर मले और वह यह सब कुछ एक जवान अपवित्र विचारों वाली स्त्री से होने दे तथा न रोके। यहां केवल सुधारणा की बरकत से मनुष्य उन भ्रमों से बच सकता है जो स्वाभाविक तौर पर ऐसे दृश्य के पश्चात् पैदा होते हैं परन्तु बहरहाल यह नमूना दूसरों के लिए अच्छा नहीं। अतः इन इंजीलों में बहुत सी बातें ऐसी भरी पड़ी हैं जो बता रही हैं कि ये इंजीलें अपनी मूल स्थिति पर स्थापित नहीं रहीं या उनके रचयिता कोई और हैं, हवारी और उनके शिष्य नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर मती इंजील का यह कथन-"और यह बात यहूदियों में आज तक प्रसिद्ध है।" क्या इसका लेखक मती को ठहराना सही और उचित हो सकता है ? क्या इससे यह परिणाम नहीं निकलता कि इस इंजील मती का लेखक कोई अन्य व्यक्ति है जो मती की मृत्यु के पश्चात् गुज़रा है फिर इसी इंजील मती बाब-28, आयत 12,13 में है - "तब उन्होंने अर्थात् यहूदियों ने बुज़ुर्गों के साथ एकत्र हो कर परामर्श किया और उन पहरेदारों को बहुत रुपए दिए और कहा तुम कहो कि रात को जब हम सोते थे उसके शिष्य अर्थात् मसीह के शिष्य आकर उसे चुरा कर ले गए।" देखिए ये कैसी कच्ची तथा अनुचित बाते हैं। यदि इस से तात्पर्य यह है कि यहूदी इस बात को गुप्त रखना चाहते थे कि यसू मुर्दों में से जी उठा है इसलिए उन्होंने पहरेदारों को रिश्वत दी थी ताकि महान चमत्कार उनकी क़ौम में प्रसिद्ध न हो तो क्यों यसू ने जिस का यह कर्त्तव्य था कि अपने इस चमत्कार का यहूदियों में प्रचार करता उसे गुप्त रखा अपितु दूसरों को भी उसे प्रकट करने से मना किया। यदि यह कहो कि उसको

पकड़े जाने का भय था तो मैं कहता हूं कि जब एक बार ख़ुदा तआला का प्रारब्ध (तक़दीर) उस पर आ चुका और वह मर कर भी सूक्ष्म शरीर के साथ जीवित हो चुका तो अब उसको यहूदियों का क्या भय था, क्योंकि अब यहूदी किसी प्रकार उस पर अधिकार नहीं पा सकते थे। अब तो वह नश्वर जीवन से उन्नति पा चुका था खेद कि एक ओर तो उसका सूक्ष्म शरीर के साथ जीवित हो जाना, हवारियों को मिलना, जलील की ओर जाना तथा आकाश पर उठाया जाना वर्णन किया गया है और फिर बात-बात में उस सूक्ष्म शरीर के साथ भी यहूदियों का भय है उस देश से गुप्त तौर पर भागता है ताकि कोई यहूदी देख न ले तथा प्राण बचाने के लिए सत्तर कोस की यात्रा गलील की ओर करता है बार-बार मना करता है कि यह घटना किसी के पास वर्णन न करो क्या ये सूक्ष्म शरीर के लक्षण हैं ? नहीं अपितु मूल वास्तविकता यह है कि कोई सूक्ष्म और नया शरीर न था वही घायल शरीर था जो प्राण निकलने से बचाया गया। चूंकि यहूदियों को फिर भी भय था इसलिए मसीह ने भौतिक साधनों को ध्यान में रखते हुए उस देश को छोड़ दिया। इसके विपरीत जितनी बातें वर्णन की जाती हैं वे सब की सब व्यर्थ और निरर्थक हैं कि पहरेदारों को यहूदियों ने रिश्वत दी कि तुम यह गवाही दो कि हवारी लाश को चुरा कर ले गए और हम सो रहे थे यदि वे सोते थे तो उन पर यह प्रश्न हो सकता है कि तुम को सोने की अवस्था में क्योंकर मालूम हो गया कि यसू की लाश को चोरी से उठा ले गए और क्या मात्र इतनी बात से कि यसू क़ब्र में नहीं कोई बुद्धिमान समझ सकता था कि वह आकाश पर चला गया है, क्या संसार में अन्य कारण नहीं

जिन से कब्रें खाली रह जाती हैं ? इस बात को प्रमाणित करना तो मसीह का दायित्व था कि वह आकाश पर जाने के समय दो -तीन सौ यहूदियों को मिलता और पिलातूस से भी मुलाकात करता जलाली (आध्यात्मिक) शरीर के साथ उसे किस का भय था परन्तु उसने यह ढंग नहीं अपनाया तथा अपने विरोधियों को लेशमात्र भी प्रमाण नहीं दिया अपितु भयभीत हृदय के साथ जलील की ओर भागा। इसलिए हम निश्चित तौर पर विश्वास रखते और मानते हैं कि यद्यपि यह सच है कि वह उस क़ब्र में से निकल गया जो कोठे की भांति खिड़की दार थी और यह भी सच है कि वह गुप्त तौर पर हवारियों को मिला, परन्तु यह कदापि सच नहीं कि उसने कोई नया जलाली (आध्यात्मिक) शरीर पाया, वही शरीर था और वही घाव थे और हृदय में वही भय था कि कहीं दुष्ट यहूदी फिर पकड़ न लें। मती बाब-28, आयत 7,8,9,10 को ध्यानपूर्वक पढ़ो। इन आयतों में स्पष्ट तौर पर लिखा हुआ है कि वे स्त्रियाँ जिन को किसी ने यह पता दिया था कि मसीह जीवित है और जलील की ओर जा रहा है और कहने वाले ने गुप्त तौर पर यह भी कहा था कि शिष्यों को जाकर यह सूचना दे दो। वे इस बात को सुनकर प्रसन्न तो हुईं परन्तु बड़ी भयानक परिस्थिति में रवाना हुईं अर्थात् यह शंका थी कि अब भी कोई दुष्ट यहूदी मसीह को पकड़ न ले तथा आयत-9 में है कि जब वे स्त्रियां शिष्यों को सूचना देने जा रही थीं तो यसू उन्हें मिला और कहा - सलाम' और आयत 10 में है कि यसू ने उन्हें कहा कि मत डरो अर्थात् मेरे पकड़े जाने की शंका न करो परन्तु मेरे भाइयों को कहो कि जलील को

जाएं* वहां मुझे देखेंगें। अर्थात् यहां मैं ठहर नहीं सकता कि शत्रुओं का भय है। अत: यदि वास्तव में मसीह मृतयोपरान्त जलाली (आध्यात्मिक) शरीर के साथ जीवित हुआ था तो यह सिद्ध करने का दायित्व उस पर था कि वह ऐसे जीवन का यहूदियों को प्रमाण देता, परन्तु हम जानते हैं कि वह इस प्रमाण के बोझ से मुक्त नहीं हुआ। यह एक नितान्त स्पष्ट अशिष्टता है कि हम यहूदियों पर आरोप लगाएं कि उन्होंने मसीह के दोबारा जीवित हो जाने के प्रमाण को रोक दिया अपितु मसीह ने स्वयं अपने दोबारा जीवित हो जाने का लेशमात्र प्रमाण नहीं दिया अपितु भागने और छिपने, खाने, सोने तथा घाव दिखाने से इस बात का प्रमाण दिया कि वह सलीब पर नहीं मरा।

---

* नोट :- इस स्थान पर मसीह ने औरतों को इन शब्दों में तसल्ली नहीं दी कि अब मैं नए और जलाली (आध्यात्मिक) शरीर के साथ उठा हूं अब मुझ पर कोई हाथ नहीं डाल सकता बल्कि औरतों को कमज़ोर देखकर साधारण तसल्ली दी जो हमेशा पुरुष स्त्रियों को दिया करते हैं। अत: जलाली (आध्यात्मिक) शरीर का कोई प्रमाण न दिया बल्कि अपना मांस और हड्डियां दिखाकर साधारण शरीर का प्रमाण दे दिया। इसी से।

द्वितीय अध्याय

(उन साक्ष्यों के वर्णन में जो हज़रत मसीह के बच जाने के सम्बन्ध में पवित्र क़ुर्आन तथा सही हदीसों से हमें प्राप्त हुए हैं)

ये तर्क जो हम इस अध्याय में लिखने लगे हैं प्रत्यक्षत: उन के बारे में प्रत्येक को विचार पैदा होगा कि ईसाइयों के मुकाबले में उन कारणों को प्रस्तुत करना व्यर्थ है क्योंकि वे लोग पवित्र क़ुर्आन या हदीस को अपने लिए प्रमाण नहीं समझते, किन्तु हम ने केवल इस उद्‌देश्य से उनको लिखा है ताकि ईसाइयों को पवित्र क़ुर्आन तथा हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक चमत्कार मालूम हो तथा उन पर यह वास्तविकता खुले कि वे सच्चाइयां जो सैकड़ों वर्ष के पश्चात् अब मालूम हुई हैं वे हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन ने पहले से क्योंकर वर्णन कर दी हैं। अत: उनमें से कुछ नीचे लिखता हूं।

अल्लाह तआला का पवित्र क़ुर्आन में कथन है

وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ..... وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا

(सूर: अन्निसा-158)

अर्थात् यहूदियों ने हज़रत मसीह को वास्तव में न क़त्ल किया और न सलीब द्वारा वध किया अपितु उनको मात्र एक सन्देह पैदा हुआ कि मानो ईसा सलीब पर मृत्यु पा गए हैं और उनके पास वे प्रमाण नहीं हैं जिनके कारण उनके हृदय इस बात पर सन्तुष्ट हो सकें कि निश्चय ही हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के सलीब पर प्राण निकल गए थे।

इन आयतों में अल्लाह तआला ने यह वर्णन किया है कि यद्यपि

यह सच है कि प्रत्यक्षतः मसीह सलीब पर खींचा गया और उसके मारने का इरादा किया गया परन्तु यह मात्र एक धोखा है कि यहूदियों और ईसाइयों ने ऐसा विचार कर लिया कि वास्तव में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के प्राण सलीब पर निकल गए थे अपितु ख़ुदा ने ऐसा साधन पैदा कर दिए जिनके कारण वह सलीबी मृत्यु से बच गया। अब न्याय करने का स्थान है कि पवित्र क़ुर्आन ने जो कुछ यहूदियों एवं ईसाइयों के विपरीत कहा था अन्ततः वही बात सच निकली, तथा इस युग के उच्च स्तरीय अन्वेषणों से यह सिद्ध हो गया कि हज़रत मसीह वास्तव में सलीबी मृत्यु से बचाए गए थे। पुस्तकों के देखने से मालूम होता है कि यहूदी इस बात का उत्तर देने से सदैव असमर्थ रहे कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के प्राण हड्डियां तोड़े बिना केवल दो-तीन घंटे में क्योंकर निकल गए। इसी कारण से कुछ यहूदीयों ने एक और बात बनाई है कि हम ने मसीह को तलवार से क़त्ल कर दिया था। हालांकि यहूदियों के पुराने इतिहास की दृष्टि से मसीह को तलवार द्वारा क़त्ल करना सिद्ध नहीं। यह अल्लाह तआला की शान है कि मसीह के बचाने के लिए अंधेरा हुआ, भूकम्प आया, पिलातूस की पत्नी को स्वप्न आया, सब्त के दिन की रात निकट आ गई, जिसमें सलीब पर चढ़ाए गए लोगों को सलीब पर रखना उचित न था। अधिकारी का हृदय भयानक स्वप्न के कारण मसीह के छुड़ाने की ओर आकृष्ट हुआ। ये समस्त घटनाएं ख़ुदा तआला ने एक ही समय में इसलिए पैदा कीं ताकि मसीह के प्राण बच जाएं। इसके अतिरिक्त मसीह को मूर्च्छित अवस्था में कर दिया ताकि प्रत्येक को मृत मालूम हो और यहूदियों पर उस समय भयावह निशान भूकम्प

इत्यादि दिखा कर कायरता, भय, और अज़ाब की आशंका व्याप्त कर दी तथा यह धड़का इसके अतिरिक्त था कि सब्त की रात में शव सलीब पर न रह जाएं। फिर यह भी हुआ कि यहूदियों ने मसीह को मूर्च्छा में देखकर समझ लिया कि मृत्यु हो चुकी है। अंधकार, भूकम्प तथा घबराहट का समय था। उन्हें घरों की भी चिन्ता हुई कि कदाचित् इस भूकम्प तथा अंधकार से बच्चों पर क्या गुज़रती होगी और यह भय भी दिलों पर हावी हुआ कि यदि यह व्यक्ति झूठा और काफ़िर था जैसा कि हम ने हृदय में समझ रखा है तो इसके इस कष्ट देने के समय ऐसे भयावह लक्षण क्यों प्रकट हुए हैं जो इससे पूर्व कभी देखने में नहीं आए। इसलिए उनके हृदय व्याकुल होकर इस योग्य न रहे कि वे मसीह को अच्छी तरह से देखते कि क्या वह मर गया है या उसकी क्या स्थिति है, किन्तु वास्तव में यह सब बातें मसीह को बचाने के लिए ख़ुदा तआला के उपाय थे। इसी की ओर इस आयत में संकेत है وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ अर्थात् यहूदयिों ने मसीह को जान से मारा नहीं है किन्तु ख़ुदा ने उनको शंका में डाल दिया कि मानो जान से मार दिया है। इससे सच्चों को ख़ुदा तआला की कृपा पर बहुत उम्मीद बढ़ती है कि अपने भक्तों को जिस प्रकार चाहे बचा ले।

पवित्र क़ुर्आन में एक यह आयत भी हज़रत मसीह के पक्ष में है-

وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ (सूरत आले इमरान : 46)

इस का अनुवाद यह है कि संसार में भी मसीह को उसके जीवन में वजाहत अर्थात् सम्मान, पद, सामान्य लोगों की दृष्टि में श्रेष्ठता एवं महानता मिलेगी और परलोक में भी। अतः स्पष्ट है कि हज़रत

मसीह ने हीरोदोस और पिलातूस के क्षेत्र में कोई सम्मान नहीं पाया अपितु अत्यन्त तिरस्कार किया गया तथा यह विचार कि संसार में दोबारा आकर सम्मान और महानता पाएंगे, यह एक निराधार भ्रम है जो न केवल ख़ुदा तआला की पुस्तकों के उद्देश्य के विपरीत अपितु उसके अनश्वर प्रकृति के नियम से भी विरुद्ध, विपरीत तथा एक अप्रमाणित बात है किन्तु निश्चित और सच्ची बात यह है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने इस दुर्भाग्यशाली जाति के हाथ से मुक्ति पाकर जब पंजाब देश को अपने आगमन से सम्मानित किया तो इस देश में ख़ुदा तआला ने उनको बहुत सम्मान दिया तथा बनी इस्राईल की वे दस जातियां जो खोई हुई थीं यहां आकर उनको मिल गईं। ऐसा मालूम होता है कि बनी इस्राईल इस देश में आकर अधिक उनमें से बुद्ध धर्म में प्रवेश कर गए थे तथा कुछ निकृष्ट प्रकार की मूर्ति पूजा में फंस गए थे। अतः उनके अधिकतर लोग हज़रत मसीह के इस देश में आने से सद्मार्ग पर आ गए और चूंकि हज़रत मसीह की दा'वत में आने वाले नबी के स्वीकार करने के लिए वसीयत थी, इसलिए वे दस फ़िर्क़े जो इस देश में आकर अफ़ग़ान और कश्मीरी कहलाए, अन्ततः सब के सब मुसलमान हो गए। अतः इस देश में हज़रत मसीह का बड़ा वैभव पैदा हुआ और वर्तमान में एक सिक्का मिला है जो इस देश में पंजाब में आया है उस पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम पाली भाषा में अंकित है और उसी युग का सिक्का है जो हज़रत मसीह का युग था। इस से विश्वास होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने इस देश में आकर राजाओं वाला सम्मान पाया और संभवतः यह सिक्का ऐसे राजा की ओर से जारी

हुआ है जो हज़रत मसीह पर ईमान ले आया था। एक अन्य सिक्का मिला है उस पर एक इस्राईली पुरुष का चित्र है। लक्षणों से ज्ञात होता है कि वह भी हज़रत मसीह का चित्र है। पवित्र क़ुर्आन में एक यह भी आयत है कि मसीह को ख़ुदा ने ऐसी बरकत दी है कि जहां जाएगा वह मुबारक होगा।* अतः इन सिक्कों से सिद्ध है कि उसने ख़ुदा से बड़ी बरकत पाई तथा मुत्यु प्राप्त नहीं हुआ जब तक उसको एक राजसी सम्मान न दिया गया। इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन में एक यह भी आयत है —

وَمُطَهِّرُکَ مِنَ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا**

अर्थात् हे ईसा मैं उन आरोपों से तुझे बरी करूंगा और तेरा पाकदामन होना प्रमाणित कर दूंगा और इन आरोपों को दूर कर दूंगा जो तुझ पर यहूदियों और ईसाइयों ने लगाए। यह एक बड़ी भविष्यवाणी थी तथा इस का तात्पर्य यही है कि यहूदियों ने यह आरोप लगाया था कि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह सलीब पर मुत्यु पाकर ला'नती होकर ख़ुदा का प्रेम उनके हृदय से जाता रहा और जैसा कि ला'नत के भाव के लिए शर्त है कि उन का हृदय ख़ुदा से खिन्न और ख़ुदा से विमुख हो गया और अंधकार के अपार तूफान में पड़ गया तथा बुराइयों से प्रेम करने लगा तथा समस्त नेकियों का विरोधी हो गया और ख़ुदा से सम्बन्ध-विच्छेद कर शैतान की बादशाहत के अधीन हो गया तथा उसमें और ख़ुदा में वास्तविक शत्रुता पैदा हो गई। ला'नती होने का यही आरोप ईसाइयों ने भी लगाया था, परन्तु ईसाइयों ने

* وَجَعَلَنِیْ مُبَارَکًا اَیْنَمَا کُنْتُ

** सूरः आले इमरान - 56

अपनी मूर्खता से दो विपरीत बातों को एक ही स्थान पर एकत्र कर दिया है। उन्होंने एक ओर तो हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा ठहराया तथा दूसरी ओर मलऊन (ला'नती) भी ठहरा दिया है और स्वयं मानते हैं कि मलऊन (ला'नती) अंधकार और शैतान का बेटा होता है या स्वयं शैतान होता है। हज़रत मसीह पर यह बहुत अपवित्र आरोप लगाए गए थे तथा مُطَهِّرُكَ की भविष्यवाणी में यह संकेत है कि एक युग वह आता है कि ख़ुदा तआला उन आरोपों से हज़रत मसीह को पवित्र करेगा और यही वह युग है।

यद्यपि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पवित्रता हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गवाही से भी बुद्धिमानों की दृष्टि में भलीभांति हो गई क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा पवित्र क़ुर्आन ने गवाही दी कि वे सब आरोप झूठे हैं जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर लगाए गए थे, किन्तु यह गवाही लोगों की दृष्टि में अवास्तविक तथा जलाली (आध्यात्मिक) थी इसलिए ख़ुदा तआला के इन्साफ़ ने यही चाहा कि जैसा कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर मारना एक प्रसिद्ध बात थी तथा नितान्त स्पष्ट, देखी और महसूस की हुई बातों में से थी। इसी प्रकार पवित्र तथा बरी होना भी देखी और महसूस की हुई बातों में से होनी चाहिए। अतः अब इसी के अनुसार प्रकट हुआ अर्थात् पवित्रता भी केवल अस्पष्ट नहीं अपितु महसूस तौर पर हो गई तथा लाखों लोगों ने इस शारीरिक आंख से देख लिया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र श्रीनगर कश्मीर में मौजूद है और जैसा कि गिलगित अर्थात् सिरी के मकान पर हज़रत मसीह को सलीब पर खींचा गया था ऐसा ही श्री

मकान पर अर्थात् श्रीनगर में उनकी क़ब्र का होना सिद्ध हुआ। यह विचित्र बात है कि दोनों अवसरों में श्री का शब्द मौजूद है अर्थात् जहां हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब पर खींचे गए उस स्थान का नाम भी गिलगित अर्थात् श्री है और जहां उन्नीसवीं सदी के अन्त में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की क़ब्र सिद्ध हुई उस स्थान का नाम भी गिलगित अर्थात् श्री है और मालूम होता है कि वह गिलगित कि जो कश्मीर के क्षेत्र में है यह भी श्री की ओर एक संकेत है। संभवतः यह शहर हज़रत मसीह के समय में बनाया गया है तथा सलीब की घटना की स्थानीय यादगार के तौर पर उसका नाम गिलगित अर्थात् श्री रखा गया, जैसा कि लासा जिसके अर्थ हैं उपास्य का शहर। यह इब्रानी शब्द है और यह भी हज़रत मसीह के समय में आबाद हुआ है।

और हदीसों में विश्वसनीय रिवायतों से सिद्ध है कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि मसीह की आयु एक सौ पच्चीस वर्ष की हुई है और इस बात को इस्लाम के समस्त फ़िर्क़े मानते हैं कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम में दो ऐसी बातें इकट्ठी हुई थीं कि वे दोनों किसी नबी में इकट्ठी नहीं हुईं।

(1) एक यह कि उन्होंने पूरी आयु पाई अर्थात् एक सौ पच्चीस वर्ष जीवित रहे।

(2) दूसरे यह कि उन्होंने संसार के अधिकांश भागों की यात्रा की। इसलिए नबी सय्याह कहलाए।

अतः स्पष्ट है कि यदि वह केवल तैंतीस (33) वर्ष की आयु में आकाश की ओर उठाए जाते तो इस स्थिति में एक सौ पच्चीस

वर्ष की रिवायत सही नहीं ठहर सकती थी और न उस छोटी सी आयु में तैंतीस वर्ष में भ्रमण कर सकते थे और ये रिवायतें न केवल हदीस की अन्य तथा प्राचीन पुस्तकों में लिखी हैं अपितु समस्त मुसलमानों के फ़िर्क़ों में इस निरन्तरता से प्रसिद्ध हैं कि इस से अधिक की कल्पना नहीं। कन्ज़ुलउम्माल जो हदीसों की एक बड़ी पुस्तक है उसके पृष्ठ 34 जिल्द-2 में अबू हुरैरा से रिवायत है :

اوحی اللہ تعالٰی الی عیسٰی ان یاعیسٰی انتقل من مکان الی مکان لئلا تعرف فتؤذٰی

अर्थात् अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर वह्यी भेजी कि हे ईसा एक मकान से दूसरे मकान की ओर जा अर्थात् एक देश से दूसरे देश की तरफ जाता रह ताकि तुझे कोई पहचान कर दुःख न दे।

और फिर इसी पुस्तक में जाबिर से रिवायत करके यह हदीस लिखी है -

کان عیسی ابن مریم یسیح فاذا امسٰی اکل بقل الصحراء و یشرب الماء القراح (कन्ज़ुलउम्माल जिल्द-2, पृष्ठ-71)

अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हमेशा सियाहत (भ्रमण) किया करते थे और एक देश से दूसरे देश की ओर भ्रमण करते थे और जहां शाम होती थी तो जंगल की सब्ज़ियों में से कुछ खाते थे और शुद्ध पानी पीते थे। फिर इसी पुस्तक में अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है जिस के शब्द ये हैं -

قال احب شیء الی اللہ الغرباء قیل ای شیء الغرباء، قال الذین یفرّون بدینھم و یجتمعون الی عیسی ابن مریم (जिल्द-6, पृष्ठ-51)

अर्थात् रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि ख़ुदा के निकट सबसे प्रिय वे लोग हैं जो ग़रीब हैं पूछा गया कि ग़रीब के क्या अर्थ हैं ? क्या वे लोग हैं जो ईसा मसीह की तरह धर्म लेकर अपने देश से भागते हैं।

तीसरा अध्याय

(उन प्रमाणों के वर्णन में जो चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकों से लिए गए हैं)

एक उच्च स्तरीय प्रमाण जो हज़रत मसीह के सलीब से बचने पर हमें मिला है और जो ऐसा प्रमाण है कि स्वीकार करने के अतिरिक्त कुछ बन नहीं पड़ता वह एक नुस्ख़ा (निदान) है जिसका नाम मरहम-ए-ईसा है जो चिकित्सा सम्बन्धी सैकड़ों पुस्तकों में लिखा हुआ पाया जाता है। उन पुस्तकों में से कुछ ऐसी हैं जो ईसाइयों की लिखी हुई हैं तथा कुछ ऐसी हैं जिनके लेखक मजूसी या यहूदी हैं और कुछ के लेखक मुसलमान हैं तथा अधिकांश उनमें से बहुत प्राचीनकाल की हैं। खोज से ऐसा मालूम हुआ है कि प्रथमतः मौखिक तौर पर इस नुस्ख़े की लाखों लोगों में ख्याति हो गई और फिर लोगों ने इस नुस्ख़े को लिख लिया। पहले रोम की भाषा में हज़रत मसीह के युग में ही सलीबी घटना के कुछ समय पश्चात् एक क़राबादीन* लिखी गई जिसमें यह नुस्ख़ा था और जिसमें यह वर्णन किया गया था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की चोटों के लिए यह नुस्ख़ा बनाया गया था फिर उस क़राबादीन का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ। यह ख़ुदा की विचित्र क़ुदरत है कि प्रत्येक धर्म के माहिर

---

* क़राबादीन - वह ग्रन्थ जिसमें यूनानी दवाएं और नुस्ख़े (दवा के पर्चे जो डाक्टर लिखता है) लिखे रहते हैं, यूनानी योग-संग्रह। (अनुवादक)

चिकित्सक ने क्या ईसाई, क्या यहूदी और क्या मजूसी* और क्या मुसलमान सब ने इस नुस्ख़े को अपनी पुस्तकों में लिखा है और सब ने इस नुस्ख़े के बारे में यही वर्णन किया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए उनके हवारियों ने तैयार किया था और जिन पुस्तकों में औषधियों के अलग-अलग गुण लिखे हैं, उनके देखने से मालूम होता है कि यह नुस्ख़ा उन चोटों के लिए नितान्त लाभप्रद है जो किसी मार या गिरने से लग जाती हैं और चोटों से जो ख़ून बहता है वह उससे तुरन्त ख़ुश्क हो जाता है। चूंकि उसमें मुर्र** भी सम्मिलित है इसलिए घाव कीटाणु पड़ने से भी सुरक्षित रहता है। और यह दवा प्लेग के लिए भी लाभप्रद है तथा हर प्रकार के फोड़े, फुन्सी को इससे लाभ होता है। यह मालूम नहीं कि यह दवा सलीब के घावों के बाद स्वयं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने इल्हाम द्वारा बताई थी या किसी चिकित्सक के परामर्श से तैयार की गई थी। इसमें कुछ दवाएं अचूक की तरह हैं विशेष तौर पर मुर्र जिसकी चर्चा तौरात में भी आई है। बहरहाल इस दवा के प्रयोग से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के घाव कुछ दिनों में ही अच्छे हो गए और इतनी शक्ति आ गई कि आप तीन दिन में यरोशलम से जलील की ओर सत्तर कोस तक पैदल गए। अतः इस दवा की प्रशंसा में इतना कहना पर्याप्त है कि मसीह तो अन्य लोगों को अच्छा करता था परन्तु इस दवा ने मसीह को अच्छा किया। और जिन चिकित्सा की पुस्तकों में यह नुस्ख़ा लिखा

* मजूसी - अग्निपूजक, पारसी (अनुवादक)

** मुर्र - एक गोंद जो दवा में प्रयोग होता है जो एण्टीसेप्टिक का काम देता है। (अनुवादक)

गया है वे हज़ार पुस्तकों से भी अधिक हैं जिनकी सूची लिखने से बहुत विस्तार होगा। चूंकि यह नुस्ख़ा यूनानी चिकित्सकों में बहुत प्रसिद्ध है इसलिए मैं कुछ आवश्यक नहीं समझता कि सब पुस्तकों के नाम यहां लिखूं। मात्र कुछ पुस्तकें जो यहां मौजूद हैं नीचे लिख देता हूं -

उन चिकित्सा संबंधी पुस्तकों की सूची जिनमें मरहम-ए-ईसा का वर्णन है और यह भी वर्णन है कि वह मरहम हज़रत ईसा के लिए अर्थात् उनके शरीर के घावों के लिए बनाया गया था

- क़ानून शैख़ुर्रईस बू अली सीना जिल्द-3, पृष्ठ-133
- शरह क़ानून अल्लामा क़ुतुबुद्दीन शीराज़ी जिल्द-3
- कामिलुस्सनाअत लेखक अली इब्नुल अब्बास अलमजूसी जिल्द-2, पृष्ठ-602
- किताब मजमुआ-ए-बक़ाई लेखक महमूद मुहम्मद इस्माईल मुख़ातिब अज़ ख़ाक़ान ब ख़िताब पिदर मुहम्मद बक़ा ख़ान, जिल्द-2, पृष्ठ-497
- किताब तज़्किरा ऊलुल अलबाब - लेखक शैख़ दाऊद अज़्ज़रीर अलइंताकी, पृष्ठ-303
- क़राबादीन रूमी - हज़रत मसीह के युग के निकट की रचना जिसका अनुवाद मामून रशीद के समय में अरबी भाषा में हुआ। चर्म रोग।
- किताब 'उम्दतुल मुहताज' लेखक अहमद बिन हसन अर्रशीदी

अलहकीम। इस पुस्तक में मरहम-ए-ईसा इत्यादि औषधियां सौ पुस्तकों में से अपितु इस से भी अधिक पुस्तकों में से लिखी गई हैं और वे समस्त पुस्तकें फ्रेन्च भाषा में थीं।

- किताब क़राबादीन फारसी, लेखक हकीम मुहम्मद अकबर अर्ज़ानी। चर्म रोगों के बारे में।
- किताब "शिफाउल अस्क़ाम" जिल्द-2, पृष्ठ-230
- किताब मिरअतुश्शिफ़ा - लेखक हकीम नत्थू शाह हस्तलिखित प्रति चर्म रोग के बारे में
- ज़ख़ीर-ए-ख़वारिज़्म शाही चर्म रोग
- शरह क़ानून गिलानी जिल्द-3
- शरह क़ानून क़र्शी जिल्द-3
- क़राबादीन अलवी ख़ान - चर्म रोग
- किताब "इलाजुल अमराज़" लेखक हकीम मुहम्मद शरीफ़ ख़ान साहिब पृष्ठ - 893
- क़राबादीन यूनानी चर्म रोग
- तुहफ़तुलमोमिनीन बर हाशिया मख़्ज़नुल अदविय: पृष्ठ 713
- किताब मुहीत फित्तिब्ब पृष्ठ - 367
- किताब इक्सीर आ'ज़म जिल्द-4, लेखक - हकीम मुहम्मद आ'ज़म ख़ान साहिब अलमुख़ातिब नाज़िम जहां, पृष्ठ-331
- किताब कराबादीन मा'सूमी - अलमा'सूम बिन करीमुद्दीन अश्शोस्तरी शीराज़ी।
- किताब अइजाला नाफ़िअ: लि मुहम्मद शरीफ़ देहलवी - पृष्ठ-410

- किताब तिब्ब-ए-शिब्री, मुसम्मा बलवामिअ शिब्रियः लेखक सय्यद हुसैन शिब्र काज़िमी, पृष्ठ-471
- किताब मख़ज़न-ए-सुलेमानी अनुवाद इक्सीर अरबी पृष्ठ-599, अनुवादक - मुहम्मद शम्सुद्दीन साहिब बहावलपुरी
- "शिफ़ाउल अमराज़" अनुवादक मौलाना अलहकीम मुहम्मद नूर करीम पृष्ठ-282
- किताबुत्तिब्ब दाराशिकोही लेखक - नूरुद्दीन मुहम्मद अब्दुल हकीम ऐनुलमुल्क अश्शीराज़ी पृष्ठ-360
- किताब मिन्हाजुद्दुक्कान बदस्तूरुल आ'यान फ़ी आ'माल व तरकीबुन्ना फ़िअहलिल अब्दान, लेखक - अफ़्लातून-ए-ज़माना व रईस अवानह अबुलमुना इब्ने अबी नसर अलअत्तार अल इस्राईली अलहारूनी (अर्थात् यहूदी) पृष्ठ-86
- किताब ज़ुब्दतुत्तिब्ब लेखक - सय्यद इमाम अबू इब्राहीम इस्माईल बिन हसन अलहुसैनी अलजरजानी, पृष्ठ-182
- तिब्ब-ए-अकबर, लेखक मुहम्मद अकबर अरज़ानी, पृष्ठ-242
- किताब 'मीज़ानुत्तिब्ब' लेखक मुहम्मद अकबर अरज़ानी पृष्ठ-152
- 'सदीदी' लेखक रईसुल मुतकल्लिमीन इमामुल मुहक़्क़िक़ीन अस्सदीद अलकाज़रूनी, पृष्ठ-283, जिल्द-2
- किताब हादी-ए-कबीर इब्ने ज़करिया चर्म रोग
- क़राबादीन इब्ने तिल्मीज़ चर्मरोग
- क़राबादीन इब्ने अबी सादिक़ चर्म रोग

यह वे पुस्तकें हैं जिनको मैंने बतौर नमूना यहां लिखा है और यह बात विद्वानों और विशेषतः चिकित्सकों पर गुप्त नहीं है कि इनमें

अधिकतर ऐसी पुस्तकें हैं जो पहले युग में इस्लाम के बड़े-बड़े मदरसों में पढ़ाई जाती थीं और यूरोप के विद्यार्थी भी इनको पढ़ते थे और यह कहना कि बिल्कुल सच तथा अतिशयोक्ति की लेशमात्र मिलावट से भी पवित्र है कि प्रत्येक सदी में संभवतः करोड़ों लोग इन पुस्तकों के नाम से परिचित होते चले आए हैं तथा लाखों लोगों ने इनको शुरू से अन्त तक पढ़ा है और हम बड़ी दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि एशिया और यूरोप के विद्वान लोगों में से कोई भी ऐसा नहीं है कि इन कुछ महान पुस्तकों के नाम से अपरिचित हो जो इस सूची में लिखी हैं। जिस युग में हस्पानिया (स्पेन), कैसम्नो और सत्लीरनम* दारुलइल्म (ज्ञान का केन्द्र) थे। उस युग में बू अली सीना की किताब क़ानून जो तिब्ब की एक बड़ी किताब है जिसमें मरहम-ए-ईसा का नुस्ख़ः है तथा दूसरी किताबें शिफ़ा और इशारात और बशारात जो भौतिकी, खगोल तथा दर्शनशास्त्र इत्यादि में हैं बड़ी रुचि से यूरोप के लोग सीखते थे। इसी प्रकार अबू नसर फाराबी तथा अबू रैहान और इस्राईल, साबित बिन क़रः और हुनैन बिन इस्हाक़ इत्यादि विद्वानों की पुस्तकें और उनकी यूनानी से अनुवाद की हुई पुस्तकें पढ़ाई जाती थीं। निश्चय ही इन पुस्तकों के अनुवाद यूरोप के किसी भाग में अब तक मौजूद होंगे। चूंकि इस्लाम के बादशाह चिकित्सा शास्त्र इत्यादि को दिल से उन्नति देना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने यूनान की उत्तम-उत्तम पुस्तकों का अनुवाद कराया और एक लम्बे समय तक ऐसे बादशाहों में ख़िलाफ़त रही कि वे

* हस्पानिया अर्थात् अन्दुलस, कैसम्नो - अर्थात् कुस्तुमूनियह, सतलीरनम अर्थात् शन्तरीन इसी से।

देश के विस्तार की अपेक्षा ज्ञान का विस्तार अधिक चाहते थे। इन्हीं कारणों से उन्होंने न केवल यूनानी पुस्तकों के अनुवाद अरबी में कराए अपितु हिन्दुस्तान के प्रकाण्ड पंडितों को भी बड़े-बड़े वेतनों पर बुला कर चिकित्सा शास्त्र इत्यादि विद्याओं के भी अनुवाद कराए। अत: उनके उपकारों में से सत्य के अभिलाषियों पर यह बड़ा उपकार है कि उन्होंने उन रूमी तथा यूनानी इत्यादि चिकित्सा संबंधी पुस्तकों के अनुवाद कराए जिनमें मरहम-ए-ईसा मौजूद था और जिस पर शिला लेख की भांति यह लिखा हुआ था कि यह मरहम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की चोटों के लिए तैयार किया गया था। इस्लाम कालीन प्रकाण्ड दार्शनिक जैसा कि साबित हुए बिन क़र: और हुनैन बिन इस्हाक़ हैं जिन्हें चिकित्सा शास्त्र, भौतिक शास्त्र तथा दर्शनशास्त्र इत्यादि के अतिरिक्त यूनानी भाषा में अच्छी महारत थी। जब इस क़राबादीन का जिसमें मरहम-ए-ईसा था अनुवाद किया तो बुद्धिमत्ता से शलीख़ा के शब्द को जो एक यूनानी शब्द है जो बारह को कहते हैं यथावत् अरबी में लिख दिया ताकि इस बात का संकेत पुस्तकों में स्थापित रहे कि यह पुस्तक यूनानी क़राबादीन से अनुवाद की गई। इसी कारण प्राय: प्रत्येक पुस्तक में शलीख़ा का शब्द भी लिखा हुआ पाओगे।

और यह बात भी स्मरण रखने योग्य है कि यद्यपि प्राचीन सिक्के बड़ी महत्त्वपूर्ण तथा क़द्र करने योग्य वस्तुएं हैं जिन के द्वारा बड़े-बड़े ऐतिहासिक रहस्य प्रकट होते हैं परन्तु ऐसी प्राचीन पुस्तकें जो निरन्तरता के साथ प्रत्येक सदी में करोड़ों लोगों में ख्याति प्राप्त करती चली आईं तथा बड़े-बड़े मदरसों में पढ़ाई गईं और अब तक पाठ्य

पुस्तकों में सम्मिलित हैं, उनका महत्त्व एवं सम्मान उन सिक्कों तथा शिला-लेखों से हज़ारों गुना बढ़कर है, क्योंकि शिला-लेखों तथा सिक्कों में जालसाज़ी की भी गुंजाइशें हैं क्योंकि वे ज्ञान-संबंधी पुस्तकें जो अपने प्रारंभिक काल में ही करोड़ों लोगों में प्रसिद्ध होती चली आई हैं तथा प्रत्येक जाति उनकी संरक्षक एवं निरीक्षक होती रही है और अब भी है। उनके लेख निस्सन्देह ऐसे उच्च स्तरीय प्रमाण हैं जो सिक्कों तथा शिला-लेखों को उन से कुछ भी तुलना नहीं। यदि संभव हो तो किसी सिक्के या शिला-लेख का नाम तो लो जिसने ऐसी प्रसिद्धि प्राप्त की हो जैसी कि बू अली सीना की पुस्तक "क़ानून" ने। अत: मरहम-ए-ईसा सत्याभिलाषियों के लिए एक महान साक्ष्य है। यदि इस साक्ष्य को स्वीकार न किया जाए तो फिर विश्व के समस्त ऐतिहासिक प्रमाण विश्वसनीयता से गिर जाएंगे, क्योंकि यद्यपि अब तक ऐसी पुस्तकें जिनमें इस मरहम का वर्णन है लगभग एक हज़ार हैं या कुछ अधिक। परन्तु करोड़ों लोगों में ये पुस्तकें और इनके लेखक ख्याति प्राप्त हैं। अब ऐसा व्यक्ति इतिहास विद्या का शत्रु होगा जो इस व्यापक और स्पष्ट तथा शक्तिशाली प्रमाण को स्वीकार न करे। क्या यह ज़बरदस्ती चल सकती है कि इतने ज़बरदस्त प्रमाण को हम नज़र अंदाज़ कर दें और क्या हम ऐसे भारी प्रमाण पर बदगुमानी कर सकते हैं जो यूरोप और एशिया पर घेरे के समान छा गया है तथा जो यहूदियों, ईसाइयों, अग्निपूजकों और मुसलमानों के प्रसिद्ध दार्शनिकों के साक्ष्यों से पैदा हुआ हे। अत: हे खोज करने वालो ! इस उच्च प्रमाण की ओर दोड़ो और हे न्यायप्रिय स्वभावों ! इस मामले में थोड़ा विचार करो। क्या ऐसा चमकता हुआ प्रमाण इस

योग्य है कि उस पर ध्यान न दिया जाए? क्या यह उचित है कि हम इस सच्चाई के सूर्य से प्रकाश प्राप्त न करें? यह भ्रम सर्वथा व्यर्थ और निरर्थक है कि संभव है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को नुबुव्वत के समय से पूर्व चोटें लगी हों या नुबुव्वत के युग की ही चोटें हों किन्तु वे सलीब की नहीं अपितु किसी अन्य कारण से हाथ-पैर घायल हो गए हों। उदाहरणतया किसी कोठे पर से गिर गए हों और इस चोट के लिए यह मरहम तैयार किया गया हो क्योंकि नुबुव्वत के युग से पूर्व हवारी न थे और इस मरहम में हवारियों का वर्णन है। शलीख़ा का शब्द जो यूनानी है जो बारह को कहते हैं इन पुस्तकों में अब तक मौजूद है। इसके अतिरिक्त नुबुव्वत के युग से पूर्व हज़रत मसीह की कोई श्रेष्ठता स्वीकार नहीं की गई थी ताकि उसकी यादगार सुरक्षित रखी जाती और नुबुव्वत का समय मात्र साढ़े तीन वर्ष था। इस अवधि में कोई घटना चोट या गिरने को सलीबी घटना के अतिरिक्त हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में इतिहासों से सिद्ध नहीं और यदि किसी को यह विचार हो कि संभव है कि ऐसी चोटें किसी अन्य कारण से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को लगी हों तो यह प्रमाण देना उसका दायित्व है क्योंकि हम जिस घटना को प्रस्तुत करते है वह एक ऐसी प्रमाणित एवं मान्य घटना है कि न यहूदियों को उससे इन्कार है और न ईसाइयों को अर्थात् सलीब की घटना। किन्तु यह विचार कि किसी अन्य कारण से कोई चोट हज़रत मसीह को लगी होगी किसी क़ौम के इतिहास से सिद्ध नहीं। इसलिए ऐसा विचार करना जानबूझ कर सच्चाई के मार्ग को छोड़ना है। यह प्रमाण ऐसा नहीं है कि इस प्रकार के व्यर्थ बहानों से अस्वीकार किया

जा सके। अब तक कुछ पुस्तकें भी मौजूद हैं जो लेखकों की हस्तलिखित हैं। अतः एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति क़ानून बू अली सीना की उसी युग की लिखी हुई मेरे पास भी मौजूद है। तो फिर यह सर्वथा अन्याय और सच्चाई का ख़ून करना है कि ऐसे सुस्पष्ट प्रमाण को यों ही फेंक दिया जाए। इस बात पर बार-बार विचार करो और भली-भांति विचार करो कि अब तक ये पुस्तकें, यहूदियों, पारसियों, ईसाइयों, अरबों, फ़ारसियों, यूनानियों, रोमियों, जर्मन वालों, फ्रांसीसियों, यूरोप के अन्य देशों तथा एशिया के प्राचीन पुस्तकालयों में मौजूद हैं और क्या यह उचित है कि हम ऐसे प्रमाण से जिसके प्रकाश से इन्कार की आंखें फटी की फटी रह जाती हैं यों ही मुख फेर लें ? यदि ये पुस्तकें केवल मुसलमानों की लिखी तथा उन्हीं के हाथ में होतीं तो कदाचित् कोई जल्दबाज़ यह विचार कर सकता कि मुसलमानों ने ईसाई आस्था पर आक्रमण करने के लिए जाली तौर पर ये बातें अपनी पुस्तकों में लिख दी हैं, परन्तु यह विचार उन कारणों के अतिरिक्त जिन्हें हम बाद में लिखेंगे इस कारण से भी ग़लत था कि मुसलमान ऐसा किसी प्रकार का षड्यन्त्र कर सकते थे क्योंकि ईसाइयों की भांति मुसलमानों की भी यही आस्था है कि हज़रत मसीह सलीब की घटना के पश्चात् तुरंत आकाश पर चले गए तथा मुसलमान तो इस बात को मानते भी नहीं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सलीब पर खींचा गया या सलीब पर उनको चोटें पहुंचीं फिर वे जान बूझ कर ऐसा षड्यन्त्र क्योंकर कर सकते थे जो उनकी आस्था के भी विरुद्ध था। इसके अतिरिक्त अभी संसार में इस्लाम का अस्तित्व भी नहीं था जबकि रूमी तथा यूनानी आदि

भाषाओं में ऐसी पुस्तकें लिखी गईं और करोड़ों लोगों में प्रसिद्ध की गईं जिनमें मरहम-ए-ईसा का नुस्ख़ा मौजूद था और साथ ही यह व्याख्या भी मौजूद थी कि यह मरहम हवारियों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए बनाया था। ये क़ौमें अर्थात् यहूदी, ईसाई, मुसलमान तथा अग्निपूजक धार्मिक तौर पर एक दूसरे के शत्रु थे। अतः इन सबका इस मरहम को अपनी पुस्तकों में लिखना अपितु लिखने के समय अपनी धार्मिक आस्थाओं की भी परवाह न करना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह मरहम ऐसी प्रसिद्ध घटना थी कि कोई फ़िर्क़ा तथा कोई जाति इसकी इन्कारी न हो सकी। हां जब तक वह समय न आया जो मसीह मौऊद के प्रकट होने का समय था उस समय तक इन समस्त क़ौमों के दिमाग़ इस ओर नहीं गए कि यह नुस्ख़ः जो सैकड़ों पुस्तकों में लिखित तथा विभिन्न क़ौमों के करोड़ों लोगों में प्रसिद्धि पा चुका है इससे कोई ऐतिहासिक लाभ प्राप्त करें। अतः यहां हम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कह सकते कि यह ख़ुदा का इरादा था कि वह चमकता हुआ प्रहार तथा वास्तविकता दिखाने वाला प्रमाण कि जो सलीबी आस्था का अन्त करे उसके बारे में प्रारंभ से यहीं प्रारब्ध था कि मसीह मौऊद के द्वारा संसार में प्रकट हो, क्योंकि ख़ुदा के पवित्र नबी ने यह भविष्यवाणी की थी कि सलीबी धर्म न घटेगा और न उसकी उन्नति में विघ्न आएगा जब तक कि मसीह मौऊद संसार में प्रकट न हो तथा वही है जिसके हाथ पर सलीब टूटेगी। इस भविष्यवाणी में यही संकेत था कि मसीह मौऊद के समय में ख़ुदा की इच्छा से ऐसे कारण उत्पन्न हो जाएंगे जिनके द्वारा सलीबी घटना की मूल वास्तविकता स्पष्ट हो जाएगी।

तब अन्त होगा और इस आस्था की आयु पूरी हो जाएगी, परन्तु न किसी युद्ध तथा लड़ाई से अपितु मात्र आसमानी साधनों से जो ज्ञान एवं तार्किक रंग में संसार में प्रकट होंगे। यह अर्थ उस हदीस का है जो सही बुख़ारी तथा दूसरी किताबों में लिखा है। इसलिए अवश्य था कि आसमान उन बातों एवं उन प्रमाणों तथा उन ठोस तथा निश्चित प्रमाणों को प्रकट न करता जब तक कि मसीह मौऊद संसार में न आता और ऐसा ही हुआ तथा अब जिस समय से कि वह मौऊद प्रकट हुआ प्रत्येक की आंख खुलेगी और विचार करने वाले विचार करेंगे क्योंकि ख़ुदा का मसीह आ गया। अतः अवश्य है कि दिमाग़ों में ज्ञान तथा दिलों में ध्यान, लेखनियों में ज़ोर और कमरों में साहस पैदा हो तथा प्रत्येक भाग्यशाली को विवेक प्रदान किया जाएगा और प्रत्येक सन्मार्गप्राप्त को बुद्धि दी जाएगी, क्योंकि जो वस्तु आसमान में चमकती है वह पृथ्वी को भी अवश्य प्रकाशित करती है। मुबारक वह जो इस प्रकाश से भाग प्राप्त करे और क्या ही सौभाग्यशाली वह व्यक्ति है जो उस प्रकाश में से कुछ पाए। जैसा कि तुम देखते हो कि फल अपने समय पर आते हैं इसी प्रकार प्रकाश भी अपने समय पर ही उतरता है तथा इससे पूर्व कि वह स्वयं उतरे उसे कोई उतार नहीं सकता, और जबकि वह उतरे तो कोई उसे रोक नहीं सकता परन्तु अवश्य है कि झगड़े हों और मतभेद हो किन्तु अन्ततः सच्चाई की विजय है, क्योंकि यह बात मनुष्य से नहीं है और न किसी मनुष्य के हाथों से अपितु उस ख़ुदा की ओर से है जो मौसमों में परिवर्तन करता तथा समयों को फेरता और दिन से रात और रात से दिन निकालता है। वह अन्धकार भी पैदा करता है परन्तु चाहता प्रकाश

को है, वह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) को भी फैलने देता है परन्तु प्रेम उसका तौहीद (एकेश्वरवाद) से ही है और नहीं चाहता कि उसका प्रताप दूसरे को दिया जाए। जब से कि मनुष्य ने जन्म लिया है उस समय तक कि मिट जाए ख़ुदा का नियम यही है कि वह तौहीद का हमेशा समर्थन करता है उसने जितने नबी भेजे सब इसलिए आए थे ताकि मनुष्यों और दूसरी सृष्टियों की उपासना दूर करके संसार में ख़ुदा की उपासना स्थापित करें तथा उनकी सेवा यही थी कि ला इलाहा इल्लल्लाह का विषय ज़मीन पर चमके जैसा कि वह आसमान पर चमकता है। अत: उन सब में से बड़ा वह है जिसने इस विषय को बहुत चमकाया जिसने पहले झूठे उपास्यों की कमज़ोरी सिद्ध की तथा ज्ञान और शक्ति की दृष्टि से उनका तुच्छ होना सिद्ध किया और जब सब कुछ सिद्ध हो चुका तो फिर उस स्पष्ट विजय की सदैव के लिए यादगार यह छोड़ी कि **ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।** उसने केवल प्रमाण रहित दावे के तौर पर ला इलाहा इल्लल्लाह नहीं कहा अपितु उसने पहले प्रमाण देकर तथा असत्य का खण्डन करके फिर लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि देखो उस ख़ुदा के अतिरिक्त और कोई ख़ुदा नहीं जिसने तुम्हारी समस्त शक्तियां तोड़ दीं और समस्त शेखियां मिटा दीं। अत: इस प्रमाणित बात को स्मरण कराने के लिए सदैव के लिए यह मुबारक कलिमा सिखाया कि ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।

चौथा अध्याय

(उन गवाहियों के वर्णन में जो एतिहासिक पुस्तकों से हमें मिली हैं)

चूंकि इस अध्याय में विभिन्न प्रकार की गवाहियां हैं इसलिए क्रम की शुद्धता के लिए हम इसे कई भागों पर विभाजित कर देते हैं और वह ये हैं :-

प्रथम भाग

(उन गवाहियों के वर्णन में जो उन इस्लामी पुस्तकों से ली गई हैं जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के भ्रमण को सिद्ध करती हैं)

पुस्तक 'रौज़तुस्सफ़ा' एक प्रसिद्ध इतिहास की पुस्तक है। उसके पृष्ठ-130, 131, 132, 133, 134, 135 में फारसी भाषा में वह इबारत लिखी है जिसके अनुवाद का सारांश हम नीचे लिखते हैं। और वह यह है :-

"हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम मसीह इस कारण रखा गया कि वह भ्रमण बहुत करते थे। एक ऊनी टोपी उनके सिर पर होती थी और एक ऊनी कुर्ता पहने रहते थे तथा एक डंडा हाथ में होता था, और हमेशा एक देश से दूसरे देश और एक शहर से दूसरे शहर भ्रमण करते थे जहां रात पड़ जाती वहीं ठहर जाते थे। जंगल की सब्ज़ी खाते थे तथा जंगल का पानी पीते और पैदल सैर करते थे। एक बार भ्रमण के युग में उनके साथियों ने उनके लिए एक घोड़ा खरीदा और एक दिन सवारी की परन्तु चूंकि घोड़े के दाना-पानी और चारे की व्यवस्था न हो सकी इसलिए उसे वापस कर दिया। वह

अपने देश से यात्रा करके नसीबैन में पहुंचे जो उनके देश से कई सौ कोस की दूरी पर था और आपके साथ कुछ हवारी भी थे। आपने हवारियों को प्रचार के लिए शहर में भेजा, परन्तु उस शहर में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तथा उनकी मां के बारे में ग़लत और वास्तविकता के विपरीत बातें पहुंची हुई थीं, इसलिए उस शहर के अधिकारी ने हवारियों को गिरफ़्तार कर लिया फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बुलाया। आपने चमत्कारी बरकत से कुछ रोगियों को ठीक किया तथा और भी कई चमत्कार दिखाए इसलिए नसीबैन के देश का बादशाह अपनी समस्त सेना और निवासियों सहित आप पर ईमान ले आया और भोजन का थाल उतरने का क़िस्सा जो पवित्र क़ुर्आन में है वह घटना भी भ्रमण के दिनों की है।"

यह सारांश वर्णन 'तारीख़ रौज़तुस्सफ़ा' की पुस्तक का है। यहां पुस्तक के लेखक ने बहुत से बेकार और व्यर्थ तथा बुद्धि से दूर चमत्कार भी हज़रत ईसा[अ.] की ओर मंसूब किए हैं जिनको हम खेद के साथ छोड़ते हैं तथा अपनी इस पुस्तक को उन झूठ व्यर्थ तथा अतिशयोक्तिपूर्ण बातों से पवित्र रख कर उससे केवल असल मतलब लेते हैं जिससे यह परिणाम निकलता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम भ्रमण करते-करते नसीबैन तक पहुंच गए थे। नसीबैन मुसिल तथा शाम के मध्य एक शहर है जिसे अंग्रेज़ी मानचित्रों में निसीबस के नाम से लिखा है। जब हम शाम देश से फ़ारस की ओर यात्रा करें तो हमारे मार्ग में नसीबैन आएगा और वह बैतुल मक़दस से लगभग साढ़े चार सौ कोस है और फिर नसीबैन से लगभग अड़तालीस मील की दूरी पर मुसिल है जो बैतुल मक़दस से पांच सौ मील की दूरी

पर है। मुसिल से फ़ारस की सीमा केवल सौ मील रह जाती है। इस हिसाब से नसीबैन फ़ारस की सीमा से डेढ़ सौ मील पर है तथा फ़ारस की पूर्वी सीमा अफ़ग़ानिस्तान के शहर हिरात तक समाप्त होती है अर्थात् फ़ारस की ओर हिरात अफ़ग़ानिस्तान की पश्चिमी सीमा पर स्थित है और फ़ारस की पश्चिमी सीमा से लगभग नौ सौ मील की दूरी पर है और हिरात से ख़ैबर घाटी तक लगभग पांच सौ मील की दूरी है। देखिए यह मानचित्र।
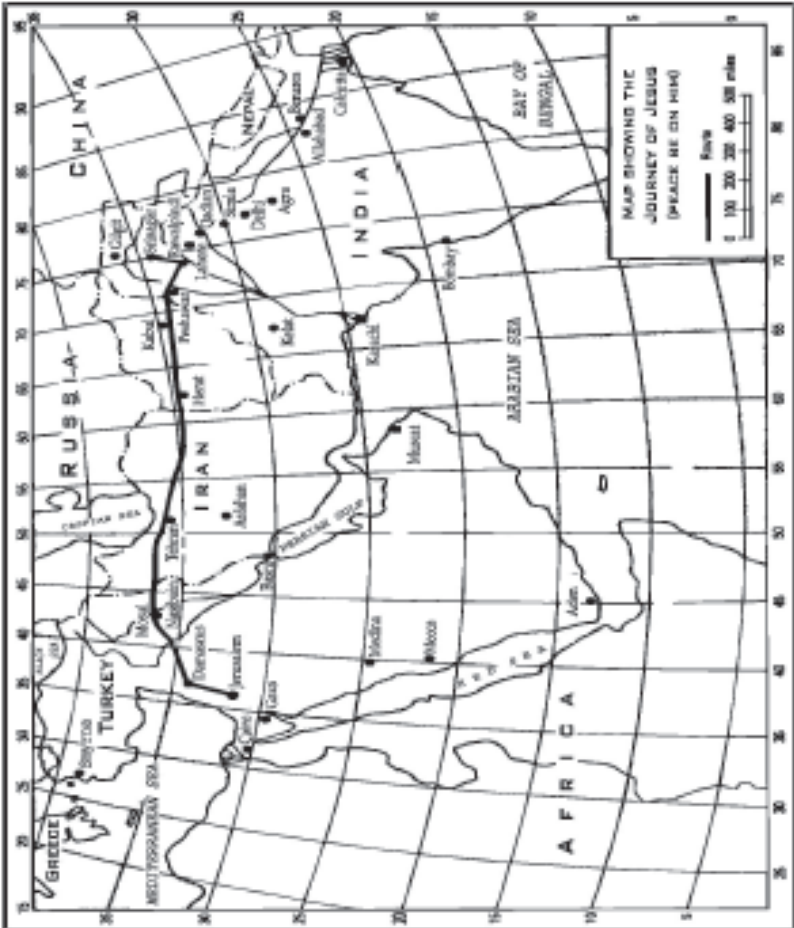
यह उन देशों तथा शहरों का मानचित्र है जिन से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम कश्मीर की ओर यात्रा करते हुए गुज़रे। इस भ्रमण और यात्रा से आपका इरादा यह था कि प्रथम उन बनी इस्राईल से मिलें जिनको शाह सलमंज़र पकड़ कर मीदिया देश में ले गया था।* स्मरण रहे कि ईसाइयों के प्रकाशित मानचित्र में मीदिया ख़िज़र सागर के दक्षिण में दिखाया गया है जहां आजकल फ़ारस देश स्थित है। इससे समझ सकते हैं कि कम से कम मीदिया उस देश का एक भाग था जिसे आजकल फ़ारस कहते हैं और फ़ारस की पूर्वी सीमा अफ़ग़ानिस्तान से संलग्न है और उसके दक्षिण में समुद्र है तथा पश्चिम में रोम देश। बहरहाल यदि "रौज़तुस्सफ़ा" के वर्णन पर विश्वास किया जाए तो मालूम होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्साम का नसीबैन की ओर यात्रा करना इस उद्देश्य से था ताकि फ़ारस के मार्ग से अफ़ग़ानिस्तान में आएं और उन खोए हुए यहूदियों का

---

* यू.सी.बी.एस.ए. ईसाई यूनान का इतिहास जिसको 'हीनमर' नामक लन्दन निवासी ने सन् 1650 ई. में अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद किया उसके प्रथम अध्याय के चौदहवें भाग में एक पत्र है जिससे ज्ञात होता है कि एक बादशाह अबगिरस नामक ने फ़रात नदी के पार से हज़रत ईसा को अपने पास बुलाया था। अबगिरस का पत्र हज़रत ईसा की ओर तथा हज़रत ईसा का उत्तर बहुत झूठ तथा अतिशयोक्ति से भरा हुआ है परन्तु सच्ची बात इतनी मालूम होती है कि उस बादशाह ने यहूदियों का अत्याचार सुन कर हज़रत ईसा को अपने पास शरण देने के लिए बुलाया था तथा बादशाह का विचार था कि यह सच्चा नबी है। इसी से।

जो अन्ततः अफ़ग़ान के नाम से प्रसिद्ध हुए सच की ओर बुलाए।*
अफ़ग़ान का नाम इब्रानी मालूम होता है। यह शब्द मिश्रित है जिसका अर्थ बहादुर है। मालूम होता है कि उन्होंने अपनी विजयों के समय यह बहादुर की उपाधि को अपने लिए निर्धारित किया।

अतः कलाम का तात्पर्य यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अफ़ग़ानिस्तान से होते हुए पंजाब की ओर आए इस इरादे से कि पंजाब और हिन्दुस्तान देखते हुए फिर कश्मीर की ओर जाएं। यह तो स्पष्ट है कि अफ़ग़ानिस्तान और कश्मीर की सीमा को पृथक करने वाला चितराल का क्षेत्र तथा कुछ भाग पंजाब का है। यदि अफ़ग़ानिस्तान से कश्मीर में पंजाब के मार्ग से आएं तो लगभग अस्सी कोस अर्थात् एक सौ तीस मील की दूरी तय करनी पड़ती है और चितराल के मार्ग से सौ कोस की दूरी है। परन्तु हज़रत ईसा ने बड़ी बुद्धिमत्ता से अफ़ग़ानिस्तान का मार्ग पकड़ा ताकि इस्राईल की खोई हुई भेड़ें जो अफ़ग़ान थे लाभ प्राप्त करें और कश्मीर की पश्चिमी सीमा तिब्बत से संलग्न है। इसलिए कश्मीर में आकर सरलपूर्वक तिब्बत में जा सकते थे तथा पंजाब में प्रवेश करके उनके लिए कुछ कठिन न था कि इससे पूर्व कि कश्मीर और तिब्बत की ओर आएं हिन्दुस्तान के

* तौरात में बनी इस्राईल के लिए वादा था कि यदि तुम अन्तिम नबी पर ईमान लाओगे तो अन्तिम युग में बहुत से संकटों के पश्चात् तुम्हें फिर हुकूमत और बादशाहत प्राप्त होगी। अतः वह वादा इस प्रकार से पूरा हुआ कि बनी इस्राईल की दस क़ौमों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इसी कारण अफ़ग़ानों में बड़े-बड़े बादशाह हुए तथा कश्मीरियों में भी। इसी से।

विभिन्न स्थानों का भ्रमण करें। अतः जैसा कि इस देश का प्राचीन इतिहास बताता है यह बात सर्वथा अनुमान के अनुकूल है कि हज़रत मसीह ने नेपाल तथा बनारस इत्यादि स्थानों का भ्रमण किया होगा और फिर जम्मू से या रावलपिण्डी के मार्ग से कश्मीर की ओर गए होंगे। चूंकि वह एक ठण्डे देश के व्यक्ति थे, इसलिए यह निश्चित बात है कि इन देशों में संभवतः वह केवल सर्दियों तक ही ठहरे होंगे और मार्च के अन्त या अप्रैल के प्रारंभ में कश्मीर की ओर कूच किया होगा और चूंकि वह शाम देश के बिल्कुल समान है इसलिए यह भी निश्चित है कि इस देश में स्थायी निवास धारण कर लिया होगा। इसके साथ यह भी विचार है कि अपनी आयु का कुछ भाग अफ़ग़ानिस्तान में भी रहे होंगे और कुछ असंभव नहीं कि वहां विवाह भी किया हो। अफ़ग़ानों में एक क़ौम ईसाख़ैल कहलाती है। क्या आश्चर्य है कि वे ईसा की ही सन्तान हों, किन्तु खेद कि अफ़ग़ानों की जाति की ऐतिहासिक संघटन नितान्त अस्त-व्यस्त है, इसलिए उनके जातिगत वर्णनों से कोई वास्तविकता पैदा करना नितान्त कठिन कार्य है। बहरहाल इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि अफ़ग़ान बनी इस्राईल में से हैं जैसा कि कश्मीरी भी बनी इस्राईल में से हैं तथा जिन लोगों ने अपनी पुस्तकों में इसके विपरीत लिखा है उन्होंने बहुत धोखा खाया है और जलाली (आध्यात्मिक) सोच-विचार से काम नहीं लिया। अफ़ग़ान इस बात को स्वीकार करते हैं कि वे क़ैस की सन्तान में से हैं और क़ैस बनी इस्राईल में से है। जो भी हो यहां इस बहस को लम्बा करने की आवश्यकता नहीं। हम अपनी एक पुस्तक में इस बहस को पूर्ण तौर पर लिख चुके हैं। यहां केवल हज़रत मसीह

की यात्रा का वर्णन है जो नसीबैन के मार्ग से अफ़ग़ानिस्तान होकर तथा पंजाब से गुज़र कर कश्मीर तथा तिब्बत तक हुई। इसी लम्बी यात्रा के कारण आप का नाम नबी सय्याह (भ्रमण करने वाला) अपितु सय्याहों का सरदार रखा गया। अतः एक इस्लामी विद्वान इमाम आलिम अल्लामा अर्थात् ख़ुदा के वली अबी बक्र मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अलवलीद अलफ़हरी अत्तरतूशी अलमालिकी जो अपनी प्रतिष्ठा एवं श्रेष्ठता में विश्व विख्यात हैं अपनी पुस्तक "सिराजुल मुलूक" में जो मिस्र के ख़ैरियः प्रेस में सन् 1306 हिज्री में छपी है। यह इबारत हज़रत मसीह के पक्ष में लिखते हैं जो पृष्ठ-6 में लिखी है -

"اين عيسٰى روح الله و كلمته رأس الزاهدين و امام السائحين"

अर्थात् कहां है ईसा रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह जो संयमियों का सरदार और सय्याहों (पर्यटकों) का इमाम था अर्थात् वह मृत्यु पा गया है। और ऐसे-ऐसे मनुष्य भी संसार में न रहे। देखो यहां इस विद्वान ने हज़रत ईसा को न केवल सय्याह (पर्यटक) अपितु सय्याहों का इमाम लिखा है। इसी प्रकार "लिसानुल अरब" के पृष्ठ 431 में लिखा है :

قيل سُمِّيَ عيسٰى بمسيح لانّهٗ كان سائحًا فى الارض لا يستقرّ

अर्थात् ईसा का नाम मसीह इसलिए रखा गया कि वह पृथ्वी में भ्रमण करता रहता था और कहीं, किसी स्थान पर उसको ठहराव न था। यही विषय "ताजुलउरूस शरह क़ामूस" में भी है और यह भी लिखा है कि मसीह वह होता है जो भलाई और बरकत के साथ स्पर्श किया गया हो अर्थात् उसके स्वभाव को भलाई व बरकत दी गई हो

यहां तक कि उसका छूना (स्पर्श करना) भी भलाई व बरकत पैदा करता हो और यह नाम हज़रत ईसा को दिया गया और जिसको चाहता है अल्लाह तआला यह नाम देता है। और इसके मुकाबले पर एक वह भी मसीह है जो बुराई और ला'नत के साथ छुआ गया अर्थात् उसका स्वभाव बुराई एवं ला'नत पर पैदा किया गया यहां तक कि उसका छूना भी बुराई और ला'नत और पथभ्रष्टता पैदा करता है। और यह नाम मसीह दज्जाल को दिया गया। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को जो उसका सहस्वभाव हो और ये दोनों नाम अर्थात् मसीह भ्रमण करने वाला और मसीह बरकत दिया गया। ये परस्पर विपरीत नहीं हैं तथा पहले अर्थ दूसरे को असत्य नहीं कर सकते, क्योंकि ख़ुदा तआला का यह भी स्वभाव है कि एक नाम किसी को प्रदान करता है तथा उससे कई अर्थ अभिप्राय होते हैं और सब उस पर चरितार्थ होते हैं। अतः इसका सारांश यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का सय्याह (पर्यटक) होना इस्लामिक इतिहास से इतना सिद्ध है कि यदि उन समस्त पुस्तकों में से नक़ल किया जाए तो मेरा अनुमान है कि वह लेख अपने विस्तार के कारण एक मोटी पुस्तक हो सकती है। इसलिए इसी को पर्याप्त समझा जाता है।

दूसरी फ़स्ल

(उन ऐतिहासिक पुस्तकों की गवाही में जो बौद्ध धर्म की पुस्तकें हैं)

स्पष्ट हो कि बौद्ध धर्म की पुस्तकों में से भिन्न-भिन्न प्रकार की गवाहियां हमें प्राप्त हुई हैं, जिनको एक साथ देखने से ठोस तथा निश्चित तौर पर ज्ञात होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अवश्य इस देश पंजाब तथा कश्मीर इत्यादि में आए थे। उन गवाहियों को हम नीचे लिखते हैं ताकि प्रत्येक लेखक उन्हें प्रथम ध्यानपूर्वक पढ़े और फिर उनको अपने हृदय में एक निरन्तर क्रम देकर स्वयं ही उपरोक्त परिणाम तक पहुंच जाए, और वह ये हैं :-

प्रथम वे उपाधियां जो बुद्ध को दी गईं मसीह की उपाधियों से समान हैं और ऐसी ही वे घटनाएं जो बुद्ध के सामने आईं मसीह के जीवन की घटनाओं से मिलती हैं, किन्तु बौद्ध धर्म से अभिप्राय उन स्थानों का धर्म है जो तिब्बत की सीमाओं अर्थात् लेह, लासा, गिलगित और हमस इत्यादि में पाया जाता है जिनके बारे में सिद्ध हुआ है कि हज़रत मसीह उन स्थानों में गए थे। उपाधियों की समानता में यह प्रमाण पर्याप्त है कि उदाहरण के तौर पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने अपनी शिक्षाओं में अपना नाम नूर रखा है, ऐसा ही गौतम का नाम बुद्ध रखा गया है जो संस्कृत में नूर के अर्थों में आता है और इंजील में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम उस्ताद भी है ऐसा ही बुद्ध का नाम 'सास्ता' अर्थात् उस्ताद है। ऐसा ही हज़रत मसीह का नाम इंजील में मुबारक रखा गया है, इसी प्रकार बुद्ध का नाम भी 'सुगत' है अर्थात् मुबारक है। ऐसा ही हज़रत मसीह

का नाम शाहज़ादा है और इंजील में मसीह का एक नाम यह भी है कि वह अपने आने के उद्देश्य को पूरा करने वाला है, ऐसा ही बुद्ध का नाम बुद्ध की पुस्तकों में सिद्धार्थ रखा गया है अर्थात् अपने आने का उद्देश्य पूरा करने वाला, तथा इंजील में हज़रत मसीह का एक नाम यह भी है कि वह थके-हारों को शरण देने वाला है। ऐसा ही कुछ बुद्ध की पुस्तकों में बुद्ध का नाम 'आश्रण शरण' अर्थात् निराश्रयों को आश्रय (श्रण) देने वाला। इंजील में हज़रत मसीह बादशाह भी कहलाए हैं यद्यपि आकाश की बादशाहत अभिप्राय ले ली, ऐसा ही बुद्ध भी बादशाह कहलाया है और घटनाओं की समानता का यह प्रमाण है कि जैसा कि इंजील में लिखा है कि हज़रत मसीह[अ.] शैतान से आज़माए गए और शैतान ने उनको कहा कि यदि तू मुझे सज्दह करे तो समस्त संसार की दौलतें और बादशाहतें तेरे लिए होंगी। यही आज़मायश बुद्ध की भी की गई और शैतान ने उसको कहा कि यदि तू मेरा यह आदेश स्वीकार कर ले कि इन फ़क़ीरों वाले कामों से पृथक हो जाए और घर की ओर चला जाए तो मैं तुझे बादशाहत का वैभव और प्रतिष्ठा प्रदान करूंगा, परन्तु जैसा कि मसीह ने शैतान की आज्ञा का पालन नहीं किया ऐसा ही लिखा है कि बुद्ध ने भी न किया। देखिए पुस्तक टी.डब्ल्यू.राइस डेविड्स बुद्धइज़्म और पुस्तक मोनियर विलियम्स बुद्धइज़्म।*

अतः इस से स्पष्ट होता है कि जो कुछ हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम

---

* और देखो चाइनीज़ बुद्धइज़्म - लेखक एडकिन्स, 'बुद्ध' लेखक ओल्डन बर्ग अनुवाद डब्ल्यू होई लाइफ़ आफ़ बुद्ध अनुवाद राक हिल। इसी से।

इंजील में कई प्रकार की उपाधियां अपनी ओर सम्बद्ध करते हैं यही उपाधियां बुद्ध की पुस्तकों में जो इससे बहुत समय पीछे लिखी गई हैं बुद्ध की ओर सम्बद्ध की गई हैं और जैसा कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम शैतान से आज़माए गए ऐसा ही इन पुस्तकों में बुद्ध के बारे में दावा किया गया है कि वह भी शैतान से परीक्षा लिया गया अपितु उन पुस्तकों में उस से अधिक बुद्ध की आज़मायश का वर्णन है तथा लिखा है कि जब शैतान बुद्ध को दौलत और बादशाहत का लालच दे चुका तब बुद्ध को विचार पैदा हुआ कि क्यों अपने घर की ओर वापस न जाए किन्तु उसने विचार का अनुसरण न किया। फिर एक विशेष रात्रि में वही शैतान उसे पुनः मिला और अपनी सम्पूर्ण सन्तान साथ लाया और भयावह रूप बना कर उसको भयभीत किया और बुद्ध को वे शैतान सांप के समान दिखाई दिए जिनके मुख से अग्नि के शोले निकल रहे थे और उन सांपों ने उसकी ओर विष और आग फेंकनी आरंभ की परन्तु विष पुष्प बन जाते थे और आग बुद्ध के चारों ओर एक घेरा बना लेती थी। फिर जब इस प्रकार से सफलता न मिली तो शैतान ने अपनी सोलह लड़कियों को बुलाया और उनको कहा कि तुम अपनी सुन्दरता बुद्ध पर प्रकट करो परन्तु इससे भी बुद्ध का हृदय न डगमगाया और शैतान अपने इरादों में असफल रहा तथा शैतान ने अनेकों उपाय किए परन्तु बुद्ध की दृढ़ता के समक्ष उनको कुछ सफलता न मिली तथा बुद्ध उच्च से उच्च श्रेणियां तय करता चला गया और अन्ततः एक लम्बी रात्रि के पश्चात् अर्थात् कठोर और स्थायी परीक्षाओं के पीछे बुद्ध ने अपने शत्रु अर्थात् शैतान को पराजित किया और उस पर सच्चे ज्ञान का

प्रकाश प्रकट हो गया और प्रातः होते ही अर्थात् परीक्षा से अवकाश पाते ही उसे समस्त बातों का ज्ञान हो गया और जब प्रातः काल यह महायुद्ध समाप्त हुआ वह बुद्ध धर्म का जन्म दिवस था। उस समय गौतम की आयु पैंतीस वर्ष की थी तथा उस समय उसे बुद्ध अर्थात् नूर और प्रकाश की उपाधि मिली और जिस वृक्ष के नीचे वह उस समय बैठा हुआ था वह वृक्ष प्रकाश के वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध हो गया। अब इंजील खोल कर देखो कि यह शैतान द्वारा परीक्षा जिस से बुद्ध आज़माया (परखा) गया हज़रत मसीह की परीक्षा से कितनी समानता रखती है, यहां तक कि परीक्षा के समय में जो हज़रत मसीह की आयु थी लगभग वही बुद्ध की आयु थी। और जैसा कि बुद्ध की पुस्तकों से सिद्ध होता है कि शैतान वास्तव में मनुष्य के रूप में साक्षात् होकर लोगों को देखते हुए बुद्ध के पास नहीं आया अपितु वह एक विशेष दृश्य था जो बुद्ध की आंखों तक ही सीमित था और शैतान का वार्तालाप शैतानी इल्हाम था अर्थात् शैतान अपने दृश्य के साथ बुद्ध के हृदय में यह इल्क़ा* भी करता था कि यह मार्ग छोड़ देना चाहिए और मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिए। मैं तुझे संसार की समस्त दौलतें दे दूंगा। इसी प्रकार ईसाई अन्वेषक स्वीकार करते हैं कि शैतान जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास आया था वह भी इस प्रकार नहीं आया था कि यहूदियों के सामने मनुष्य की भांति उनके गली-कूचों से गुज़र कर अपने साक्षत् रूप में हज़रत मसीह को आकर मिला हो और मनुष्यों की भांति ऐसा वार्तालाप किया हो कि दर्शकों ने भी सुना हो अपितु यह भेंट भी एक कश्फ़ी रंग में भेंट

* परोक्ष से हृदय में कोई बात आना इल्क़ा कहलाता है। (अनुवादक)

थी जो हज़रत मसीह की आंखों तक सीमित थी और बातें भी इल्हामी रंग में थीं अर्थात् शैतान ने जैसा कि उसकी सदैव से पद्धति है अपने इरादों को भ्रमों के रूप में हज़रत मसीह के हृदय में डाला था परन्तु उन शैतानी इल्हामों को हज़रत मसीह के दिल ने स्वीकार न किया अपितु बुद्ध के समान उनको अस्वीकार किया।

अब विचार करने का स्थान है कि बुद्ध और हज़रत मसीह में इतनी समानता क्यों पैदा हुई। इस बारे में आर्य तो कहते हैं कि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह ने इस यात्रा के समय जब उन्होंने हिन्दुस्तान की ओर यात्रा की थी तो बुद्ध धर्म की बातों को सुनकर और बुद्ध की ऐसी घटनाओं से अवगत होकर और फिर अपने देश में वापस जाकर उसी के अनुसार इंजील बना ली थी और बुद्ध के सदाचारों से चोरी करके सदाचार संबंधी शिक्षा लिखी थी और जैसा कि बुद्ध ने स्वयं को नूर (प्रकाश) कहा और ज्ञान कहा तथा स्वयं के लिए दूसरी उपाधियां अपने लिए निर्धारित कीं वही समस्त उपाधियां मसीह ने अपनी ओर सम्बद्ध कर दी थीं, यहां तक कि बुद्ध का वह समस्त क़िस्सा जिसमें वह शैतान से परखा गया अपना क़िस्सा ठहरा दिया परन्तु यह आर्यों की ग़लती और बेईमानी है। यह बात कदापि सही नहीं है कि हज़रत मसीह सलीब की घटना से पूर्व हिन्दुस्तान की ओर आए थे और न उस समय यात्रा की कोई आवश्यकता सामने थी अपितु इसकी आवश्यकता उस समय हुई जबकि शाम देश के यहूदियों ने हज़रत मसीह को स्वीकार न किया और उनको अपने विचार में सलीब दे दी जिस से ख़ुदा तआला की बारीक नीति ने हज़रत मसीह को बचा लिया तब वह उस देश के यहूदियों के साथ

ख़ुदा का सन्देश पहुंचाने के कर्त्तव्य और हमदर्दी समाप्त कर चुके और उस बुराई के कारण यहूदियों के हृदय ऐसे कठोर हो गए कि वे इस योग्य न रहे कि सच्चाई को स्वीकार करें। उस समय हज़रत मसीह ने ख़ुदा तआला से यह सूचना पाकर कि यहूदियों के दस खोए हुए फ़िर्क़े हिन्दुस्तान की ओर आ गए हैं उन देशों की ओर कूच किया और चूंकि यहूदियों का एक गिरोह बुद्ध धर्म में प्रवेश कर चुका था इसलिए अवश्य था कि वह सच्चा नबी बुद्ध धर्म के लोगों की ओर ध्यान देता। अत: उस समय बुद्ध धर्म के विद्वानों को जो मसीहा बुद्ध की प्रतीक्षा में थे यह अवसर प्राप्त हुआ कि उन्होंने हज़रत मसीह की उपाधियां और उनकी कुछ नैतिक शिक्षाएं जैसी कि यह कि **"अपने शत्रुओं से प्रेम करो और बुराई का मुक़ाबला न करो"** इसके अतिरिक्त हज़रत मसीह का बग्वा अर्थात् गोरा रंग होना जैसा कि गौतम बुद्ध ने भविष्यवाणी में वर्णन किया था ये सब लक्षण देखकर उनको बुद्ध ठहरा दिया तथा यह भी संभव है कि मसीह की कुछ घटनाएं, उपाधियां तथा शिक्षाएं उसी युग में गौतम बुद्ध की ओर भी जान बूझ कर या भूल से सम्बद्ध कर दी हों क्योंकि हिन्दू हमेशा इतिहास लेखन में सदैव बहुत अपरिपक्व (कच्चे) रहे हैं और बुद्ध की घटनाएं हज़रत मसीह के युग तक नहीं लिखे गए थे। इसलिए बुद्ध के विद्वानों के लिए बड़ी गुंजायश थी कि जो कुछ चाहें बुद्ध की ओर सम्बद्ध कर दें। अत: यह बात अनुमान के अनुकूल है कि जब उन्होंने हज़रत मसीह की घटनाएं और नैतिक शिक्षा से सूचना पाई तो उन बातों को अपनी ओर से अन्य कई बातें मिला कर बुद्ध

की ओर सम्बद्ध कर दिया होगा।* अत: आगे चलकर हम इस बात का प्रमाण देंगे कि यह नैतिक शिक्षा का भाग जो बुद्ध धर्म की पुस्तकों में इंजील के अनुसार पाया जाता है और ये प्रकाश की उपाधियां इत्यादि जो मसीह की भांति बुद्ध के संबंध में लिखी हुई सिद्ध होती हैं और ऐसा ही शैतान द्वारा परीक्षा। ये सब बातें उस समय बुद्ध धर्म की पुस्तकों में लिखे गए थे, जबकि हज़रत मसीह इस देश में सलीबी उपद्रव के पश्चात् पधारे थे।

फिर बुद्ध की एक और समानता हज़रत मसीह से पाई जाती है कि बौद्ध धर्म में लिखा है कि बुद्ध उन दिनों में जब शैतान से आज़माया गया रोज़े (उपवास) रखता था और उसने चालीस रोज़े रखे तथा इंजील पढ़ने वाले जानते हैं कि हज़रत मसीह ने भी चालीस रोज़े रखे थे।

जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है बुद्ध और मसीह की नैतिक शिक्षा में इतनी अधिक समानता और अनुकूलता है कि प्रत्येक ऐसा व्यक्ति आश्चर्य की दृष्टि से देखेगा जो दोनों शिक्षाओं का ज्ञान रखता होगा। उदाहरणतया इंजीलों में लिखा है कि बुराई का मुकाबला न करो और अपने शत्रुओं से प्रेम करो और ग़रीबी से जीवन व्यतीत

---

* नोट :- हम इस से इन्कार नहीं कर सकते कि बुद्ध धर्म में प्राचील काल से एक बड़ा भाग शिक्षा का मौजूद है परन्तु इसके साथ हम यह भी कहते हैं कि इसमें से वह भाग जो बिल्कुल इंजील की शिक्षा, इंजील के उदाहरण और इंजील की इबारतें हैं यह भाग निस्सन्देह उस समय बुद्ध की पुस्तकों में मिलाया गया है जब हज़रत मसीह इस देश में पहुंचे। इसी से।

करो और अभिमान, झूठ और लालच से बचो और यही शिक्षा बुद्ध की है अपितु उस में इस से अधिक ज़ोर-शोर है, यहां तक कि प्रत्येक जानवर अपितु कीड़ों-मकोड़ों की हत्या को भी पाप में सम्मिलित किया है। बुद्ध की शिक्षा में बड़ी बात यह बताई गई है कि समस्त संसार की सहानुभूति और हमदर्दी करो और समस्त इन्सानों और जानवरों की भलाई चाहो तथा परस्पर एकता और प्रेम पैदा करो और यही शिक्षा इंजील की है और फिर जैसा कि हज़रत मसीह ने विभिन्न देशों की ओर अपने शिष्यों को भेजा और स्वयं भी एक देश की ओर यात्रा की। ये बातें बुद्ध की जीवनी में भी पाई जाती हैं। अतः "बुद्धइज़्म" (लेखक सर मोनियर विलियम) में लिखा है कि बुद्ध ने अपने शिष्यों को संसार में प्रचार के लिए भेजा और उन को इस प्रकार से सम्बोधित किया — "बाहर जाओ और हर ओर फिर निकलो और संसार की सहानुभूति तथा देवताओं और मनुष्यों की भलाई के लिए एक-एक होकर विभिन्न रूपों में निकल जाओ और यह मुनादी (घोषणा) करो कि पूर्ण रूप से संयमी बनो। ब्रह्मचारी अर्थात् अकेले तथा कुंआरे रहने की आदत डालो।"

और कहा कि —

"मैं भी इस बात की मुनादी के लिए जाता हूं।"

और बुद्ध बनारस की ओर गया तथा उसने उस ओर बहुत से चमत्कार दिखाए और उसने एक नितान्त प्रभावी सदुपदेश एक पहाड़ी पर दिया जैसा कि मसीह ने एक पहाड़ी पर दिया था और फिर उसी पुस्तक में लिखा है कि बुद्ध अधिकतर उदाहरणों में उपदेश दिया करता था और भौतिक वस्तुओं को लेकर रूहानी (आध्यात्मिक)

बातों को उन के द्वारा प्रस्तुत किया करता था।

अत: विचार करना चाहिए कि यह नैतिक शिक्षा और उपदेश-शैली अर्थात् उदाहरणों में वर्णन करना यह समस्त शैली हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की है। जब हम दूसरे प्रसंगों को अपनी दृष्टि के सामने रख कर इस शिक्षा की शैली और नैतिक शिक्षा को देखते हैं तो साथ ही हमारे हृदय में आता है कि यह सब बातें हज़रत मसीह की शिक्षा की नक़ल हैं जबकि वह इस देश हिन्दुस्तान में पधारे और अनेकों स्थानों पर उन्होंने उपदेश भी दिए तो उन दिनों में बौद्ध धर्म वालों ने उन से भेंट करके और उनको बरकतों वाला पाकर अपनी पुस्तकों में ये बातें लिख लीं अपितु उनको बुद्ध ठहरा दिया, क्योंकि यह मानव-स्वभाव में है कि जहां कहीं अच्छी बात देखता है तो हर प्रकार से प्रयत्न करता है कि उस अच्छी बात को ले ले, यहां तक कि यदि किसी सभा में कोई अच्छी बात किसी के मुख से निकलती है तो दूसरा उसे याद रखता है तो फिर यह बिल्कुल अनुमान के अनुकूल है कि बौद्ध धर्म वालों ने इंजीलों का पूरा चित्र अपनी पुस्तकों में खींच दिया है। उदाहरणतया यहां तक कि जैसे मसीह ने चालीस रोज़े रखे वैसे ही बुद्ध ने भी रखे और जैसा कि मसीह शैतान से आज़माया गया ऐसा ही बुद्ध भी आज़माया गया और जैसा कि मसीह बाप के बिना था वैसा ही बुद्ध भी और जैसा कि मसीह ने नैतिक शिक्षा वर्णन की वैसा ही बुद्ध ने भी की और जैसा कि मसीह ने कहा कि मैं नूर (प्रकाश) हूं वैसा ही बुद्ध ने भी कहा और जैसा कि मसीह ने अपना नाम उस्ताद रखा और हवारियों का नाम शिष्य, ऐसा ही बुद्ध ने रखा और जैसा कि इंजील मती बाब-10 आयत 8 तथा 9 में है कि सोना,

रुपया और तांबा अपने पास मत रखो, यही आदेश बुद्ध ने अपने शिष्यों को दिया और जैसा कि इंजील में कुंआरे रहने की प्रेरणा दी गई है ऐसा ही बुद्ध की शिक्षा में प्रेरणा है और जैसा कि मसीह को सलीब पर खींचने के पश्चात् भूकम्प आया उसी प्रकार लिखा है कि बुद्ध के मरने के पश्चात् भूकम्प आया।* अतः इस सम्पूर्ण अनुकूलता का मूल कारण यही है कि बौद्ध धर्म वालों के सौभाग्य से मसीह हिन्दुस्तान में आया और एक लम्बे समय तक बौद्ध धर्म वालों में रहा तथा उसके जीवन चरित्र और उसकी पवित्र शिक्षा का उनको भलीभांति ज्ञान प्राप्त हुआ। इसलिए यह आवश्यक था कि उस शिक्षा और रस्मों का बहुत सा भाग उनमें प्रचलित हो जाता क्योंकि उनकी दृष्टि में मसीह सम्मान की दृष्टि से देखा गया और बुद्ध ठहराया गया। इसलिए उन लोगों ने उसकी बातों को अपनी पुस्तकों में लिखा और गौतम बुद्ध की ओर सम्बद्ध कर दिया। बुद्ध का बिल्कुल हज़रत मसीह के समान उदाहरणों में अपने शिष्यों को समझाना विशेषतः वे उदाहरण जो इंजील में आ चुके हैं अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना है। अतः उदाहरण में बुद्ध कहता है कि — "जैसा कि किसान बीज बोता है और वह नहीं कह सकता कि दाना आज फूलेगा और कल निकलेगा ऐसा ही मुरीद (अनुयायी) का हाल होता है अर्थात् वह कुछ भी राय प्रकट नहीं कर सकता कि उसका उगना और विकसित होना अच्छा होगा या उस दाने की तरह होगा जो पथरीली भूमि में डाला

---

* नोट - जैसा कि ईसाइयों में अशा-ए-रब्बानी (रात का खाना जो हज़रत ईसा[अ.] ने अपने हवारियों के साथ खाया था) है ऐसा ही बुद्ध धर्म वालों में भी है। इसी से।

जाए और सूख जाए।"

देखिए यह बिल्कुल वही उदाहरण है जो इंजील में अब तक मौजूद है और फिर बुद्ध एक और उदाहरण देता है कि "एक हिरणों का रेवड़ जंगल में अच्छी अवस्था में होता है तब एक व्यक्ति आता है और धोखे से वह मार्ग खोलता है जो उनकी मौत का मार्ग है अर्थात् प्रयत्न करता है कि ऐसे मार्ग पर चलें जिस से अन्त में फंस जाएं और मृत्यु का शिकार हो जाएं। और दूसरा व्यक्ति आता है वह अच्छा मार्ग खोलता है अर्थात् वह खेत बोता है ताकि उसमें से खाएं। वह नहर लाता है ताकि उसमें से पिएं और ख़ुशहाल हो जाएं। ऐसा ही मनुष्यों का हाल है कि वे समृद्धि में होते हैं शैतान आता है तथा उन पर बुराई के आठ मार्ग खोल देता है ताकि तबाह हों, तब पूर्ण मानव आता है जो सत्य और विश्वास तथा सुरक्षा के भरे हुए आठ मार्ग उन पर खोल देता है ताकि वे बच जाएं।" बुद्ध की शिक्षा में यह भी है कि संयम वह सुरक्षित ख़ज़ाना है जिसे कोई चुरा नहीं सकता। वह ऐसा ख़ज़ाना है जो मृत्योपरान्त भी मनुष्य के साथ जाता है, वह ऐसा ख़ज़ाना है जिसकी पूंजी से समस्त विद्याएं और समस्त कौशल पैदा होते हैं।

अब देखो यह बिल्कुल इंजील की शिक्षा है कि ये बातें बौद्ध धर्म की उन प्राचीन पुस्तकों में पाई जाती हैं जिन का युग हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के युग से कुछ अधिक नहीं है अपितु वही युग है। फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ-135 में है कि बुद्ध कहता है कि मैं ऐसा हूं कि कोई मुझ पर दाग़ नहीं लगा सकता। यह वाक्य भी हज़रत मसीह के कथन से समानता रखता है और बुद्धइज़्म की पुस्तक के

पृष्ठ 45 में लिखा है कि - "बुद्ध की नैतिक शिक्षा तथा ईसाइयों की नैतिक शिक्षा में बड़ी भारी समानता है।" मैं इसको मानता हूं। मैं यह मानता हूं कि वह दोनों हमें बताती हैं कि संसार से प्रेम मत करो, रुपए से प्रेम मत करो, शत्रुओं से शत्रुता मत करो बुरे और गन्दे कार्य मत करो, बुराई पर भलाई के द्वारा विजय प्राप्त करो तथा दूसरों से वह व्यवहार करो जो तुम चाहते हो कि वे तुम से करें। यह इंजीली शिक्षा और बुद्ध की शिक्षा में इतनी अधिक समानता है कि विवरण की आवश्यकता नहीं।

बौद्ध धर्म की पुस्तकों में यह भी सिद्ध होता है कि गौतम बुद्ध ने एक और आने वाले बुद्ध के बारे में भविष्यवाणी की थी जिसका नाम **मतिय्या** वर्णन किया था। यह भविष्यवाणी बुद्ध की पुस्तक 'लग्गावती सुत्ता' में है जिसका हवाला ओल्डन वर्ग पृष्ठ 142 में दिया गया है। इस भविष्यवाणी की इबारत यह है - "मतिय्या लाखों मुरीदों का पेशवा होगा जैसा कि मैं अब सैकड़ों का हूं।" यहां स्मरण रहे कि जो शब्द इब्रानी में "मशीहा" है वही पाली भाषा में मतिय्या करके बोला गया है। यह तो एक साधारण बात है कि जब एक भाषा का शब्द दूसरी भाषाओं में आता है तो उसमें कुछ परिवर्तन हो जाता है। अतः अंग्रेज़ी शब्द भी दूसरी भाषा में आकर परिवर्तन पा जाता है जैसा कि उदाहरण के तौर पर मैक्समूलर साहिब एक सूची में जो पुस्तक "सैक्रेड (बुक्स) आफ़ दी ईस्ट" जिल्द-11 के साथ सम्मिलित की गई है पृष्ठ 318 में लिखता है कि अंग्रेज़ी भाषा का टी.एच. जो 'थ' की आवाज़ देता है फ़ारसी एवं अरबी भाषाओं में 'स' हो जाता है अर्थात् पढ़ने में 'स' का स्वर देता है। अतः इन परिवर्तनों पर दृष्टि

रखकर प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि 'मसीहा' का शब्द पाली भाषा में आकर 'मतिय्या' बन गया अर्थात् वह आने वाला मतिय्या जिसकी बुद्ध ने भविष्यवाणी की थी वह वास्तव में मसीह है और कोई नहीं। इस बात पर बड़ा ठोस सन्दर्भ यह है कि बुद्ध ने यह भविष्यवाणी भी की थी कि जिस धर्म की उसने नींव रखी है वह पृथ्वी पर पांच सौ वर्ष से अधिक स्थापित नहीं रहेगा और जिस समय उन शिक्षाओं और सिद्धान्तों का पतन होगा तब 'मतिय्या' इस देश में आकर दोबारा उन नैतिक शिक्षाओं को संसार में स्थापित करेगा। अब हम देखते हैं कि हज़रत मसीह बुद्ध के पांच सौ वर्ष पश्चात् हुए हैं और जैसा कि बुद्ध ने अपने धर्म के पतन की अवधि निर्धारित की थी ऐसा ही उस समय बुद्ध का धर्म पतन की अवस्था में था। तब हज़रत मसीह ने सलीब की घटना से मुक्ति पा कर उस देश की ओर यात्रा की तथा बौद्ध धर्म वालों ने उन्हें पहचान कर बड़े सम्मान के साथ व्यवहार किया। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कर सकता कि वे नैतिक शिक्षाएं और वे रूहानी ढंग जो बुद्ध ने स्थापित किए थे हज़रत मसीह की शिक्षा ने संसार में उन्हें दोबारा जन्म दिया है। ईसाई इतिहासकार इस बात को मानते हैं कि इंजील की पहाड़ी शिक्षा तथा दूसरे भागों की शिक्षा जो नैतिक बातों पर आधारित है यह समस्त शिक्षा वही है जिसे गौतम बुद्ध, हज़रत मसीह से पांच सौ वर्ष पूर्व संसार में प्रचलित कर चुका था। वे यह भी कहते हैं कि बुद्ध केवल नैतिक शिक्षाओं का शिक्षक नहीं था अपितु वह और भी बड़ी-बड़ी सच्चाइयों का शिक्षक था तथा उन की राय में बुद्ध का नाम जो एशिया का प्रकाश रखा गया वह बिलकुल उचित है। अब बुद्ध की

भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मसीह पांच सौ वर्ष के पश्चात् प्रकट हुए और ईसाइयों के अधिकांश विद्वानों के इक़रार के अनुसार उनकी नैतिक शिक्षा बिल्कुल बुद्ध की शिक्षा थी। अतः इसमें कुछ सन्देह नहीं हो सकता कि वह बुद्ध के रंग पर प्रकट हुए थे और पुस्तक 'ओल्डन बर्ग' में बुद्ध की पुस्तक 'लग्गावती सुत्ता' के हवाले से लिखा है कि बुद्ध के अनुयायी भविष्य की आशा पर हमेशा स्वयं को सांत्वना देते थे कि वे मतिय्या के शिष्य बन कर मोक्ष की खुशहाली प्राप्त करेंगे अर्थात् उनको विश्वास था कि मतिय्या उन में आएगा और वे उसके द्वारा मोक्ष पाएंगे, क्योंकि जिन शब्दों में बुद्ध ने उनको मतिय्या की आशा दी थी वे शब्द स्पष्ट तौर पर सिद्ध करते थे कि उसके शिष्य मतिय्या को पाएंगे। अब कथित पुस्तक के इस वर्णन से भली भांति हार्दिक विश्वास को पैदा करती है कि ख़ुदा ने उन लोगों के मार्ग-दर्शन के लिए दोनों ओर से सामान पैदा कर दिए थे अर्थात् एक ओर तो हज़रत मसीह अपने उस नाम के कारण जो पैदायश बाब-3 आयत-10 से समझा जाता है अर्थात् '**आसिफ़**' जिसका अनुवाद है जमाअत को एकत्र करने वाला। यह आवश्यक था कि इस देश की ओर आते जिसमें यहूदी आकर आबाद हुए थे तथा दूसरी ओर यह भी आवश्यक था कि बुद्ध की भविष्यवाणी के उद्देश्य के अनुसार बुद्ध के अनुयायी आपको देखते और आप से लाभ उठाते। अतः इन दोनों बातों को इकट्ठी दृष्टि के साथ देखने से निश्चय ही समझ में आता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अवश्य तिब्बत की ओर गए थे और स्वयं जितने तिब्बत के बौद्ध धर्म में ईसाई शिक्षा और रस्मो रिवाज प्रवेश कर गए हैं इतनी गहरी

पहुंच इस बात को चाहती है कि हज़रत मसीह उन लोगों को मिले हों तथा बौद्ध धर्म के प्रयत्नशील अनुयायियों का उनकी भेंट के लिए हमेशा प्रतीक्षा में रहना जैसा कि बुद्ध की पुस्तकों में अब तक लिखा हुआ मौजूद है उच्च स्वर से पुकार रहा है कि यह अत्यधिक प्रतीक्षा हज़रत मसीह का उनके देश में आने के लिए एक भूमिका थी तथा उपरोक्त दोनों बातों के पश्चात् किसी न्यायप्रिय को इस बात की आवश्यकता नहीं रहती कि वह बौद्ध धर्म की ऐसी पुस्तकों को तलाश करे जिनमें लिखा हुआ हो कि हज़रत मसीह तिब्बत देश में आए थे क्योंकि जब बुद्ध की भविष्यवाणी के अनुसार आने की बहुत प्रतीक्षा थी तो वह भविष्यवाणी अपने आकर्षण से हज़रत मसीह को अवश्य तिब्बत की ओर खींच लाई होगी। स्मरण रखना चाहिए कि मतिय्या का नाम जो बुद्ध की पुस्तकों में अनेकों स्थानों पर मौजूद है निस्सन्देह वह मसीहा है। पुस्तक 'तिब्बत तातार मंगोलिया' बाई एच.टी. प्रिंसेप साहिब* के पृष्ठ-14 में मतिय्या बुद्ध के बारे में जो वास्तव में मसीहा है यह लिखा है कि जो परिस्थितियां उन पहले मिशनरियों (ईसाई उपदेशकों) ने तिब्बत में जा कर अपनी आंखों से देखे और कानों से सुने, उन परिस्थितियों पर विचार करने से वे इस परिणाम तक पहुंच गए कि लामों की प्राचीन पुस्तकों में ईसाई धर्म के लक्षण मौजूद हैं और फिर उसी पृष्ठ में लिखा है कि इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वे पुराने लोग यह विचार करते हैं कि हज़रत मसीह के हवारी अभी जीवित ही थे जबकि ईसाई धर्म का प्रचार यहां तक पहुंच गया था और फिर 171 पृष्ठ पर लिखा है कि इसमें कुछ सन्देह नहीं कि

---

* Tibet, Tatary and Mongolia by H.T.Prinsep

उस समय सामान्य प्रतीक्षा एक बड़े मुक्ति देने वाले के पैदा होने की लगी हुई थी जिसका वर्णन टेसेटस ने इस प्रकार से किया है कि उस प्रतीक्षा का केन्द्र न केवल यहूदी थे अपितु स्वयं बौद्ध धर्म ने ही इस प्रतीक्षा की नींव डाली थी अर्थात् उस देश में मतिय्या के आने की भविष्यवाणी की थी और फिर इस अंग्रेज़ी पुस्तक पर लेखक ने एक नोट लिखा है उसकी यह इबारत है — किताब पताकत्यान और अट्‌टकथा में एक और बुद्ध के उतरने की भविष्यवाणी बड़े स्पष्ट तौर पर लिखी है जिसका प्रकटन गौतम बुद्ध था शाक्यमुनि से एक हज़ार वर्ष पश्चात् लिखा गया है। गौतम वर्णन करता है कि मैं पच्चीसवां बुद्ध हूं और बग्वा मतिय्या ने अभी आना है अर्थात् मेरे बाद इस देश में वह आएगा जिसका नाम मतिय्या होगा और वह सफेद रंग का होगा। फिर आगे वह अंग्रेज़ लेखक लिखता है कि मतिय्या के नाम को मसीहा से आश्चर्यजनक समानता है। अतएव इस भविष्यवाणी में गौतम बुद्ध ने स्पष्ट तौर पर इक़रार किया है कि उसके देश में और उसकी जाति में और उस पर ईमान लाने वालों में मसीहा आने वाला है। यही कारण था कि उसके धर्म के लोग हमेशा इस प्रतीक्षा में थे कि उनके देश में मसीहा आएगा तथा बुद्ध ने अपनी भविष्यवाणी में उस आने वाले बुद्ध का नाम बग्वा मतिय्या इसलिए रखा कि बगवा संस्कृत भाषा में सफेद को कहते हैं और हज़रत मसीह चूंकि शाम देश के रहने वाले थे इसलिए वह बगवा अर्थात् सफेद रंग थे। जिस देश में यह भविष्यवाणी की गई थी अर्थात् मगध का देश जहां राजागृह स्थापित था। उस देश के लोग काले रंग के थे तथा गौतम बुद्ध स्वयं काले रंग का था। इसलिए बुद्ध ने आने

वाले बुद्ध का ठोस लक्षण प्रकट करने के लिए अपने अनुयायियों को दो बातें बताई थीं। एक यह कि वह बगवा होगा, दूसरे यह कि वह मतिय्या होगा अर्थात् भ्रमण करने वाला होगा और बाहर से आएगा। इसलिए वे लोग इन्हीं लक्षणों की प्रतीक्षा में थे, यहां तक कि उन्होंने हज़रत मसीह को देख लिया। यह आस्था आवश्यक तौर पर प्रत्येक बौद्ध धर्म वाले की होनी चाहिए कि बुद्ध से पांच सौ वर्ष पश्चात् बगवा मतय्या उनके देश में प्रकट हुआ था।* अतः इस आस्था के समर्थन में कुछ आश्चर्य नहीं कि बौद्ध धर्म की कुछ पुस्तकों में मतिय्या अर्थात् मसीहा का उनके देश में आना और इस प्रकार से भविष्यवाणी का पूरा हो जाना लिखा हुआ हो और यदि यह मान भी लें कि लिखा हुआ नहीं है कि तब भी जबकि बुद्ध ने ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर अपने शिष्यों को यह आश्वासन दिया था कि बग्वा मतिय्या उन के देश में आएगा। इस आधार पर कोई बौद्ध मत वाला जो इस भविष्यवाणी से परिचित हो इस घटना से इन्कार नहीं कर सकता कि वह बग्वा मतिय्या जिसका दूसरा नाम मसीहा है इस देश में आया था क्योंकि भविष्यवाणी का मिथ्या होना धर्म को मिथ्या करता है और ऐसी भविष्यवाणी जिसकी अवधि भी निर्धारित थी तथा गौतम बुद्ध ने बारम्बार इस भविष्यवाणी को अपने अनुयायियों के पास वर्णन किया था। यदि वह अपने समय पर पूरी न होती तो बुद्ध की जमाअत गौतम बुद्ध की सच्चाई के बारे में सन्देह में पड़ जाती तथा पुस्तकों में यह बात लिखी जाती कि यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई तथा इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने पर हमें एक अन्य प्रमाण यह

* एक हज़ार तथा पांच हज़ार वर्ष वाली अवधियां ग़लत हैं। इसी से।

मिलता है कि तिब्बत में सातवीं शताब्दी ईस्वी की वे पुस्तकें प्राप्त हुई हैं जिनमें मशीह का शब्द मौजूद है अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम लिखा है और इस शब्द को **मी शी हू** करके उच्चारण हुआ है और वह सूची जिसमें **मी शी हू** पाया गया है उसका सम्पादक एक बौद्ध धर्म का व्यक्ति है। देखो पुस्तक "ए रिकार्ड आफ़ दी बुद्धिस्ट रेलीजन" लेखक आई सिंग अनुवादक जी. टाका कासू। जी. टाका कासू एक जापानी व्यक्ति है जिसने आई. सिंग की पुस्तक का अनुवाद किया है ओर आई सिंग एक चीनी पर्यटक है जिसकी पुस्तक के हाशिए पर तथा परिशिष्ट में टाका कासू ने लिखा है कि एक प्राचीन पुस्तक में मी शी हू (मसीह) का नाम लिखा है और यह पुस्तक लगभग सातवीं शताब्दी की है .... और फिर इसका अनुवाद वर्तमान समय में ही क्लीरन्डन प्रेस ऑक्सफोर्ड में जी. टाका कासू नामक जापानी ने किया।* अतः इस पुस्तक में मशीह का शब्द मौजूद है जिससे हम विश्वास के साथ समझ सकते हैं कि यह शब्द बौद्ध धर्म वालों के पास बाहर से नहीं आया अपितु बुद्ध की भविष्यवाणी से यह शब्द लिया गया है जिसे उन्होंने कभी मशीह करके लिखा और कभी बग्वा मतिय्या करके।

उन गवाहियों में से जो बौद्ध धर्म की पुस्तकों से हमें प्राप्त हुई हैं एक यह है कि "बुद्धइज़्म" लेखक सर मोनियर विलियम पृष्ठ-45 में लिखा है कि बुद्ध का छठा अनुयायी यसा नाम का एक व्यक्ति था। यह शब्द यसू शब्द का संक्षिप्त रूप विदित होता है। चूंकि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम बुद्ध के निधन के पांच सौ वर्ष गुज़रने के

* देखो पृष्ठ 169, 223 इसी पुस्तक का। इसी से।

पश्चात् अर्थात् छठी शताब्दी में पैदा हुए थे इसलिए छठे अनुयायी कहलाए। स्मरण रहे कि प्रोफेसर मैक्समूलर अपनी पत्रिका "नाइन्टीन्थ सेन्चरी" अक्तूबर 1894 ई. पृष्ठ 517 में उपरोक्त लेख का इन शब्दों द्वारा समर्थन करते हैं कि "यह विचार कई बार सर्वप्रिय लेखकों ने प्रस्तुत किया है कि मसीह पर बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों ने प्रभाव डाला था। पुनः लिखते हैं कि आज तक इस परेशानी के समाधान के लिए प्रयास हो रहा है कि कोई ऐसा सच्चा ऐतिहासिक मार्ग ज्ञात हो जाए जिसके द्वारा बौद्ध धर्म मसीह के युग में फिलिस्तीन में पहुंच सका हो।" अब इस इबारत से बौद्ध धर्म की उन पुस्तकों की पुष्टि होती है जिनमें लिखा है कि यसा बुद्ध का अनुयायी था, क्योंकि जब उच्च स्तर के ईसाइयों ने जैसा कि प्रोफ़ेसर मैक्समूलर हैं इस बात को स्वीकार कर लिया है कि हज़रत मसीह के हृदय पर बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का प्रभाव अवश्य पड़ा था तो दूसरे शब्दों में इसी का नाम अनुयायी होना है, किन्तु हम ऐसे शब्दों को हज़रत मसीह की प्रतिष्ठा में एक धृष्टता और अपमान समझते हैं तथा बौद्ध धर्म की पुस्तकों में जो यह लिखा गया कि यसू बुद्ध का अनुयायी या शिष्य था तो यह लेख उस क़ौम के विद्वानों की एक पुरानी आदत के अनुकूल है कि वे पीछे आने वाले गुणवान व्यक्ति को पहले गुणवान का शिष्य समझ लेते हैं। इसके अतिरिक्त जबकि हज़रत मसीह की शिक्षा तथा बुद्ध की शिक्षा में नितान्त समानता है जैसा कि वर्णन हो चुका है, तो फिर इस दृष्टि से कि बुद्ध हज़रत मसीह से पहले गुज़र चुके हैं बुद्ध और हज़रत मसीह में पीरी-मुरीदी (गुरू-शिष्य) का नाता जोड़ना अनुचित विचार नहीं है ? यद्यपि कि सम्मान के आचरण से दूर है। परन्तु हम

यूरोप के अन्वेषकों के अन्वेषण की पद्धति को कदापि पसन्द नहीं कर सकते कि वे इस बात की खोज में हैं कि किसी प्रकार यह ज्ञात हो जाए कि बौद्ध धर्म मसीह के युग में फिलिस्तीन में पहुंच गया था। मुझे खेद होता है कि जिस स्थिति में बौद्ध धर्म की प्राचीन पुस्तकों में हज़रत मसीह का नाम और वर्णन मौजूद है तो क्यों यह अन्वेषक ऐसा टेढ़ा मार्ग धारण करते हैं कि फ़िलिस्तीन में बौद्ध धर्म का निशान ढूंढते हैं और क्यों वे हज़रत मसीह के मुबारक क़दमों को नेपाल, तिब्बत और कश्मीर के पर्वतों में तलाश नहीं करते, परन्तु मैं जानता हूं कि इतनी बड़ी सच्चाई को हज़ारों अंधकारमय पर्दों में से पैदा करना उन का कार्य नहीं था अपितु यह उस ख़ुदा का कार्य था जिसने आकाश से देखा कि पृथ्वी पर सीमा से अधिक सृष्टि पूजा फैल गई तथा सलीब-पूजा और मनुष्य के एक काल्पनिक हत्या की उपासना ने करोड़ों हृदयों को सच्चे ख़ुदा से दूर कर दिया। तब उसके स्वाभिमान ने उन आस्थाओं के खण्डन के लिए जो सलीब पर आधारित थे एक को अपने बन्दों में से संसार में मसीह नासिरी के नाम पर भेजा और वह जैसा कि हमेशा से वादा था मसीह मौऊद होकर प्रकट हुआ। तब सलीब तोड़ने का समय आ गया अर्थात् वह समय कि सलीबी आस्था की ग़लती को ऐसी स्पष्टता से प्रकट कर देना जैसा कि एक लकड़ी को दो टुकड़े कर दिया जाए। अत: अब आकाश ने सलीब तोड़ने का सारा मार्ग खोल दिया ताकि वह व्यक्ति जो सत्य का अभिलाषी है अब उठे और खोज करे। मसीह का शरीर के साथ आकाश पर जाना यद्यपि एक ग़लती थी। तब भी उसमें एक रहस्य था और वह यह कि जो मसीही जीवन चरित्र की वास्तविकता खो गई थी तथा

ऐसी मिट गई थी जिस प्रकार कि मिट्टी क़ब्र में एक शरीर को खा लेती है, वह वास्तविकता आकाश पर एक अस्तित्व रखती थी और एक साक्षात् मनुष्य की भांति आकाश में मौजूद थी तथा अवश्य था कि अन्तिम युग में वह वास्तविकता पुनः उतरे। अतः वह मसीही वास्तविकता एक साक्षात् मनुष्य के समान अब उतरी और उसने सलीब को तोड़ा तथा झूठ और अकारण पूजा करने की बुरी आदतें जिनको हमारे पवित्र नबी सलीब की हदीस में सुअर की उपमा दी है सलीब तोड़ने के साथ ही ऐसे टुकड़े-टुकड़े हो गईं जैसा कि एक सुअर तलवार से काटा जाता है। इस हदीस के ये अर्थ सही नहीं हैं कि मसीह मौऊद काफ़िरों का वध करेगा और सलीबों को तोड़ेगा अपितु सलीब तोड़ने से अभिप्राय यह है कि उस युग में आकाश तथा पृथ्वी का ख़ुदा एक ऐसी गुप्त वास्तविकता प्रकट कर देगा कि जिन से समस्त सलीबी इमारत एक ही बार में टूट जाएगी तथा सुअरों का वध करने से न मनुष्य अभिप्राय हैं न सुअर अपितु सुअरों की आदतें अभिप्राय हैं अर्थात् झूठ पर हठ करना और उसे बार-बार प्रस्तुत करना जो एक प्रकार का गन्द खाना है। अतः जिस प्रकार मरा हुआ सुअर गन्द नहीं खा सकता इसी प्रकार वह युग आता है अपितु आ गया कि बुरी आदतें इस प्रकार की विष्ठा खाने से रोकी जाऐंगी। इस्लाम के उलेमा ने इस नबवी भविष्यवाणी को समझने में ग़लती की है और सुअर का वध करने तथा सलीब तोड़ने के वास्तविक अर्थ यही हैं जो हम ने वर्णन कर दिए हैं। यह भी तो लिखा है कि मसीह मौऊद के समय में धार्मिक युद्धों का अन्त हो जाएगा और आकाश से ऐसी प्रकाशमान सच्चाइयां प्रकट हो जाएंगी कि सत्य और असत्य में एक

प्रकाशमान अन्तर दिखा देंगी। इसलिए यह मत सोचो कि मैं तलवार चलाने आया हूं। नहीं, अपितु समस्त तलवारों को म्यान में करने के लिए भेजा गया हूं। संसार ने अन्धकार में बहुत सारी कुश्तियां कीं बहुतों ने अपने सच्चे शुभचिन्तकों पर प्रहार किए तथा अपने हमदर्द मित्रों के हृदयों को कष्ट पहुंचाया और परिजनों को घायल किया, परन्तु अब अंधकार नहीं रहेगा। रात गुज़री, दिन चढ़ा और मुबारक वह जो अब वंचित न रहे !!

और उन गवाहियों के जो हमें बौद्ध धर्म की पुस्तकों से प्राप्त हुई है उन में से एक वह गवाही है जो पुस्तक "बुद्धिज़्म" लेखक ओल्डन बर्ग पृष्ठ 419 में लिखित है। इस पुस्तक में पुस्तक 'महावग्ग' पृष्ठ-54 फ़स्ल नं. 1 के हवाले से लिखा है कि बुद्ध का एक उत्तराधिकारी 'राहोलता' नामक भी गुज़रा है जो उसका प्राणों का बलिदान देने वाला शिष्य अपितु बेटा था। अब यहां हम दावे के साथ कहते हैं कि यह रोहलता जो बौद्ध धर्म की पुस्तकों में आया है यह रूहुल्लाह के नाम का बिगाड़ा हुआ है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम है और यह क़िस्सा कि यह राहोलता बुद्ध का बेटा था जिसे वह बच्चे की आयु में छोड़ कर परदेस में चला गया था तथा अपनी पत्नी को सोने की अवस्था में छोड़कर उसको सूचना और भेंट किए बिना हमेशा की जुदाई की नीयत से किसी अन्य देश में भाग गया था। यह क़िस्सा बिल्कुल व्यर्थ एवं निराधार और बुद्ध की प्रतिष्ठा के विपरीत विदित होता है। ऐसा कठोर हृदय और अत्याचार प्रवृत्ति का मनुष्य जिसने अपनी असहाय पत्नी पर कुछ दया न की और उसे सोते हुए छोड़कर उसे किसी प्रकार की तसल्ली दिए बिना यूं ही

चोरों के समान भाग गया तथा पत्नी के अधिकारों को बिल्कुल भुला दिया। न उसे तलाक़ दी और न उससे इतनी अपार यात्रा की अनुमति ली तथा सहसा ग़ायब हो जाने से उसके हृदय को बहुत आघात पहुंचाया और बहुत कष्ट दिया फिर एक पत्र भी उसकी ओर न भेजा यहां तक कि पुत्र जवान हो गया और न पुत्र के दूध पीने के अवस्था के दिनों पर दया की। ऐसा व्यक्ति कभी सच्चा नहीं हो सकता जिसने अपनी उस नैतिक शिक्षा का भी ध्यान न रखा जिसे वह अपने शिष्यों को सिखाता था। हमारी अन्तरात्मा उसको इसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकती जैसा कि इंजील के उस क़िस्से को कि मसीह ने एक बार मां के आने और उसके बुलाने की कुछ भी परवाह नहीं की थी अपितु मुंह पर ऐसे शब्द लाया था जिस में मां का अपमान था। अत: यद्यपि पत्नी और मां का हृदय तोड़ने के दोनों क़िस्से भी परस्पर एक प्रकार की कुछ समानता रखते हैं परन्तु हम ऐसे क़िस्से जो सामान्य नैतिकता से गिरे हुए हैं न मसीह से सम्बद्ध कर सकते हैं और न गौतम बुद्ध की ओर। यदि बुद्ध को अपनी पत्नी से प्रेम नहीं था तो क्या उस असहाय स्त्री तथा दूध पीते बच्चे पर भी दया नहीं थी। यह ऐसा दुर्व्यवहार है कि सैकड़ों वर्ष के भूतकालीन विगत क़िस्से को सुनकर अब हमें कष्ट पहुंच रहा है कि उसने ऐसा क्यों किया मनुष्य की बुराई के लिए यह पर्याप्त है कि वह अपनी पत्नी की हमदर्दी से लापरवाह हो इस स्थिति के अतिरिक्त कि वह पतिवृता एवं आज्ञाकारी न रहे और या अधर्मी, अशुभचिन्तक तथा प्राणों की शत्रु हो जाए। अत: हम ऐसी गन्दी कार्यवाही को बुद्ध से सम्बद्ध नहीं कर सकते जो स्वयं उसके उपदेशों के विपरीत है, इसलिए इस अनुकूलता से

विदित होता है कि यह क़िस्सा ग़लत है तथा वास्तव में राहोलता से अभिप्राय हज़रत ईसा हैं जिनका नाम रूहुल्लाह है और रूहुल्लाह का शब्द इब्रानी भाषा में राहोलता से बहुत समान हो जाता है। राहोलता अर्थात् रूहुल्लाह को बुद्ध का शिष्य इस कारण से ठहरा दिया गया है जिसका वर्णन हम अभी कर चुके हैं अर्थात् मसीह जो बाद में आकर बुद्ध के समान शिक्षा लाया। इसलिए बौद्ध धर्म के लोगों ने उस शिक्षा का मूल स्रोत बुद्ध को ठहरा कर मसीह को उसका शिष्य ठहरा दिया। तथा कुछ आश्चर्य नहीं कि बुद्ध ने ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर हज़रत मसीह को अपना बेटा भी ठहरा दिया हो और एक बड़ा सन्दर्भ यहां यह है कि इसी पुस्तक में लिखा है कि जब राहोलता को उसकी मां से पृथक किया गया तो एक स्त्री जो बुद्ध की अनुयायी थी जिसका नाम 'मगदालियाना' था। इस काम के लिए मध्य में दूत बनी थी। अब देखो 'मगदालियाना' का नाम वास्तव में 'मगदलीनी' से बिगाड़ा हुआ है और मगदलीनी एक स्त्री हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की अनुयायी थी जिसका वर्णन इंजील में मौजूद है।

ये समस्त गवाहियां जिन्हें हम ने संक्षेप में लिखा है प्रत्येक न्यायकर्ता को इस परिणाम तक पहुंचाती हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अवश्य इस देश में पधारे थे और उन समस्त प्रकाशमान गवाहियों से दृष्टि हटाते हुए बौद्ध धर्म तथा ईसाई धर्म में शिक्षा और रस्मों की दृष्टि से जितने परस्पर संबंध हैं विशेषत: तिब्बत के भाग में। यह बात ऐसी नहीं है कि एक बुद्धिमान उसे आलस्य के साथ देखे अपितु यह समानता यहां तक आश्चर्यजनक है कि अधिकांश ईसाई अन्वेषकों का यह विचार है कि बौद्ध धर्म पूर्व का ईसाई धर्म

है और ईसाई धर्म को पश्चिम का बौद्ध धर्म कह सकते हैं। देखिए कितनी विचित्र बात है कि जैसे मसीह ने कहा कि मैं प्रकाश हूं, मैं हिदायत का मार्ग हूं, यही बुद्ध ने भी कहा है तथा इंजीलों में मसीह का नाम मुक्ति देने वाला है, बुद्ध ने भी अपना नाम मुक्तिदाता प्रकट किया है। देखो 'ललिता विस्त्रा' और इंजील में मसीह की पैदायश बिना बाप के वर्णन की गई है इसी प्रकार बुद्ध के जीवन-चरित्र में है कि वास्तव में वह बिना बाप के पैदा हुआ था, यद्यपि प्रत्यक्षतया मसीह के पिता यूसुफ की भांति उसका भी पिता था। यह भी लिखा है कि बुद्ध की पैदायश के समय एक सितारा निकला था और सुलेमान का क़िस्सा जो उसने आदेश दिया था कि इस बच्चे को आधा-आधा करके इन दोनों स्त्रियों को दो कि ले लें। यह क़िस्सा बुद्ध की 'जातका' में भी पाया जाता है। इस से ज्ञात होता है कि इसके अतिरिक्त कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम इस देश में पधारे थे उस देश के यहूदी जो इस देश में आ गए थे उनके संबंध भी बौद्ध धर्म से हो गए थे और बौद्ध धर्म की पुस्तकों में संसार उत्पत्ति का जो ढंग लिखा है वह भी तौरात के वर्णन से बहुत मिलता है और जैसा कि तौरात से ज्ञात होता है कि पुरुष को स्त्रियों पर एक स्तर की श्रेष्ठता है ऐसी ही बौद्ध धर्म की दृष्टि से एक योगी पुरुष एक योगी स्त्री से श्रेणी में अधिक समझा जाता है। हां बुद्ध आवागमन को मानता है परन्तु उसका आवागमन इंजील की शिक्षा से विपरीत नहीं है। उसके विचार में आवागमन तीन प्रकार का है —

(1) प्रथम यह कि एक मरने वाले व्यक्ति के साहस का प्रण और कर्मों का परिणाम मांग करता है कि एक और शरीर पैदा हो।

(2) दूसरा यह कि जिसे तिब्बत वालों ने अपने लामों में माना है अर्थात् यह कि किसी बुद्ध या 'बोधिसत्व' की रूह (आत्मा) का कोई भाग वर्तमान लामों में प्रवेश करके आता है अर्थात् शक्ति और तबियत तथा रूहानी विशेषता वर्तमान लामा में आ जाती है तथा उसकी रूह उसमें प्रभाव करने लगती है।

(3) तीसरा प्रकार आवागमन का यह है कि इस जीवन में मनुष्य भिन्न-भिन्न प्रकार की पैदायशों में गुज़रता चला जाता है यहां तक कि वास्तव में वह अपनी निजी विशेषताओं की दृष्टि से इन्सान बन जाता है। मनुष्य पर एक युग वह आता है कि जैसे वह बैल होता है फिर कुछ अधिक लालसा और शरारत बढ़ती है तो कुत्ता बन जाता है और एक अस्तित्व पर मृत्यु आती है और दूसरा अस्तित्व पहले अस्तित्व के कर्मों के अनुसार पैदा हो जाता है परन्तु ये समस्त परिवर्तन इसी जीवन में होते हैं। इसलिए यह आस्था भी इंजील की शिक्षा के विपरीत नहीं है।

हम वर्णन कर चुके हैं कि बुद्ध शैतान को भी मानता है। इसी प्रकार नर्क, स्वर्ग, फ़रिश्तों तथा प्रलय (क़यामत) को भी मानता है और यह आरोप कि बुद्ध ख़ुदा का इन्कारी है यह मात्र झूठ घड़ना है अपितु बुद्ध वेदान्त का इन्कारी है और उन शारीरिक (भौतिक) ख़ुदाओं का इन्कारी है जो हिन्दू धर्म में बनाए गए थे। हां वह वेद पर बहुत आलोचना करता है और वर्तमान वेद को सही नहीं मानता। उसे एक बिगड़ी हुई, अक्षरांतरित तथा परिवर्तित पुस्तक मानता है तथा जिस युग में वह हिन्दू और वेद का अनुयायी था उस युग की पैदायश को एक बुरी पैदायश ठहराता है। अतः वह संकेतों के तौर

पर कहता है कि मैं एक अवधि तक बन्दर भी रहा और एक समय तक हाथी और फिर मैं हिरन भी बना और कुत्ता भी और चार बार में सांप बना और फिर पक्षी बना और मेंढक भी बना और दो बार मछली बना और दस बार शेर बना तथा चार बार मुर्ग़ा बना और दो बार मैं सुअर बना और एक बार खरगोश बना और खरगोश बनने के युग में बन्दरों तथा गीदड़ों और पानी के कुत्तों को शिक्षा दिया करता था। पुनः कहता है कि एक बार मैं भूत बना और एक बार स्त्री बना और एक नाचने वाला शैतान बना। ये समस्त संकेत अपने उस सम्पूर्ण जीवन की ओर करता है जो कायरता, ज़नाना स्वभाव, अपवित्रता, पशुता, दरिंदगी, ऐश्वर्य, स्वार्थ परायणता तथा भ्रमों से परिपूर्ण था। ज्ञात होता है कि वह उस युग की ओर संकेत करता है जबकि वह वेद का अनुयायी था क्योंकि वह वेद को त्यागने के पश्चात् कभी इस बात की ओर संकेत नहीं करता कि फिर भी कोई भाग अपवित्र जीवन का उसके अन्दर रहा था अपितु उसके पश्चात् उसने बड़े-बड़े दावे किए और कहा कि वह ख़ुदा का द्योतक हो गया तथा निर्वाण (मोक्ष) को पाया। बुद्ध ने यह भी कहा है कि जब मनुष्य नर्क के कर्म लेकर संसार से जाता है जो वह नर्क में डाला जाता है और नर्क के सिपाही उसे खींचकर नर्क के बादशाह की ओर उसको ले जाते हैं और उस बादशाह का नाम यमह है फिर उस नार्की से पूछा जाता है कि क्या तूने उस पांच रसूलों को नहीं देखा था जो तुझे अवगत करने के लिए भेजे गए थे और वह ये हैं :-

(1) बचपन का युग

(2) वृद्धावस्था का युग

(3) बीमारी

(4) अपराधी होकर संसार में ही दण्ड पा लेना जो आख़िरत के दण्ड पर एक तर्क है।

(5) मुर्दों के शव जो संसार के नश्वर होने पर एक प्रमाण हैं। अपराधी उत्तर देता है कि जनाब ! मैंने अपनी मूर्खता के कारण उन समस्त बातों पर कभी भी विचार नहीं किया तब नर्क के दारोग़ा उसको खींच कर अज़ाब के स्थान पर ले जाएंगे और लोहे की जंजीरों के साथ जो आग से इतनी अधिक गर्म की हुई होंगी कि आग की भांति लाल होंगी बांध दिए जाएंगे। तथा बुद्ध कहता है कि नर्क में कई श्रेणीयां हैं जिनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पापी डाले जाएंगे। निष्कर्ष यह कि ये समस्त शिक्षाएं उच्च स्वर में पुकार रही हैं कि बौद्ध धर्म ने हज़रत मसीह की संगत के वरदान से कुछ प्राप्त किया है, परन्तु हम इस स्थान पर इससे अधिक विस्तार देना पसन्द नहीं करते और इस फ़स्ल (अध्याय) को इसी स्थान पर समाप्त कर देते हैं क्योंकि जब कि बौद्ध धर्म की पुस्तकों में स्पष्ट तौर पर हज़रत मसीह के इस देश में आने के लिए भविष्यवाणी लिखी गई है जिस से कोई इन्कार नहीं कर सकता और फिर इसके पश्चात् हम देखते हैं कि बौद्ध धर्म की उस पुस्तकों में जो हज़रत मसीह के युग में लिखी गईं इंजील की नैतिक शिक्षाएं और उदाहरण मौजूद हैं। अतः इन दोनों बातों को परस्पर मिलाने से कुछ सन्देह नहीं रह सकता कि हज़रत मसीह इस देश में अवश्य आए थे। इसलिए जिस गवाही को हम बौद्ध धर्म की पुस्तकों में से ढूंढना चाहते थे ख़ुदा का धन्यवाद है कि वह गवाही पूरी तरह से हमें प्राप्त हो गई हैं।

तीसरी फ़स्ल

उन ऐतिहासिक पुस्तकों की गवाही में जो इस बात को सिद्ध करती है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का इस देश पंजाब तथा इसके आस-पास के स्थानों में आना आवश्यक था।

चूंकि स्वाभाविक तौर पर एक प्रश्न पैदा होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सलीब की घटना से मुक्ति पाकर इस देश में क्यों आए तथा किस आवश्यकता ने उन्हें इस लम्बी यात्रा के लिए तत्पर किया। इसलिए इस प्रश्न का विस्तारपूर्वक उत्तर देना आवश्यक ज्ञात होता है और यद्यपि हम पहले भी इस बारे में किसी सीमा तक लिख आए हैं परन्तु हम उचित समझते हैं कि इस बहस को पूर्णरूपेण इस पुस्तक में उल्लेख किया जाए।

अतः स्पष्ट हो कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को उनके रसूल होने के कर्त्तव्य की दृष्टि से पंजाब और उसे आस-पास की ओर यात्रा करना नितान्त आवश्यक था क्योंकि बनी इस्राईल के दस फ़िर्क़े जिनका नाम इंजील में इस्राईल की खोई हुई भेड़ें रखा गया है इन देशों में आ गए थे जिन के आने से किसी इतिहासकार को इन्कार नहीं है। इसलिए आवश्यक था कि हज़रत मसीह[अ.] इस देश की ओर यात्रा करते और उन खोई हुई भेड़ों का पता लगा कर ख़ुदा तआला का सन्देश उनको पहुंचाते तथा जब तक वह ऐसा न करते तब तक उनके रसूल होने का उद्द्देश्य निष्फल और अपूर्ण था क्योंकि जिस स्थिति में वह ख़ुदा तआला की ओर से उन खोई हुई भेड़ों की ओर भेजे गए थे तो फिर इसके बिना कि वह उन भेड़ों के पीछे जाते और उन को तलाश करते तथा उनको मोक्ष का उपाय बताते यों ही संसार

से कूच कर जाना ऐसा था कि जैसा कि एक व्यक्ति एक बादशाह की ओर से नियुक्त हो कि वह अमुक जंगली क़ौम में जाकर एक कुंआ खोदे और उस कुंए से उनको पानी पिलाए, परन्तु यह व्यक्ति किसी दूसरे स्थान में तीन-चार वर्ष रह कर वापस चला जाए और उस क़ौम की खोज में एक क़दम भी न उठाए तो क्या उसने बादशाह के आदेशानुसार पालन किया ? कदापि नहीं अपितु उसने मात्र अपने आलस्य के कारण उस क़ौम की कुछ परवाह न की।

हां यदि यह प्रश्न हो कि क्योंकर और किस तर्क से ज्ञात हुआ कि इस्राईल की दस क़ौमें इस देश में आ गई थीं तो इसके उत्तर में ऐसे स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं कि उनमें एक साधारण और मोटी बुद्धि भी सन्देह नहीं कर सकती क्योंकि यह नितान्त प्रसिद्ध घटनाएं हैं कि कुछ जातियां उदाहरणतया अफ़ग़ान और कश्मीर के प्राचीन निवासी वास्तव में बनी इस्राईल हैं जैसे अलाई कोहिस्तान जो ज़िला हज़ारा से दो तीन दिन के मार्ग पर है उसके निवासी प्राचीन काल से स्वयं को बनी इस्राईल कहते हैं। ऐसा ही इस देश में एक दूसरा पहाड़ है जिसे काला डाका कहते हैं। उसके निवासी भी इस बात पर गर्व करते हैं कि हम बनी इस्राईल हैं तथा विशेष तौर पर ज़िला हज़ारा में भी एक जाति है जो स्वयं को इस्राईली खानदान से समझते हैं। इसी प्रकार चलास और काबुल के बीच जो पहाड़ हैं दक्षिण की ओर पूर्व और पश्चिम में रहने वाले भी स्वयं को बनी इस्राईली कहते हैं और कश्मीर निवासियों के बारे में वह राय नितान्त उचित सिद्ध होती है जो डाक्टर बर्नियर ने अपनी पुस्तक सैर-व-सियाहत कश्मीर के दूसरे भाग में कुछ अंग्रेज़ अन्वेषकों के सन्दर्भ से लिखी है अर्थात् यह कि

निस्सन्देह कश्मीरी लोग बनी इस्राईल हैं तथा उनके लिबास और चेहरे तथा कुछ रीति-रिवाज निश्चित तौर पर फैसला करते हैं कि वह इस्राईली ख़ानदान में से हैं और फारिस्टर नामक एक अंग्रेज़ अपनी पुस्तक में लिखता है कि जब मैं कश्मीर में था तो मैंने सोचा कि मैं एक यहूदियों की जाति के अन्दर रहता हूं और पुस्तक "दी रेसिज़ आफ़ अफ़ग़ानिस्तान" लेखक H. W. Bellew C.S.I प्रकाशित Thaker, Spink & Co. कलकत्ता में लिखा है कि अफ़ग़ान लोग सीरिया देश से आए हैं। बुख़्त नसर ने उन्हें बन्दी बनाया तथा परशिया और मेदिया के क्षेत्रों में उन्हें आबाद किया। इन स्थानों से किसी बाद के युग में पूर्व की ओर निकल कर ग़ौर के पहाड़ी देश में जा बसे, जहां बनी इस्राईल के नाम से प्रसिद्ध थे। इसके प्रमाण में इदरीस नबी की भविष्यवाणी है कि इस्राईल की दस जातियां जो क़ैद की गई थीं क़ैद से भागकर देश अरसारत में शरण ली और वह उसी देश का नाम मामूल होता है जिसे आजकल हज़ारा कहते हैं और जो ग़ौर क्षेत्र में है। तबक़ात-ए-नासिरी जिसमें चंगेज़ ख़ान की अफ़ग़ानिस्तान पर विजयों का उल्लेख है। उसमें लिखा है कि शन्बीसी खानदान के युग में यहां एक जाति आबाद थी जिसको बनी इस्राईल कहते थे और कुछ उनमें बड़े-बड़े व्यापारी थे। ये लोग सन् 622 ई. में जबकि मुहम्मद अर्थात् उस युग में जबकि सय्यदना हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रसूल होने की घोषणा की, हिरात के पूर्वी क्षेत्र में आबाद थे। एक क़ुरैश सरदार ख़ालिद इब्ने वलीद नामक उनके पास आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रसूल होने की सूचना लेकर आया कि वह ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम के झण्डे के नीचे आएं। पांच-छः सरदार निर्वाचित होकर उसके साथ हुए जिन में बड़ा क़ैस था जिसका दूसरा नाम किश है। ये लोग मुसलमान होकर इस्लाम के मार्ग में बड़ी तन्मयता से लड़े और विजयें प्राप्त कीं तथा उनकी वापसी पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको बहुत से उपहार दिए और उन पर बरकत भेजी तथा भविष्यवाणी की कि इस जाति को उन्नति प्राप्त होगी और भविष्यवाणी के तौर पर कहा कि उनके सरदार हमेशा मलिक की उपाधि से प्रसिद्ध हुआ करेंगे तथा क़ैस का नाम अब्दुर्रशीद रख दिया और पहतान की उपाधि से सम्मानित किया तथा शब्द पहतान के बारे में अफ़ग़ान लेखक यह वर्णन करते हैं कि यह एक सुरयानी शब्द है जिस का अर्थ जहाज़ का सुक्कान है और चूंकि नव मुस्लिम क़ैस अपनी जाति के पथ-प्रदर्शक के लिए जहाज़ के सुक्कान की भांति था इसलिए उसे पहतान की उपाधि मिली।

इस बात का पता नहीं चलता कि किस युग में ग़ौर के अफ़ग़ान आगे बढ़े और कंधार क्षेत्र में जो आजकल उन का देश है आबाद हुए। कदाचित् इस्लाम की पहली सदी में ऐसा प्रकटन में आया। अफ़ग़ानों का कथन है कि क़ैस ने ख़ालिद बिन वलीद की लड़की से निकाह किया और उससे उसके यहां तीन लड़के पैदा हुए जिन का नाम सराबान, पतान और गुरगश्त हैं। सराबान के दो लड़के थे जिन के नाम सचरज युन और कृष्ण युन हैं तथा इन ही की सन्तान अफ़ग़ान अर्थात् बनी इस्राईल कहलाते हैं। एशिया कोचक के लोग और पश्चिमी इस्लामी इतिहासकार अफ़ग़ानों को सुलेमानी कहते हैं और पुस्तक साइक्लोपीडिया आफ़ इण्डिया ईस्टर्न साउदर्न एशिया

लेखक ई. बेल्फ़ोर जिल्द-3 में लिखा है कि यहूदी जाति एशिया के मध्य दक्षिण और पूर्व में फैली हुई है। पहले युग में ये लोग चीन देश में बड़ी संख्या में आबाद थे और स्थान यह चू (सदर स्थान ज़िला शू) उन का उपासना गृह था। डाक्टर वुल्फ़ जो बनी इस्राईल के दस खोए हुए फ़िर्क़ों की खोज में बहुत अवधि तक फिरता रहा उसकी यह राय है कि यदि अफ़ग़ान याक़ूब की सन्तान में से हैं तो वे यहूदी और बिनयमीन क़बीलों में से हैं। एक और रिवायत से सिद्ध होता है कि यहूदी लोग तातार में देश से निष्कासित करके भेजे गए थे तथा बुख़ारा, मरू और ख़ैवा से संलग्न क्षेत्रों में बड़ी संख्या में मौजूद थे। प्रिस्टर जॉन बादशाह-ए-तातार ने एक पत्र में जो क़ुस्तुनतुनिया के बादशाह अलकिसीस को भेजा था अपने देश तातार का वर्णन करते हुए लिखा है कि इस दरिया (आमूं) के पार बनी इस्राईल के दस क़बीले हैं जो यद्यपि अपने बादशाह के अधीन होने का दावा करते हैं परन्तु वास्तव में हमारी प्रजा और दास हैं। डाक्टर मोर की छान-बीन से मालूम हुआ है कि तातारी जाति चूज़न यहूदी नस्ल से हैं और उन में अब तक यहूदी धर्म के प्राचीन लक्षण पाए जाते हैं। अत: वे ख़त्ना की रस्म अदा करते हैं अफ़ग़ानों में यह रिवायत है कि वे दस खोए हुए बनी इस्राईली क़बीले हैं। बादशाह बुख़्त नसर ने यरोशलम के विनाश के पश्चात् बन्दी बना कर ग़ौर देश में आबाद किया जो बामयान के निकट है और वह ख़ालिद बिन वलीद के आने से पूर्व निरन्तर यहूदी धर्म के पाबन्द रहे।

अफ़ग़ान आकृति और रूप में हर प्रकार से यहूदी दिखाई देते हैं और उन की तरह छोटा भाई बड़े भाई की विधवा से शादी करता है।

एक फ़रायर नामक फ्रांसीसी पर्यटक जब हिरात के क्षेत्र से गुज़र रहा था उसने लिखा है कि इस क्षेत्र में बनी इस्राईल बड़ी संख्या में हैं और अपने यहूदी धर्म के आदेशों को अदा करने की उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। रब्बी बिन यमीन निवासी शहर टोलीडो (स्पेन) बारहवीं सदी ईस्वी में खोए हुए क़बीलों की खोज में घर से निकला। उस का कहना है कि ये यहूदी लोग चीन, ईरान और तिब्बत में आबाद हैं। जोज़ीफ़िस जिस ने सन् 93 ई. में यहूदियों का प्राचीन इतिहास लिखा है। अपनी ग्यारहवीं पुस्तक में अज़्रा नबी के साथ क़ैद से वापस जाने वाले यहूदियों के बयान के अन्तर्गत वर्णन करता है कि दस क़बीले दरिया-ए-फ़रात के उस पार अब तक आबाद हैं और उनकी संख्या गणना से बाहर है (और फ़रात दरिया से उस पार से अभिप्राय फ़ारस और पूर्वी क्षेत्र हैं) और सेन्ट जरदम जो पांचवीं सदी ईस्वी में गुज़रा है, होसीअ नबी का वर्णन करते हुए इस मामले के प्रमाण में हाशिए पर लिखता है कि उस दिन से (बनी इस्राईल के) दस फ़िर्क़े शाह पारथीया अर्थात् पारस के अधीन हैं और अब तक क़ैद से मुक्त नहीं किए गए तथा इसी पुस्तक की जिल्द प्रथम में लिखा है कि कोन्ट जोर्न स्टरना अपनी पुस्तक के पृष्ठ 233, 234 में लिखता है कि अफ़ग़ान इस बात को स्वीकार करते हैं कि बुख़्त नसर ने हैकल यरोशलम के विनाश के पश्चात् बामियान के क्षेत्र में उन्हें देश से निष्कासित करके भेज दिया (बामियान का क्षेत्र ग़ौर से संलग्न तथा अफ़ग़ानिस्तान में है) और पुस्तक ए.नीरे टू ए आफ़ विज़िट टू गज़नी काबुल अफ़ग़ानिस्तान, लेखक जी. टी. वैगन एफ़. जी. एस. प्रकाशित 1840 ई. पृष्ठ-166 में लिखा है कि पुस्तक

'मज्मउल अन्साब' से मुल्ला ख़ुदादाद ने पढ़कर सुनाया कि याक़ूब का बड़ा बेटा यहूदा था उसका बेटा उसरक था, उसरक का बेटा अक्नूर, अक्नूर का बेटा मआलिब, मआलिब का बेटा फ़रलाई, फ़रलाई का बेटा क़ैस था, क़ैस का बेटा तालूत, तालूत का अरमिया और अरमिया का बेटा अफ़ग़ान था। उसकी सन्तान अफ़ग़ान क़ौम है और इसी के नाम पर अफ़ग़ान का नाम प्रसिद्ध हुआ। अफ़ग़ान बुख़्त नसर का समकालीन था और बनी इस्राईल कहलाता था और उसके चालीस बेटे थे। उसकी चौंतीसवीं पीढ़ी में दो हज़ार वर्ष पश्चात् वह क़ैस हुआ जो मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के युग में था उस से चौंसठ नस्लें हो लीं। सलम नामक अफ़ग़ान का सबसे बड़ा बेटा अपने देश शाम से हिजरत (प्रवास) करके ग़ौर मिश्कोह के क्षेत्र में जो हिरात के निकट है आबाद हुआ। उसकी सन्तान अफ़ग़ानिस्तान में फैल गई।

और पुस्तक ए साइक्लोपीडिया आफ़ ज्योग्राफ़ी सम्पादित जेम्स ब्राइस एफ. जी. एस. प्रकाशित लन्दन 1856 ई. के पृष्ठ-11 में लिखा है कि अफ़ग़ान लोग अपने वंश का क्रम साल बादशाह इस्राईल से मिलाते हैं और अपना नाम बनी इस्राईल रखते हैं। अलैक्ज़न्डर बर्नस का कथन है कि अफ़ग़ान यह रिवायत वर्णन करते हैं कि वे यहूद नस्ल से हैं। शाह बाबुल ने उन्हें क़ैद करके ग़ौर के क्षेत्र में बसा दिया जो काबुल से उत्तर पश्चिम में मौजूद है। ये लोग 622 ई. तक अपने यहूदी धर्म पर रहे परन्तु ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह (ग़लती से वलीद के स्थान पर अब्दुल्लाह लिखा हुआ है) ने इस जाति के एक सरदार की लड़की से विवाह कर लिया और उन को

इस वर्ष में इस्लाम स्वीकार कराया। पुस्तक हिस्ट्री आफ़ अफ़ग़ानिस्तान लेखक कर्नल जी. बी. मेलसन प्रकाशित लन्दन 1878 ई. पृष्ठ 39 में लिखा है कि अब्दुल्लाह ख़ान हिराती और फ्रांसीसी पर्यटक फ्रायर यानी सर विलियम जॉन्स (जो पूर्वी विद्याओं का एक प्रकाण्ड विद्वान गुज़रा है) इस बात पर सहमत हैं कि अफ़ग़ान क़ौम बनी-इस्राईली नस्ल हैं और दस खोए हुए फ़िर्क़ों की सन्तान हैं और पुस्तक हिस्ट्री आफ़ दी अफ़गानिस्तान लेखक जी. पी. फ्रायर (फ्रांसीसी) अनुवादित कप्तान विलियम जे. सी. प्रकाशित लन्दन 1858 ई. पृष्ठ-1 में लिखा है कि पूर्वी इतिहासकारों की बहुसंख्यक राय यही है कि अफ़ग़ान क़ौम बनी इस्राईल के दस फ़िर्क़ों की सन्तान हैं और यही राय अफ़ग़ानों की अपनी है। यही इतिहासकार इस पुस्तक के पृष्ठ-4 में लिखता है कि अफ़ग़ानों के पास बात के प्रमाण के लिए एक तर्क है कि जिसे वे इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि जब नादिर शाह हिन्द को विजय करने के इरादे से पेशावर पहुंचा तो यूसुफ़ ज़ई क़ौम के सरदारों ने उसकी सेवा में एक बाइबल इब्रानी भाषा में लिखी हुई प्रस्तुत की और इसी प्रकार अन्य वस्तुएं प्रस्तुत कीं जो उनके खानदानों में अपने प्राचीन धर्म की रस्में अदा करने के लिए सुरक्षित चली आती थीं। इस कैम्प के साथ यहूदी भी मौजूद थे। जब उनको यह वस्तुएं दिखाई गईं तो उन्होंने तुरन्त उनको पहचान लिया और फिर यही इतिहासकार अपनी पुस्तक के पृष्ठ-4 के बाद लिखता है कि अब्दुल्लाह ख़ान हिराती की राय मेरे निकट बहुत विश्वसनीय है जिसका सारांश यह है :- मलिक तालूत (साल के दो बेटे थे, एक का नाम अफ़ग़ान दूसरे का नाम जालूत। अफ़ग़ान उस क़ौम का प्रथम

उत्तराधिकारी था। दाऊद और सुलेमान के शासन के पश्चात् बनी इस्राईल में अराजकता आरंभ हो गई और अलग-अलग फ़िर्क़े बन गए। बुख़्त नसर के युग तक यही स्थिति रही। बुख़्त नसर ने चढ़ाई करके सत्तर हज़ार यहूदी क़त्ल किए और शहर तबाह किया और शेष यहूदियों को क़ैद करके बाबुल ले गया। इस संकट के बाद अफ़ग़ान की सन्तान भय से जूदिया से अरब देश में भाग कर जा बसे और बहुत समय तक यहां आबाद रहे परन्तु चूंकि पानी और भूमि की कमी थी तथा मनुष्य और जानवरों को कष्ट था इसलिए उन्होंने हिन्दुस्तान की ओर चले आने का इरादा किया। अब्दालियों का यह समूह अरब में पड़ा रहा तथा (हज़रत) अबू बक्र की ख़िलाफ़त के युग में उनके एक सरदार ने उन का संबंध ख़ालिद बिन वलीद से स्थापित किया ....। जब ईरान अरबों के अधिकार में आया तो यह जाति अरब से निकलकर ईरान के क्षेत्रों फ़ारस और किरमान में जा बसी और चंगेज़ ख़ान के आक्रमण तक यही आबाद रहे। उसके अत्याचारों की ताब न लाकर अब्दाली फ़िर्क़ा मकरान सिंध और मुल्तान के मार्ग से हिन्दुस्तान पहुंचा किन्तु यहां उन्हें आराम प्राप्त न हुआ। (अन्ततः) वे कोहे सुलेमान (सुलेमान पर्वत) पर जा ठहरे। शेष अब्दाली फ़िर्क़े के लोग भी यहां एकत्र हो गए। इनके चौबीस फ़िर्क़े थे जो अफ़ग़ान की सन्तान में से थे जिसके तीन बेटे थे, जिनके नाम सराबन्द (सराबान) अर्कश (गरगश्त) कर्लन (बतान) इनमें से प्रत्येक के आठ पुत्र हुए, जिनके नाम पर चौबीस क़बीले हुए। उन के नाम क़बीलों सहित ये हैं —

सराबन्द के बेटे	क़बीलों के नाम
अब्दाल	अब्दाली
यूसुफ़	यूसुफ़ज़ई
बाबूर	बाबूरी
वज़ीर	वज़ीरी
लोहान	लोहानी
बुर्च	बुर्ची
ख़ूगियान	ख़ूगियानी
शरान	शरानी

अर्कश के पुत्र (गरगुश्त) के पुत्र	क़बीलों के नाम
ख़ुल्ज	ख़ुल्जी ख़ुल्ज़ई
काकर	काकरी
जमूरीन	जमूरीनी
सतूरियान	सतूरियानी
पैन	पैनी
कस	कसी
तकान	तकानी
नसर	नसरी

कर्लन के पुत्र	क़बीलों के नाम
ख़टक	ख़टकी
सूर	सूरी

आफ़रीद	आफ़रीदी
तूर	तूरी
ज़ाज़	ज़ाज़ी
बाब	बाबी
बंगनीश	बंगनीशी
लन्डीपुर	लन्डीपुरी

कलाम समाप्त हुआ।

पुस्तक 'मख़ज़न ए अफ़ग़ानी'* लेखक ख़्वाजा ने'मतुल्लाह हिराती, जहांगीर बादशाह के युग में रचित सन् 1018 हिज्री जिसे प्रोफेसर बर्नहार्ड डोर्न (ख़ारकोव यूनिवर्सिटी) ने लन्दन से अनुवाद करके सन् 1836 ई. में प्रकाशित किया है। इसके निम्नलिखित अध्यायों में यह वर्णन है — प्रथम अध्याय में वर्णन "याक़ूब का इतिहास इस्राईल है जिससे उस (अफ़ग़ान) जाति की वंशावली आरंभ होती है।

अध्याय द्वितीय में तालूत बादशाह के इतिहास का विषय है अर्थात् अफ़ग़ानों की वंशावली तालूत से मिलाई गई है।

पृष्ठ 22, 23 में लिखा है कि तालूत के दो बेटे थे — बरबिया तथा अरमियाह। बख़िर्या का बेटा आसिफ़ था और अरमियाह का अफ़ग़ान तथा पृष्ठ 24 में लिखा है कि अफ़ग़ान के चौबीस बेटे थे तथा अफ़ग़ान की सन्तान के बराबर कोई अन्य इस्राईली कबीले में न

* विश्वसनीय इतिहास की पुस्तकों उदाहरणतया तारीख़ तिबरी, मजमउल अन्साब, गज़ीदा जहां कुशाई, मतलउल अन्वार, म'दन अक्बर से सारांश लेकर यह पुस्तक बनाई गई है। (देखो पृष्ठ-3 लेखक द्वारा भूमिका)

थी तथा पृष्ठ 65 में लिखा है कि बुख़्त नसर ने सम्पूर्ण शाम पर अधिकार कर लिया तथा बनी इस्राईल की क़ौमों को देश से निष्कासित करके ग़ौर, ग़ज़्नी, काबुल, कंधार और फ़ीरोज़ पर्वत के पहाड़ी क्षेत्रों में लाकर आबाद किया, जहां विशेष तौर पर आसिफ़ और अफ़ग़ान की सन्तान बस गई।

अध्याय तृतीय में वर्णन है कि जब बुख़्त नसर ने बनी इस्राईल को शाम से निकाल दिया तो आसिफ़ और अफ़ग़ान की नस्ल के कुछ कबीले अरब में जा बसे तथा अरब उनको बनी इस्राईल और बनी अफ़ग़ान के नामों से नामित करते थे।

इस पुस्तक के पृष्ठ 37, 38 'मजमउल अन्साब' के लेखक तथा "तारीख़-ए-गुज़ीदा" के लेखक मुस्तौफ़ी के सन्दर्भ (हवाले) से विस्तारपूर्वक वर्णन किया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में ख़ालिद बिन वलीद ने इन अफ़ग़ानों की ओर इस्लाम की दा'वत का सन्देश भेजा, जो बुख़्त नसर की घटना के पश्चात् ग़ौर के क्षेत्र में ही रहने लगे थे। अफ़ग़ान सरदार बसर बराही क़ैस की सरदारी में जो सैंतीस पीढ़ियों के पश्चात् तालूत की सन्तान था हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। क़ैस का नाम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुर्रशीद रखा (यहां अब्दुर्रशीद क़ैस की वंशावली तालूत (साल) तक दी है) तथा आपस. ने सरदारों का नाम पठान रखा जिसका अर्थ जहाज़ के सुक्कान हैं। कुछ समय के उपरान्त सरदार वापस अपने देश में आए तथा इस्लाम का प्रचार किया।

इसी पुस्तक मख़्ज़न-ए-अफ़ग़ानी के पृष्ठ-63 में लिखा है कि

बनी अफ़ग़ान: या बनी अफ़ग़ान नामों के सम्बन्ध में फ़रीदुद्दीन अहमद अपनी पुस्तक 'रिसाला अन्साब अफ़ग़ानिय:" में निम्नलिखित इबारत लिखता है —

"बुख़्त नसर मजूसी जब बनी इस्राईल और शाम के क्षेत्रों पर विजयी हुआ तथा यरोशलम को तबाह किया तो बनी इस्राईल को क़ैदी और दास बनाकर देश से निष्कासित कर दिया तथा उस जाति के कई कबीले जो मूसा की शरीअत के अनुयायी थे अपने साथ ले गया और आदेश दिया कि वे अपने पूर्वजों का धर्म त्याग कर ख़ुदा के स्थान पर उसकी उपासना करें, परन्तु उन्होंने इन्कार किया। इस कारण बुख़्त नसर ने नितान्त बुद्धिमानों और विद्वान लोगों में से दो हज़ार को मार डाला तथा शेष के लिए आदेश दिया कि उसके अधिकृत क्षेत्रों तथा शाम से कहीं बाहर चले जाएं। उनका एक भाग एक सरदार के अधीन बुख़्त नसर के अधिकृत क्षेत्रों से निकल कर पर्वतीय ग़ौर में चला गया। यहां उनकी सन्तान रहने लगी। दिन-प्रतिदिन उनकी संख्या में वृद्धि होती गई तथा लोगों ने उनको बनी इस्राईल, बनी आसिफ़ और बनी अफ़ग़ान के नामों से नामित किया।

पृष्ठ 64 में कथित लेखक का कथन है कि विश्वस्त पुस्तकों जैसे "तारीख़-ए-अफ़ग़ानी", तारीख़-ए-ग़ौरी" इत्यादि यह दावा लिखा है। "अफ़ग़ान का बहुत अधिक भाग तो बनी इस्राईल है कुछ भाग क़ब्ती।" इसके अतिरिक्त अबुल फ़ज़्ल का कहना है कि कुछ अफ़ग़ान स्वयं को मिस्री नस्ल से समझते हैं और यह कारण प्रस्तुत करते हैं कि जब बनी इस्राईल यरोशलम से मिस्र वापस गए, इस फ़िर्क़े (अफ़ग़ान) ने हिन्दुस्तान की ओर स्थानांतरण किया। पृष्ठ 64 में फ़रीदुद्दीन अहमद

अफ़ग़ान के नाम के सम्बन्ध में यह लिखता है :-

"अफ़ग़ान नाम के सम्बन्ध में कुछ ने यह लिखा है कि (शाम से) निष्कासन के पश्चात् जब वे हर समय अपनी मातृभूमि मालूफ़ का हृदय में विचार लाते थे तो रोते और आहें भरते थे। अतएव उनका नाम अफ़ग़ान हुआ और यही राय सर जॉन मैलकम की है।" देखिए हिस्ट्री आफ़ परशिया जिल्द-1, पृष्ठ-101

पृष्ठ-63 में महाबत ख़ान का कथन है कि -

چوں ایشاں از توابع و لواحق سلیمان علیہ السلام اند بنا براں ایشاں را مردم عرب سلیمانی گویند

और पृष्ठ 65 में लिखा है -

"लगभग समस्त पूर्वी इतिहासकारों की यही खोज है कि अफ़ग़ान जाति की यही आस्था है कि वे यहूदी नस्ल हैं तथा इस राय को वर्तमान युग के कुछ इतिहासकारों ने भी अपनाया है या कदाचित् उचित समझा है ... और यह रिवाज कि अफ़ग़ान यहूदियों के नाम अपने नाम रखते हैं। निस्सन्देह अफ़ग़ानों के मुसलमान हो जाने के कारण है।" (परन्तु लेखक बर्नहार्ड डोर्न का यह विचार कोई प्रमाण नहीं रखता। पंजाब के उत्तर-पश्चिमी भाग में अधिकतर ऐसी जातियां जो हिन्दी नस्ल से हैं आबाद हैं जो आबाद हो गई हैं, किन्तु उनके नाम यहूदी नामों की शैली पर कदापि नहीं, जिस से स्पष्ट तौर पर विदित होता है कि मुसलमान हो जाने से एक जाति में यहूदी नाम सम्मिलित नहीं हो जाते) "अफ़ग़ान की आकृति और बनावट यहूदियों से आश्चर्यजनक तौर पर समानता रखती है और इस बात को उन अन्वेषकों ने भी स्वीकार कर लिया है जो अफ़ग़ानों के यहूदी नस्ल होने के दावे पर कुछ विचार नहीं करते तथा यही एक प्रमाण है जो

उनके यहूदी नस्ल होने के बारे में मिल सकता है।"

इस बारे में सर जॉन मैल्कम के शब्द ये हैं —

"यद्यपि अफ़ग़ानों का (यहूदियों की) सम्माननीय नस्ल से होने का दावा बहुत संदिग्ध है परन्तु उनकी शक्ल तथा बाह्य आकृति और बनावट तथा उनके अधिकांश रस्मो-रिवाज से यह बात सर्वथा स्पष्ट है कि वह (अफ़ग़ान) फ़ारसियों, तातारियों तथा हिन्दिओं से एक पृथक जाति है और विदित होता है कि केवल यही बात इस वर्णन को विश्वसनीय ठहराती है जिस का विरोध बहुत सी शक्तिशाली घटनाएं करती हैं तथा जिस का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता। यदि एक जाति का दूसरी जाति के साथ शक्ल और बनावट में समानता रखने से कोई परिणाम निकल सकता है तो कश्मीरी अपने यहूदियों वाली आकृति एवं बनावट के कारण निश्चय निश्चय ही यहूदी नस्ल से सिद्ध होंगे तथा इस बात को केवल बर्नियर ने ही नहीं अपितु फ़ारिस्टर तथा संभवतः अन्य अन्वेषकों ने वर्णन किया है।".... यद्यपि फ़रिस्टर बर्नियर की राय को स्वीकार नहीं करता तथापि वह इक़रार करता है कि जब वह कश्मीरियों में था तो उसने विचार किया कि वह एक यहूदियों की जाति के बीच रहता है।

पुस्तक डिक्शनरी आफ़ ज्योग्राफ़ी लेखक ए. के. जान्स्टन के पृष्ठ-250 में कश्मीर शब्द के वर्णन में यह इबारत है :-

"यहां कि निवासी क़द में लम्बे, सुदृढ़, बलवान, पुरुष आकृति वाले, स्त्रियां सौन्दर्यपूर्ण शरीर वाली, सुन्दर बुलन्द और लचकदार, शक्ल एवं बनावट में सर्वथा यहूदियों के समान हैं।"

सिविल एंड मिलिट्री गज़ट ने (प्रकाशित 23 नवम्बर 1898 ई.

पृष्ठ-4) में "सवाती और आफ़रीदी" (जातियां) शीर्षक के अन्तर्गत लेख लिखा है कि हमें एक उच्च स्तर का मूल्यवान एवं दिलचस्प लेख मिला है जो ब्रिटिश एसोसिएशन के एक वर्तमान जलसे में कथित एसोसिएशन की शाखा मानवजाति का भौतिक इतिहास में प्रस्तुत किया गया है और जो कमेटी मानवजाति के भौतिक इतिहास के अन्वेषण के शीतकालीन जल्सा में भी सुनाया जाना है। हम यह पूर्ण लेख नीचे उल्लेख करते हैं ...... हिन्दुस्तान की पश्चिमी सीमा के पठान या पक्टान निवासियों का हाल प्राचीन इतिहासों में विद्यमान है तथा बहुत से फ़िर्क़ों का वर्णन हीरोडोट्स ने तथा महान सिकंदर के इतिहास लेखकों ने किया है। मध्यकाल में उस पर्वत का आबादी रहित तथा निर्जन का नाम रवा था और उस क्षेत्र के निवासियों का नाम रूहेला था इसमें सन्देह नहीं कि ये रूहेले या पठान अफ़ग़ानों के नाम-व-निशान से पूर्व उन क्षेत्रों में आबाद थे। अब समस्त अफ़ग़ान पठानों में गिने जाते हैं क्योंकि वे पठानी भाषा अर्थात् पश्तो बोलते हैं किन्तु वे उनसे किसी रिश्ते को स्वीकार नहीं करते तथा उन का दावा है कि हम बनी इस्राईल हैं अर्थात् उन फ़िर्क़ों की सन्तान हैं जिन को बुख़्त नसर क़ैद करके बाबुल ले गया था, परन्तु सब ने पश्तो भाषा को अपना लिया है और समस्त लोग उसी देशीय (मुल्की) कानून संग्रह को मानते हैं जिसका नाम "पक्तान वाली" है तथा जिसके बहुत से नियम मूसा[अ.] की प्राचीन शरीअत से अद्भुत तौर पर समानता रखते हैं तथा कुछ राजपूत जातियों की प्राचीन परम्पराओं से भी मिलते जुलते हैं।

...... यदि हम इस्राईली लक्षणों के अन्तर्गत देखें तो स्पष्ट होगा

कि पठानों की जातियां दो बड़े भागों में विभाजित हो सकती हैं .... अर्थात् प्रथम वे फ़िर्क़े हिन्दी नस्ल से हैं जैसे वज़ीरी, आफ़रीदी, ओरक ज़ई इत्यादि। द्वितीय अफ़ग़ान जो सामी (Semitic) होने का दावा करते हैं तथा सीमा पर अधिकांश आबादी उन्हीं की है और कम से कम यह संभव है कि पक्टानवाली जो एक देशीय अलिखित नियमावली है सब को मिला कर तैयार हुई है। इसमें हम देखते हैं कि मूस्वी आदेश राजपूती परम्पराओं से मिले हुए हैं जिन का संशोधन इस्लामी रस्मों ने किया है। वे अफ़ग़ान जो स्वयं को दुर्रानी कहलाते हैं तथा जब से कि दुर्रानी शासन की नींव रखी गई है अर्थात् एक सौ पचास वर्ष से स्वयं को दुर्रानी ही बताते आए हैं। कहते हैं कि वे मूल रूप से इस्राईली फ़िर्क़ों की नस्ल से हैं और उनकी नस्ल कुश (क़ैस) से जारी होती है जिसको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पठान के नाम से नामित किया जिसके अर्थ सरयानी भाषा में सुक्कान के हैं क्योंकि उसने लोगों को इस्लाम की लहरों में (किश्ती की भांति) चलाना था ..... यदि हम अफ़ग़ान जाति का इस्राईली जाति से कोई पुराना सम्बन्ध न मानें तो उन इस्राईली नामों का कोई कारण वर्णन करना हमारे लिए कठिन हो जाता है जो सामान्य तौर पर प्रचलित हैं तथा कुछ रस्में जैसे ईद फसह के त्यौहार के प्रचलन का कारण बयान करना हमारे लिए और भी कठिन हो जाता है तथा अफ़ग़ान जाति की यूसुफ़ज़ई शाखा यदि ईद फसह की वास्तविकता को समझ कर नहीं मनाते तो कम से कम उनका त्यौहार ईद फ़सह की नितान्त अद्‌भुत एवं उत्तम नक़ल है। ऐसी ही इस्राईली रिश्ता न मानने की स्थिति में हम उस आग्रह का भी कोई कारण नहीं

बता सकते जो उच्च शिक्षा-प्राप्त अफ़ग़ानों को इस रिवायत के वर्णन करने और उस पर स्थापित रहने में है। इससे विदित होता है कि इस रिवायत की सच्चाई का मूल आधार अवश्य होगा। बेल्यू (Bellews) की राय है कि इस्राईली रिश्ते का वास्तव में सच्चा होना संभव है परन्तु वह वर्णन करता है कि अफ़ग़ानों की तीन बड़ी शाखों में से जो स्वयं को क़ैस की सन्तान वर्णन करते हैं कम से कम एक शाखा साराबोर के नाम से नामित है और इस शब्द का पश्तो भाषा में अनुवाद यह है कि प्राचीन काल में सूर्यवंशी राजपूतों का जो नाम था जिनके बारे में यह ज्ञात है कि उनकी बस्तियां महाभारत के युद्ध में चन्द्रवंशी ख़ानदान से पराजित होकर अफ़ग़ानिस्तान में आ बसी थीं। इस प्रकार ज्ञात हुआ कि संभव है कि अफ़ग़ान बनी इस्राईल हों जो प्राचीन राजपूतों में मिल गए हों तथा सदैव से मेरी दृष्टि में अफ़ग़ानों के मूल एवं नस्ल की समस्या का उचित समाधान सब से उत्तम तौर पर यही ज्ञात होता रहा है। बहरहाल आजकल के अफ़ग़ान रिवायत और क्रियात्मक आधार पर स्वयं को चुनी हुई जाति अर्थात् इब्राहीम की सन्तान में से समझते हैं।

इन समस्त लेखों को जो प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकों में से हम ने लिखे हैं संयुक्त रूप से कल्पना में लाने से एक सत्यनिष्ठ को पूर्ण विश्वास हो सकता है कि ये क़ौमें जो अफ़ग़ान और कश्मीरी इस देश हिन्दुस्तान तथा इसकी सीमाओं एवं इसके आस-पास पाई जाती हैं वास्तव में बनी इस्राईल हैं। हम इस पुस्तक के दूसरे भाग में ख़ुदा ने चाहा तो अधिक विवरण के साथ इस बात को सिद्ध करेंगे कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की इस सुदूर यात्रा अर्थात् हिन्दुस्तान-

यात्रा का मुख्य कारण यही था ताकि वह उस कर्त्तव्य को पूरा कर सके जो समस्त इस्राईली जातियों को प्रचार का कर्त्तव्य उन के दायित्व में था, जैसा कि वह इंजील में इस बात की ओर संकेत भी कर चुके हैं। अतः इस अवस्था में यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वह हिन्दुस्तान और कश्मीर में आए हों अपितु आश्चर्य इस बात में है कि अपने पद के मूल कर्त्तव्य को अदा किए बिना वह आकाश पर जा बैठे हों। अब हम इस भाग को समाप्त करते हैं।

सलामती हो उस पर जिस ने मार्ग-दर्शन का अनुसरण किया।

लेखक

विनीत

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद[अ.] मसीह मौऊद

क़ादियान ज़िला - गुरदासपुर